भारत की सांस्कृतिक-शक्ति रणनीति का अवसर और जोखिम

2030 राष्ट्रमंडल खेल और 2036 विश्व-ओलंपिक

डॉ. सत्यवान सौरभ

सन 2030 के राष्ट्रमंडल खेल भारत के लिए केवल एक प्रतियोगिता नहीं, बल्कि सन 2036 के विश्व-ओलंपिक प्रस्ताव का निर्णायक ''अग्रदूत'' हैं। यह आयोजन भारत की सांस्कृतिक-शक्ति (सॉफ्ट पावर) को नई ऊँचाई दे सकता है, परन्तु किसी भी प्रकार की प्रशासनिक कमी अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को आघात पहुँचा सकती है।

विशाल खेल आयोजन किसी भी राष्ट्र के लिए मात्र खेल-प्रतियोगिताएँ नहीं होते, बल्कि वे उस देश की राजनैतिक इच्छा-शक्ति, आर्थिक सामर्थ्य, सांस्कृतिक पहचान और प्रशासनिक परिपक्वता का सार्वजनिक प्रदर्शन भी होते हैं। आधुनिक समय में खेल कूटनीति एक प्रकार की सांस्कृतिक-शक्ति बन चुकी है-ऐसी शक्ति जो बिना किसी सैन्य बल के, विश्व समुदाय को अपने अनुकूल प्रभावित कर सकती है। भारत लंबे समय से विश्व-स्तर पर अपनी प्रतिष्ठा के विविध आयामों को सुदृढ़ करने का प्रयास करता आया है, और सन 2036 के विश्व-ओलंपिक आयोजन की महत्वाकांक्षा इसी दिशा का अगला स्वाभाविक चरण है। परंतु ओलंपिक जैसे विराट आयोजन से पहले सन 2030 के राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी को भारत एक प्रकार के ''पूर्वाभ्यास'', ''पूर्व-ओलंपिक नमूने'' और ''वैश्विक विश्वास की परीक्षा'' के रूप में देख रहा है। यह रणनीति जितनी आकर्षक संभावनाएँ प्रदान करती है, उतनी ही गंभीर आर्थिक, प्रशासनिक और सामाजिक चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण लोकतंत्र में इस प्रकार के आयोजनों की तैयारी केवल खेल मंत्रालय का नहीं, बल्कि केंद्र सरकार, राज्य सरकारों, नगर निकायों, सुरक्षा संस्थाओं, निजी क्षेत्र, तकनीकी विशेषज्ञों, खेल संघों और व्यापक समाज-सभी का संयुक्त प्रयास मांगती है। यदि भारत 2030 के राष्ट्रमंडल खेलों को सफलतापूर्वक आयोजित कर लेता है, तो यह विश्व स्तर पर यह संदेश जाएगा कि देश 2036 के विश्व-ओलंपिक जैसे महाकाय आयोजन को संभालने में सक्षम है। यही कारण है कि यह आयोजन भारत की विश्वसनीयता के लिए एक निर्णायक पड़ाव साबित हो सकता है।

भारत की सबसे बड़ी प्रेरणा सांस्कृतिक-शक्ति को सुदृढ़ करना है। आज वैश्विक राजनीति में खेल आयोजन एक सांस्कृतिक उत्सव से आगे बढ़कर राष्ट्र की क्षमताओं की खुली परीक्षा बन चुके हैं। राष्ट्र अपनी तकनीकी दक्षता, शहर-प्रबंधन, सुरक्षा व्यवस्था, सामाजिक समावेशन, पर्यावरण-जागरूकता और सांस्कृतिक आत्मविश्वास का विश्व मंच पर प्रदर्शन करते हैं। भारत यदि सन 2030 के राष्ट्रमंडल खेलों को उच्च स्तर पर सम्पन्न करता है, तो यह निःसंदेह भारत की प्रतिष्ठा को नई ऊँचाई प्रदान करेगा। किन्तु इस प्रतिष्ठा की कीमत क्या होगी? यह वह कठिन प्रश्न है जिसे अनदेखा करना भारत के लिए नुकसानदायक हो सकता है। विशाल खेल आयोजनों का सबसे विवादास्पद पहलू उनकी भारी आर्थिक लागत है। सन 2010 के राष्ट्रमंडल खेल अभी तक भारत की प्रशासनिक छवि पर एक दाग की तरह मौजूद हैं-अत्यधिक खर्च, भ्रष्टाचार, समय पर कार्य न होना, और आयोजन स्थल की

कमजोर गुणवत्ता ने भारत की छवि को काफी प्रभावित किया था। यदि वर्ष 2030 में फिर ऐसी ही कोई कमी सामने आती है, तो 2036 विश्व-ओलंपिक का सपना लगभग असंभव हो सकता है। इसलिए आर्थिक अनुशासन, पारदर्शिता, बहु-स्तरीय जाँच, और जवाबदेही-व्यवस्था को आज से ही प्राथमिकता देनी होगी।

इस सबके साथ-साथ 2030 का आयोजन भारत के लिए एक प्रयोगशाला भी सिद्ध हो सकता है। यह अवसर होगा-शहरी अधोसंरचना, यातायात प्रबंधन, आपदा-प्रतिक्रिया, हरित ऊर्जा, जल-निकास प्रणाली, स्वास्थ्य सेवाओं, सार्वजनिक सुरक्षा, और खेल विज्ञान को अंतरराष्ट्रीय मानक पर परखने का। इस स्तर के आयोजनों में क्षण भर की चूक भी बड़े संकट उत्पन्न कर सकती है। इसलिए वर्ष 2030 का आयोजन भारत के लिए पूर्ण स्तर वाला अभ्यास सिद्ध हो सकता है, जिसमें न केवल खेल प्रबंधन बल्कि सम्पूर्ण शासन प्रणाली की परीक्षा होगी। इसके अतिरिक्त, शहरी प्रशासन को सबसे कठिन परीक्षा से गुजरना होगा। कोई भी विशाल खेल आयोजन केवल खेल-स्थल और खिलाड़ियों के निवास-स्थल तक सीमित नहीं रहता। यह पूरे नगर के परिवहन, मार्ग-संरचना, हवाई अड्डों की क्षमता, स्वच्छता प्रणाली, जल प्रबंधन, रात्रिकालीन प्रकाश व्यवस्था, अस्पतालों की तैयारी, भीड़ नियंत्रण, पर्यावरणीय संवेदनशीलता और आधुनिक प्रौद्योगिकी के उपयोग का तनाव परीक्षण बन जाता है। संभावित मेजबान नगर-दिल्ली, अहमदाबाद, मुंबई या किसी बहु-नगर मॉडल-सभी पर भारी तैयारी का दबाव होगा। यह तैयारी अवसर भी है और चुनौती भी। अवसर इसलिए कि इससे नगरों का बुनियादी ढाँचा विश्व-स्तर पर पहुँच सकता है। चुनौती इसलिए कि कहीं ऐसा न हो कि यह निवेश केवल ''दिखावे की अधोसंरचना'' में बदल जाए, जो आयोजन-उपरांत उपयोगहीन रह जाए। दुनिया में अनेक उदाहरण हैं जहाँ खेल आयोजनों में बनाए गए स्टेडियम और भवन बाद में ''मरे हुए ढाँचे'' बन गए। भारत में भी यह समस्या पहले देखी जा चुकी है। इसलिए यह अनिवार्य है कि जो भी अवसंरचना बनाई जाए, वह आयोजन के बाद भी जनसाधारण, खेल प्रशिक्षण संस्थानों और नगर-विकास के लिए उपयोगी बनी रहे। भारत को पर्यटन, आतिथ्य, सांस्कृतिक प्रदर्शनों, कला एवं हस्तशिल्प, पारंपरिक संगीत, खानपान और जातीय विविधता जैसे क्षेत्रों में अपार लाभ प्राप्त होने की संभावना है। विश्व भर से लाखों दर्शक और प्रतिनिधि भारत आएँगे, जिससे सेवा क्षेत्र, व्यापार, परिवहन, कृषि-आधारित उपभोग और सूक्ष्म उद्योगों को व्यापक लाभ मिलेगा। इसके अतिरिक्त, डिजिटल भारत की अवधारणा-जैसे पूर्णतः डिजिटल प्रवेश-प्रणाली, दूर-संवेदन सुरक्षा व्यवस्था, तेज संचार तंत्र-विश्व के सामने भारत की प्रौद्योगिकी क्षमता का अत्यंत प्रभावशाली प्रदर्शन कर सकती है। फिर भी यह स्वीकार करना पड़ेगा कि विश्व-ओलंपिक जैसी प्रतियोगिताओं की लागत बहुत भारी होती है। वर्तमान वैश्विक औसत के आधार पर यह लागत अत्यधिक बढ़ जाती है। ऐसे में भारत के लिए यह आवश्यक है कि 2030 के राष्ट्रमंडल खेलों को एक वित्तीय प्रयोगशाला की तरह उपयोग किया जाए, जहाँ सार्वजनिक-निजी सहभागिता, सामाजिक उत्तरदायित्व निधि, पर्यटन आधारित आय, और भागीदारी मॉडल जैसे उपायों की पहले से जाँच हो सके। यह देखा जा सके कि कौन-सा मॉडल भारत की सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप अधिक स्थायी और सफल हो सकता है।

परंतु आलोचना का एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि क्या भारत जैसे विकासशील राष्ट्र को इतने बड़े आयोजनों पर अत्यधिक धन व्यय करना उचित है? क्या यह धन विद्यालयों, स्वास्थ्य सेवाओं, ग्रामीण खेलों, महिला खिलाड़ियों, प्रशिक्षकों, खेल विज्ञान प्रयोगशालाओं और खेल अकादमियों जैसे बुनियादी क्षेत्रों में अधिक प्रभावी रूप से उपयोग नहीं किया जा सकता? यह प्रश्न अत्यंत तर्कसंगत है। किसी भी खेल आयोजन का मूल उद्देश्य ''राष्ट्रीय प्रतिष्ठा की चमक'' नहीं, बल्कि ''राष्ट्रीय प्रतिभा का विकास'' होना चाहिए। यदि आयोजन पर खर्च किए गए संसाधन जमीनी स्तर के खेल ढांचे से ध्यान हटाकर केवल भव्यता के निर्माण में लग जाएँ, तो यह राष्ट्रहित के प्रतिकूल होगा। इसके अतिरिक्त, यह आयोजन भारत की अंतरराष्ट्रीय कूटनीति को भी नया आयाम प्रदान कर सकता है। भारत पहले से विश्व-दक्षिण समूह का अग्रणी प्रतिनिधि बन रहा है, और वैश्विक संस्थाओं में उसका योगदान निरंतर बढ़ रहा है। ऐसे में सफल खेल मेजबानी भारत की बहुआयामी नेतृत्व क्षमता को और सुदृढ़ करेगी।

बतरस

मेरे सामने वाली खिड़की में...

राजेश विक्रांत

खुली खिड़की घर में ताजी हवा लाने के साथ बवाल भी लाती है। इसलिए समय समय पर खिड़की बंद रखनी चाहिए ताकि घर में बवाल का आगमन न हो पाए। क्योंकि खुली खिड़कियां तनाव भी लाती है। इससे घर में अशांति, धमकी के साथ पुलिस भी आ सकती है।

जमाल एहसानी का एक शेर है- उस ने बारिश में भी खिड़की खोल के देखा नहीं, भीगने वालों को कल क्या क्या परेशानी हुई। इसके अलावा 1968 में आई एक फ़िल्म 'पड़ोसन' का गाना 'मेरे सामने वाली खिड़की में...' तो आपको याद होगा भी। काफी लोकप्रिय इस गाने की लाइन को आज भी लोग पड़ोसियों पर टिप्पणी के लिए उपयोग करते हैं। हंसी-ठहाकों के लिए मशहूर सामने वाली एक खिड़की दो लोगों के बीच तनाव का कारण बन गई है। खुली खिड़की से दो परिवारों के बीच पानीपत की चौथी लड़ाई का माहौल बन गया है। बात मनमुटाव, जानलेवा धमकी, लड़ाई झगड़ा, धमकी और थाने तक पहुंच गई है। मुकदमा दर्ज हो गया है।

आईटी सिटी की एक महिला ने खिड़की की वजह से अपने पड़ोसी जोड़े के खिलाफ शिकायत दर्ज करा दी है। दरअसल पड़ोसी जोड़ा खिड़की खुली रखकर प्यार करता है। उनका खुल्लमखुल्ला प्यार करना महिला को बिल्कुल नहीं अच्छा लगता। प्यार के आसन व ध्वनियां महिला को फूटी आंखों नहीं सुहाती। आरती नगर की महिला ने अपने नवविवाहित पड़ोसी जोड़े के खिलाफ अपनी शिकायत में कहा है कि ये दोनों बेडरूम की खिड़की को खुला छोड़कर शारीरिक संबंध बनाते हैं। वह अपने बेडरूम से उनकी निजी बातचीत और अंतरंग आवाजें सुन सकती है। इससे उसके घर की शांति भंग हो गई है। वहां बिस्तर पर तूफान आता है और यहां उसके घर में सुनामी आ जाती है।

इस जोड़े ने अपने निजी पलों के दौरान जानबूझकर अपनी खिड़की खुली रखी और जब उसने उनसे कहा कि खिड़की बंद करके तुम लोग जो भी मन हो वो करो, तो जोड़े ने कहा कि हम तो खुल्लमखुल्ला प्यार करेंगे। तुमको जो करना है करो। जोड़े ने महिला को गालियां दी और अनुचित इशारे किए तथा उसके साथ बलात्कार करने और देह के दो अध्याय करने की धमकी भी दी। महिला ने विरोध किया तो जोड़ा मारपीट पर उतर आया और अब पुलिस ने दोनों पक्षों की शिकायत लेकर मामला दर्ज कर लिया है।

शायर आदिल मंसूरी ने सही लिखा है कि खिड़की ने आँखें खोली, दरवाज़े का दिल धड़का। अगर आपको सिर्फ सोना है तो खिड़कियाँ खुली रखने से आपके कमरे में हवा का प्रवाह बढ़ जाता है, जिससे न केवल आपके शयनकक्ष का तापमान बदल सकता है, बल्कि यह वेंटिलेशन में सुधार कर सकता है और हवा में कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा को कम कर सकता है, जिससे रात में नींद अच्छी आती है। लेकिन आरती नगर की खुली खिड़कियों ने पड़ोसी पर बड़ा कहर बरपा दिया है। नवविवाहित जोड़े की खुली खिड़की ने पड़ोसन के दरवाजे का दिल धड़का दिया है। इसलिए फैसला आप कीजिए कि खिड़की खोलकर रखना है या जरूरत पड़ने पर बंद भी कर देना है।

हर कार्य का उद्देश्यपूर्ण होना जरूरी

ओंटारियो, छह दिसंबर (द कन्वरसेशन) 'जेनरेशन जेड' यानी 1997 से 2012 के बीच पैदा हुए लोगों की कार्यबल में बढ़ती संख्या के बीच कनाडाई नियोक्ताओं का ऐसे युवाओं से सामना हो रहा है जिनकी अपेक्षाएं और व्यवहार वर्तमान मानकों से मूलभूत बदलाव का संकेत देते हैं।

पिछली पीढ़ियों के विपरीत, 'जेन जेड' अनूठे सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिदृश्य में पले बढ़े हैं, जिससे उनकी व्यावहारिक सोच में बदलाव आया है। 'जेन जेड' आर्थिक अनिश्चितता, तकनीकी उथल-पुथल और बढ़ती सामाजिक जागरूकता के बीच पले-बढ़े हैं। इतना ही नहीं 'मिलेनियल्स' के विपरीत 'जेन जेड' ज्यादा व्यावहारिक हैं क्योंकि 'मिलेनियल्स' तेजी से पदोन्नति और वेतन वृद्धि की 'बड़ी उम्मीदों' के साथ नौकरी के क्षेत्र में आए थे। इसलिए, अगर कनाडाई संगठन इस पीढ़ी की प्रतिभाओं को आकर्षित करना, उनसे जुड़ना और उन्हें बनाए रखना चाहते हैं, तो यह समझना जरूरी है कि उन्हें ('जेन जेड' को) क्या प्रेरित करता है।

उद्देश्य, मूल्य और 'जेन जेड' क्या चाहते हैं

हालिया शोध से पता चला कि यह पीढ़ी ('जेन जेड') नौकरी की सुरक्षा, कार्य-जीवन संतुलन और मानसिक स्वास्थ्य को सबसे ज्यादा महत्व देती है। ये प्राथमिकताएं रचनात्मक अनुभवों से आकार लेती हैं, जिसमें 'जेन जेड' का अपने माता-पिता को घर और करियर के बीच जूझते देखना और आर्थिक तंगी जैसी चीजें शामिल हैं।'जेन जेड' के लिए कार्यस्थल पर काम-काज में स्थिरता आवश्यक है। यह पीढ़ी महत्वाकांक्षी है लकिन उसकी महत्वाकांक्षा पारंपरिक पदानुक्रम के अनुसार उन्नति से अलग राह पर चलती है। 'जेन जेड', ऐसी नौकरी तलाशते हैं जो लचीली हों, जिनसे वे सार्थक योगदान दे सके और जो उनके व्यक्तिगत मूल्यों के अनुरूप हो। 'जेनरेशन जेड' की उन संगठनों में काम करने की इच्छा है, जो विविधता, समावेशन और कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व को प्राथमिकता देते हैं। यह पीढ़ी कनाडा के इतिहास में नस्लीय रूप से सबसे विविध है और सामाजिक रूप से अधिक जागरूक वातावरण में पली-बढ़ी है। वे समान व्यवहार व पर्यावरणीय स्थिरता के बारे में दृढ़ विचार रखते हैं और अक्सर अपने नियोक्ताओं से 'अपनी बात पर अमल' करने की अपेक्षा करते हैं। एक रिपोर्ट के मुताबिक, 'जेन जेड' कर्मचारियों के उद्देश्यपूर्ण कार्य प्रदान करने वाले

संगठनों में बने रहने की संभावना काफी अधिक होती है और जब ऐसी चीजें किसी कंपनी में मौजूद होती है तो उनके उस संस्थान में बने रहने की संभावना 3.6 गुना बढ़ जाती है।

अधिकार के बजाय सहयोग को प्राथमिकता : 'जेन जेड' के भीतर एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति अधिकार के बजाय सहयोग को प्राथमिकता देना है।एक हालिया सर्वेक्षण में पता चला कि 'जेन जेड' के लगभग आधे पेशेवर ऐसा काम पसंद करते हैं, जिनमें पर्यवेक्षकीय जिम्मेदारियां शामिल न हों। यह अनिच्छा पारंपरिक नेतृत्व भूमिकाओं की कथित कमियों से उपजी है, जिनमें अत्यधिक तनाव, जटिल काम के घंटे और कम स्वायत्तता शामिल है। कुछ 'जेन जेड' कर्मचारी प्रबंधकीय दायित्वों से बचने के लिए कम वेतन स्वीकार करने को भी तैयार हैं।

नियोक्ता कैसे इस परिवर्तन को अपनाएं : 'जेन जेड' प्रतिभाओं को आकर्षित करने और उन्हें बनाए रखने के लिए कनाडाई नियोक्ताओं को साक्ष्य-आधारित रणनीतियां अपनानी चाहिए, जिनमें पुराने तरीकों से हटकर पदोन्नित प्रक्रिया को तेज करना, परियोजना नेतृत्व और कौशल-आधारित उन्नति पर जोर देने वाले ढांचों की ओर बढ़ते हुए करियर विकल्पों को पुनर्परिभाषित करना शामिल है।जैसे-जैसे कृत्रिम मेधा (एआई) और एल्गोरिथम आधारित मानव संसाधन प्रणालियां अधिक प्रचलित होती जा रही हैं, नियोक्ताओं को यह विचार करना होगा कि ये चीजें 'जेन जेड' के काम करने के तरीकों के अनुरूप कैसे ढल सकती हैं।

'जेन जेड' के लिए स्थिरता एक और प्राथमिकता है।

इस पीढ़ी के लिए, जलवायु कार्रवाई कोई नारा नहीं बल्कि एक नैतिक अनिवार्यता है। 'जेन जेड' को समझना और इन नए पेशेवरों के अनुसार स्वयं को ढालने के लिए कदम उठाना, सार्थक विकास के लिए जरूरी विश्वास पैदा करने में नियोक्ताओं की मदद करेगा।

द कन्वरसेशन

अब हवाई यात्रा भी बन गई आफत!

रजनीश कपूर

इंडिगो और स्पाइसजेट जैसी भारतीय एयरलाइनों को, जो कि ए320 पर निर्भर हैं, इस संकट से सबक लेना चाहिए। लागत कम करने के चक्कर में सुरक्षा से कोई भी समझौता नहीं करना चाहिए। एयरलाइनों को विविधीकरण अपनाना चाहिए, केवल एक निर्माता पर निर्भर न रहें।

हवाई यात्रा ने आधुनिक युग में दुनिया को गांव बनाया है। यह न केवल यात्रियों को दुनिया के कोने-कोने से जोड़ती है, बल्कि व्यापार, पर्यटन और वैश्विक अर्थव्यवस्था का रफ्तार बनाती है। लेकिन क्या नागरिक उड्डयन उद्योग उतना मजबूत है जितना दिखता है? हाल के वर्षों में, विभिन्न संकटों ने इसकी कमजोरियों को उजागर किया है। 2025 में एयरबस के हालिया संकट ने इस बहस को फिर से जीवित कर दिया है। एयरबस, जो बोइंग के साथ मिलकर विश्व के अधिकांश यात्री विमानों का निर्माण करता है, ने हाल में अपने ए320 फैमिली एयरक्राफ्ट में एक गंभीर सॉफ्टवेयर में गड़बड़ी की वजह से वैश्विक स्तर पर उथल-पुथल मचा दी है। इससे कई सवाल उठने लगे कि क्या हवाई यात्राएँ सुरक्षित हैं?

नवंबर 2025 में, एयरबस ने घोषणा की कि ए320 फैमिली के एक विमान में हुई घटना के विश्लेषण से पता चला कि तीव्र सौर विकिरण (रेडिएशन) महत्वपूर्ण डेटा को बिगाड़ सकता है। यह गड़बड़ी फ्लाइट कंट्रोल सिस्टम को प्रभावित करती है, जो विमान की सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। परिणामस्वरूप, कंपनी ने लगभग 6, 000 ए320 सीरीज के विमानों के लिए तत्काल सॉफ्टवेयर अपडेट और पूर्व-सतर्कता कार्रवाई का आदेश दिया। इसने वैश्विक विमान यात्राओं में भारी व्यवधान पैदा किया। हजारों यात्री हवाई अड्डों पर फंस गए, उड़ानें रद्द हुईं और एयरलाइनों को करोड़ों का नुकसान हुआ। दिसंबर की शुरुआत तक, एयरबस ने दावा किया कि अधिकांश विमानों को ठीक कर लिया गया है, लेकिन अभी भी कई विमानों पर काम चल रहा है।

इससे भी ज्यादा चिंताजनक बात यह है कि सॉफ्टवेयर समस्या के ठीक बाद, कंपनी ने ए320 के कुछ विमानों के धातु पैनलों में औद्योगिक गुणवत्ता की समस्या पाई, जो फ्यूजलेज को प्रभावित करती है। यह कुछ ही विमानों तक सीमित है, लेकिन यह दर्शाता है कि एक समस्या दूसरी को जन्म दे सकती है। यह संकट हवाई उद्योग की कमजोरियों को स्पष्ट रूप से उजागर करता है। सबसे बड़ी कमजोरी है बाजार का एकाधिकार। एयरबस और बोइंग मिलकर 90 फीसदी से अधिक यात्री विमानों का

उत्पादन करते हैं। यदि एक कंपनी में कोई समस्या आती है, तो पूरा उद्योग प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए, 2019 में बोइंग 737 मैक्स की दुर्घटनाओं ने पूरे उद्योग को हिला दिया था और अब एयरबस का संकट उसी कड़ी का हिस्सा लगता है। दूसरी कमजोरी है तकनीकी निर्भरता। आधुनिक विमान सॉफ्टवेयर, सेंसर और इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम पर आधारित हैं। सौर विकिरण जैसी बाहरी घटनाएं, जो जलवायु परिवर्तन के साथ बढ़ रही हैं, इन सिस्टमों को प्रभावित कर सकती हैं। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला की कमजोरी भी एक बड़ा मुद्दा है। क्एळए के अनुसार, 2025 में हवाई यात्रा में 5 फीसदी की वृद्धि की उम्मीद थी, लेकिन एयरबस संकट ने इसे प्रभावित किया। एयरलाइनों की लाभप्रदता कम हो गई और निवेशकों का विश्वास डगमगाया। पर्यावरणीय दबाव भी बढ़ रहा है; कार्बन उत्सर्जन को कम करने के प्रयासों में, नई तकनीकों को अपनाने में जोखिम है। कुल मिलाकर, यह उद्योग एक जटिल जाल में फंसा है जहां एक छोटी गड़बड़ी वैश्विक संकट पैदा कर सकती है। वहीं नियामक संस्थाएं जैसे यूरोपीय यूनियन एविएशन सेफ्टी एजेंसी (ईएएसए), फेडरल एविएशन एडमिनिस्ट्रेशन (एफएए) अमेरिका में और भारत में डायरेक्टरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन (डीजीसीए) उद्योग के मानकों को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। एयरबस संकट में, ईएएसए ने तत्काल कार्रवाई की मांग की और सॉफ्टवेयर अपडेट को अनिवार्य किया। नियामकों का काम है विमानों के डिजाइन, निर्माण और संचालन की जांच करना। वे सर्टिफिकेशन प्रक्रिया के माध्यम से सुनिश्चित करते हैं कि कोई भी नया विमान या अपडेट सुरक्षा मानकों को पूरा करे। लेकिन क्या वे पर्याप्त हैं?

बोइंग 737 मैक्स मामले में एफएए की आलोचना हुई कि उन्होंने निर्माता पर ज्यादा भरोसा किया। एयरबस मामले में भी, यदि सौर विकिरण की समस्या पहले पता चल जाती, तो संकट टाला जा सकता था। नियामकों को अधिक सक्रिय होना चाहिए, नियमित ऑडिट, स्वतंत्र जांच और उभरते जोखिमों जैसे साइबर हमलों या राष्ट्रीय होते हैं। भारत जैसे विकासशील देशों में, डीजीसीए को मजबूत बनाना चाहिए ताकि स्थानीय एयरलाइनों पर सख्ती से मानक लागू हों। नियामकों की भूमिका न केवल संकट प्रबंधन में है, बल्कि सकारात्मक उपायों में भी, जो उद्योग की कमजोरियों को कम कर सकती है और हवाई यात्राओं को सुरक्षित बना सकती है।

एयरलाइनों की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। वे अंतिम उपयोगकर्ता हैं और यात्रियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी उठाती हैं।एयरबस संकट में, अमेरिकन एयरलाइंस जैसी कंपनियों ने तत्काल अपने बेड़े को अपडेट किया। एयरलाइनों को नियमित रखरखाव, पायलट प्रशिक्षण और सुरक्षा प्रोटोकॉल पर जोर देना चाहिए। वे निर्माताओं से पार्ट्स और अपडेट प्राप्त करती हैं, लेकिन अपनी जांच भी करनी चाहिए। उदाहरण के लिए, इंडिगो और स्पाइसजेट जैसी भारतीय एयरलाइनों को, जो कि ए320 पर निर्भर हैं, इस संकट से सबक लेना चाहिए। लागत कम करने के चक्कर में सुरक्षा से कोई भी समझौता नहीं करना चाहिए। एयरलाइनों को विविधीकरण अपनाना चाहिए, केवल एक निर्माता पर निर्भर न रहें।

साथ ही, यात्री संचार में पारदर्शिता रखें, ताकि विश्वास बना रहे। कुल मिलाकर, एयरलाइनों की जिम्मेदारी है कि वे नियामकों के साथ मिलकर मानकों को लागू करें और संकटों में त्वरित प्रतिक्रिया दें। एयरबस संकट ने साबित किया कि हवाई उद्योग कितना संवेदनशील है। तकनीकी, आर्थिक और पर्यावरणीय चुनौतियों से घिरा हुआ है। लेकिन मजबूत नियामक ढांचा और जिम्मेदार एयरलाइंस इसकी रक्षा कर सकती हैं। सरकारों को अनुसंधान में निवेश करना होगा, उद्योग को अधिक लचीला बनाना होगा, ताकि भविष्य के संकटों से निपटा जा सके। आखिरकार सुरक्षा सर्वोपरि है, क्योंकि आकाश में उड़ान भरना जोखिम भरा है, लेकिन इसे सुरक्षित बनाना सभी की जिम्मेदारी है।

हिंदूवादी संगठनों ने कलेक्ट्रेट में किया प्रदर्शन

धार्मिक स्थलों से लाउडस्पीकर हटाने और अवैध ढांचा गिराने की मांग

पायनियर संवाददाता। शाहजहांपुर

शाहजहांपुर में हिंदूवादी संगठनों ने कलेक्ट्रेट परिसर पहुंचकर विरोध प्रदर्शन किया। उन्होंने प्रशासन को ज्ञापन सौंपकर धार्मिक स्थलों से लाउडस्पीकर हटाने और कुआंवारा की जमीन पर बनाए गए अवैध धार्मिक स्थल को तत्काल हटाने की मांग की।

संगठनों के पदाधिकारियों ने बताया कि टाउन हॉल स्थित नगर निगम कार्यालय के पास हिंदुओं के वैवाहिक समारोहों में उपयोग होने वाली कुआंवारा की जमीन पर एक अवैध ढांचा खड़ा किया गया है। हिंदू संगठनों ने इसका विरोध करते हुए सिविल जज के समक्ष मुकदमा दायर किया था। वर्ष 2013 में सिविल कोर्ट ने इस जमीन से अवैध धार्मिक स्थल को हटाने का आदेश दिया था। हालांकि, इस आदेश के बावजूद आज तक यह अवैध ढांचा नहीं हटाया गया है। इसे लेकर हिंदूवादी संगठनों ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर प्रशासन से कार्रवाई की मांग की। इसके अतिरिक्त, हिंदू संगठनों ने जिले में धार्मिक स्थलों पर लगे लाउडस्पीकर हटाने की भी मांग की। ज्ञापन में कहा गया कि बच्चों की परीक्षाएं नजदीक हैं, और लाउडस्पीकर की तेज आवाज से बीमार बुजुर्गों को भी परेशानी होती है। इसलिए जनहित में धार्मिक स्थलों से लाउडस्पीकर हटाना आवश्यक है। संगठनों ने जनपद में नदियों के किनारे कब्जा की जा रही सरकारी भूमि को खाली कराने की भी मांग की। साथ ही, जहां-जहां हिंदुओं के कुआंवारा करने के स्थान चिह्नित हैं, उन पर किए गए अवैध अतिक्रमण को भी हटाने की मांग रखी गई। संगठनों ने चेतावनी दी है कि यदि उनकी मांगें पूरी नहीं की गईं, तो वे अगला कदम उठाएंगे, जिसकी जिम्मेदारी पुलिस प्रशासन की होगी।

अखिल भारतीय नृत्य, गायन और नाट्य महोत्सव के विषय में विचार विमर्श

बरेली। ऑल इंडिया कल्चरल एसोसिएशन की अहम बैठक बी.डी.ए.कॉलोनी में कार्यालय पर आयोजित हुई।संस्था के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजीव शर्मा टीटू ने कहा कि इस बार गणतंत्र दिवस के अवसर पर होने वाले अखिल भारतीय नृत्य,गायन और नाट्य महोत्सव का भव्य आयोजन किया जाएगा। महासचिव सुनील धवन ने बताया कि उत्तराखंड,आसाम,झारखंड, दिल्ली ,उत्तर प्रदेश, बंगाल, उड़ीसा के नृत्य एवं नाट्य दलों से बात हो गई है और सभी ने आने की स्वीकृति प्रदान की है।कार्यवाहक अध्यक्ष डॉ.सैयद सिराज अली ने कहा कि अव्यवसायिक कलाकारों के महाकुंभ को हर वर्ष मनाया जाता है सभी बढ़ चढ़ कर उत्साह के साथ शामिल होते हैं ।

शाहजहांपुर स्मार्ट सिटी है तो दिखे भी

❖ सड़कों की मरम्मत के लिए 74 करोड़ मंजूर, 152 स्मार्ट लाईटे भी लगेंगी

पायनियर संवाददाता। शाहजहांपुर

वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने शाहजहांपुर में सड़कों की मरम्मत के लिए 74 करोड़ 67 लाख रुपये के बजट की घोषणा की है। उन्होंने बताया कि सीवर लाइन बिछाने के बाद सड़कों की मरम्मत ठीक से नहीं हुई थी, जिसके बाद शासन ने जिले की सभी सड़कों को स्वीकृत किया है। इस बजट से लोगों को आवागमन में होने वाली दिक्कतें दूर होंगी। मंत्री खन्ना ने कहा कि शाहजहांपुर एक स्मार्ट सिटी है और इसे स्मार्ट दिखना भी चाहिए। इसके लिए 152 स्मार्ट लाइटें लगाने की भी स्वीकृति दी गई है। उन्होंने जोर दिया कि शासन द्वारा सड़कों और लाइटों को बेहतर बनाने का प्रयास किया जा रहा है। वित्त मंत्री ने यह भी आश्वासन दिया कि भविष्य में आवश्यकतानुसार अन्य विकास कार्यों पर भी कार्रवाई की जाएगी।

सुरेश खन्ना ने शाहजहांपुर के गन्ना शोध परिसर के महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि इस परिसर के माध्यम से कई ऐसी गन्ने की किस्में विकसित की गई हैं, जिनसे किसानों की आय बढ़ी है और गन्ने की पैदावार व शुगर कंटेंट्स में भी वृद्धि हुई है। उन्होंने शोधकर्ताओं और वैज्ञानिकों को उनके प्रयासों के लिए बधाई दी।मंत्री ने डॉ. बख्शीराम द्वारा विकसित 238 किस्म का भी जिक्र किया, जिसने एक समय पूरे देश में धूम मचाई थी, हालांकि बाद में उसमें रोग लग गया था। उन्होंने बताया कि इस वर्ष भी गन्ना शोध परिषद ने दस ऐसी किस्में दी हैं, जिन्हें प्रदेश स्तर पर चिह्नित किया गया है। उन्होंने सभी वैज्ञानिकों को बधाई देते हुए अच्छा कार्य करने वालों को प्रोत्साहित करने की बात कही।

धूमधाम से मनाया गया वार्षिक उत्सव

भीटी/अंबेडकरनगर। तहसील भीटी क्षेत्र स्थित जनता इंटर कॉलेज महरूआ गोला में वार्षिक उत्सव बड़े हर्षोल्लास और भव्यता के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में कटेहरी विधायक धर्मराज निषाद उपस्थित रहे, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में पूर्व ब्लॉक प्रमुख अजय सिंह सिपाही और निर्मला उपाध्याय ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों के स्वागत से हुई। विद्यालय के प्रबंधक सूर्यलाल सिंह, प्रधानाचार्य योगेंद्र प्रसाद यादव, अरुण सिंह, महाबल सिंह सहित विद्यालय परिवार ने मुख्य अतिथि और विशिष्ट अतिथियों को पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया। वार्षिकोत्सव में छात्राओं ने आकर्षक एवं मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।

सूखे तालाब में भरा गया पानी, प्रशासन हुआ सक्रिय, ग्रामीणों ने जताया आभार

पायनियर संवाददाता। हजपुरा/ अम्बेडकरनगर।

ग्राम पंचायत लारपुर में अमृत सरोवर योजना के तहत बनाए गए तालाब में पानी के बजाय खेल का मैदान बन जाने की खबर छपते ही जिला प्रशासन हरकत में आ गया। खबर को गंभीरता से लेते हुए जिलाधिकारी अनुपम शुक्ला ने तत्काल जांच के आदेश दिए। जांच में मामला सही पाए जाने के बाद विकासखंड अधिकारी ने तालाब में पानी भरवाने की कार्रवाई शुरू कराई।

शुक्रवार सुबह जैसे ही संबंधित विभागों को निर्देश मिले, मशीनों के जरिए तालाब में पानी भरने का कार्य प्रारंभ कर दिया गया। कुछ ही घंटों में सूखे पड़े सरोवर में दोबारा पानी भरने लगा और तालाब की रौनक लौट आई। स्थानीय ग्रामीणों ने राहत की सांस लेते हुए कहा कि अगर खबर प्रकाशित न होती तो शायद उनकी समस्या अनसुनी ही रह जाती। ग्रामीणों ने बताया कि अब कम से कम पशुओं और खेतों के लिए पानी की उम्मीद जगी है।

बाबा भीमराव अंबेडकर का परिनिर्वाण दिवस मनाया

पायनियर संवाददाता। शाहजहांपुर

आज दिनांक 6 दिसंबर 2025 को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मा. अखिलेश यादव जी के निर्देशानुसार संविधान निर्माता बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी का परिनिर्वाण दिवस जनपद शाहजहांपुर बिजलीपुरा स्थित समाजवादी पार्टी के जिला कार्यालय पर सपा जिला अध्यक्ष एवं पूर्व चेयरमैन श्री तनवीर खान की अध्यक्षता में मनाया गया।

इस मौके पर पार्टी के सभी नेताओं व पदाधिकारीयों एवं कार्यकर्ताओं ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर उनको श्रद्धांजलि अर्पित कर उनके व्यक्तित्व पर चर्चा की गई। इस मौके पर सपा के जिला अध्यक्ष तनवीर खान ने कहा कि बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी की विरासत भारत की राष्ट्रीय पहचान का एक अभिन्न अंग है और उनके विचार भविष्य की पीढ़ियों को प्रेरित करते रहेंगे...! इस मौके पर पूर्व मंत्री अवधेश कुमार वर्मा ने कहा कि बाबा साहब डॉ भीमराव अंबेडकर जी का समावेशी और समतावादी समाज का उनका दृष्टिकोण, जैसा कि भारतीय संविधान में निहित है, देश के भविष्य के विकास के लिये एक मार्गदर्शक सिद्धांत बना हुआ है...! इस मौके पर सपा जिला महासचिव रंणजय सिंह यादव ने कहा कि बाबा साहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर जी को भारतीय संविधान के जनक के रूप में याद किया जाता है...! इस मौके पर सपा के प्रदेश सचिव विजय सिंह, सपा प्रदेश सचिव रामसूरत यादव, सपा अल्पसंख्यक सभा के प्रदेश प्रमुख महासचिव सैयद रिजवान अहमद, सपा महिला सभा की राष्ट्रीय सचिव गायत्री वर्मा,सपा नगर विधानसभा अध्यक्ष अतिउल्ला सिद्दीकी,सपा के महानगर अध्यक्ष चौधरी रामकुमार भोजवाल, सपा नेता लखन प्रताप सिंह, सपा नेता जितेंद्र प्रसाद प्रधान, आदि मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

नौवीं की छात्रा ने गर्रा पुल से छलांग लगाई

शाहजहांपुर। नौवीं की छात्रा ने गर्रा पुल से छलांग लगाई। शाहजहांपुर में लोगों ने बचाया, गंभीर हालत में मेडिकल कॉलेज में भर्ती। शाहजहांपुर में नौवीं कक्षा की एक छात्रा ने गर्रा पुल से गर्रा नदी में छलांग लगा दी। आसपास मौजूद लोगों ने उसे तुरंत बचा लिया और राजकीय मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया। पुलिस ने छात्रा के परिजनों को सूचना दे दी है। यह घटना चौक कोतवाली के राजघाट पुलिस चौकी के पास गर्रा पुल पर दोपहर करीब साढ़े 12 बजे हुई। छात्रा अपनी पीठ पर स्कूल बैग लिए पुल पर घूम रही थी। मौका पाकर उसने नदी में छलांग लगा दी। पानी में गिरने की आवाज सुनकर आसपास के लोगों ने शोर मचाया। नदी में मौजूद एक नाव वाले ने तुरंत सक्रियता दिखाते हुए छात्रा को बाहर निकाल लिया। सूचना मिलते ही पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। नदी में पानी कम होने के कारण छात्रा को कुछ चोटें भी आई थीं। पुलिस ने छात्रा के बैग की तलाशी ली, जिसमें स्कूल का पहचान पत्र मिला। इससे उसकी पहचान थाना आरसी मिशन क्षेत्र के एक गांव की नौवीं कक्षा की छात्रा के रूप में हुई। पुलिस ने परिजनों को सूचना दी, जिन्होंने बताया कि उन्हें छात्रा के इस कदम उठाने का कोई कारण नहीं पता और वह किसी डिप्रेशन में भी नहीं थी। राजघाट चौकी प्रभारी ने बताया कि छात्रा को राजकीय मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। उसके होश में आने के बाद ही नदी में कूदने के कारणों का पता चल पाएगा।

गन्ने के खेत में भीषण आग, टली बड़ी दुर्घटना

भीटी/अंबेडकरनगर। थाना महरूआ क्षेत्र के ग्राम पंचायत रामनगर कर्री में अज्ञात कारणों से गन्ने के खेतों में लगी भीषण आग से हड़कंप मच गया। अचानक उठी तेज लपटों ने आसपास के ग्रामीणों में अफरा-तफरी मचा दी। मिली जानकारी के अनुसार, संजय कुमार निषाद पुत्र सतीराम के लगभग दो बीघा पक्के गन्ने के खेत तथा अशोक कुमार वर्मा पुत्र राम केवल वर्मा के एक बीघा गन्ने के खेत में अचानक आग लग गई। हवा के साथ आग तेजी से फैलने लगी, जिससे नुकसान की आशंका बढ़ गई। गांव में आग की लपटें देख ग्रामीण हल्ला गुहार करते हुए मौके पर दौड़े और आग बुझाने में जुट गए। इसी बीच सूचना मिलते ही पीआरबी संख्या 7372 पर पहुंचे हेड कॉन्स्टेबल असलम खान तथा कॉन्स्टेबल अंजमन अली भी तत्काल कार्रवाई में लग गए। ग्रामीणों के सहयोग से पुलिस टीम ने सूझबूझ और तत्परता के साथ आग पर काबू पा लिया, जिससे बड़ी क्षति होने से बचाव हो सका। आग नियंत्रित होने के कुछ देर बाद दमकल विभाग की टीम भी मौके पर पहुंची और शेष हिस्सों का निरीक्षण कर स्थिति को पूरी तरह नियंत्रण में किया। घटना के बाद प्रभावित किसानों सहित ग्रामीणों ने राहत की सांस ली। ग्रामीणों और पीआरबी की त्वरित सक्रियता से एक बड़ी आपदा टल गई। प्रशासन ने घटना की जांच की बात कही है।

वनकर्मियों की अनदेखी से बथुआ जंगल हो गया वीरान, जिम्मेदार बेखबर

बेलरायां-खीयी। उत्तर निघासन रेंज बेलरायां के वनकर्मियों की ढिलाई से बथुआ जंगल में दशकों पुराने शीशम,खैर के पेड़ विलुप्त हो रहे है। वन्यजीव जंगल के बजाय गन्ना खेतों में छिपने को विवश हो गए हैं।इससे तराई में पर्यावरण के संकट के आसार प्रबल हो गए हैं।जिससे नाराज वन प्रेमियों ने अवैध कटान पर अंकुश कराने की मांग अफसरों से किया है। ग्राम बथुआ के वन प्रेमियों ने बताया कि करीब सन 2015 में जंगल में खैर शीशम,जामुन सहित तमाम प्रजाति के पेड़ बहुतायत थे। वनों में विचरण कर रहे बाघ,तेंदुआ, हिरन,चीतल सहित वन्यजीवों को राहत मिलती थी।बाद में वनकर्मियों के रहमो करम से बेलरायां,सिंगाही,निघासन,ढखेरवा के लकडकट्टो ने जंगल में धीरे धीरे शीशम,खैर पेडों को विलुप्त करना शुरू कर दिया है।इससे गांवों का हरा भरा जंगल वीरान होना शुरू हो गया है।बाघ,हिरण, तेंदुआ सहित वन्यजीव जंतु पड़ोस के गन्ना खेतों में छिपने को बाध्य हो गए है।वन्यजीवों की रोकथाम के लिए लगी लोहे की जाली जगह जगह झुक गई है।गांवों में वन्यजीवों की आएदिन चहलकदमी बनी रहती है। इससे नाराज वन प्रेमियों ने वनों में अवैध कटान पर अंकुश लगाने की मांग जिम्मेदारों से किया है।

क्या बोले जिम्मेदार

रेंजर भूपेंद्र सिंह ने बताया है कि बथुआ वनचौकी जंगल में अवैध कटान की जांच कराई जाएगी।जांच के बाद दोषियों के विरूद्ध कार्यवाई होगी।

बाबा साहब का संविधान भारतीयों का सुरक्षा कवच : जयप्रकाश मौर्य

पायनियर संवाददाता । अम्बेडकरनगर।

भारत के महान संविधान शिल्पी व सामाजिक न्याय के अग्रदूत डॉ. भीमराव अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर आलापुर विधानसभा क्षेत्र में कई स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिला पंचायत क्षेत्र रामनगर पूर्वी अंतर्गत मगनपुर महिमापुर और रामपुर मलिकपुर तेतरिया में आयोजित नुक्कड़ बैठकों में बाबा साहब के जीवन, संघर्ष और संविधान निर्माण में उनके योगदान पर विस्तार से चर्चा की गयी।

कार्यक्रम की अध्यक्षता बसपा नेता जयप्रकाश मौर्य ने किया। सर्वप्रथम दोनों स्थानों पर उपस्थित जनसमूह द्वारा बाबा साहब की प्रतिमा पर माल्यार्पण और पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी गयी। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित जयप्रकाश मौर्य ने कहा कि ''बाबा साहब के संघर्ष ही हमारे जीवन का मूल आधार हैं। आज हर भारतीय जिस अधिकार, सम्मान और खुशहाली का अनुभव करता है, वह डॉ. अंबेडकर के द्वारा दिये गये संविधान की देन है। दुनिया में भारतीय संविधान जैसा कोई कवच हमारे लिए नहीं हो सकता। हमें उनके बताए मार्ग पर चलकर ही समाज और देश को सशक्त बनाना है।रामपुर मलिकपुर तेतरिया में आयोजित बैठक में समाजसेवी रमेश मौर्य ने ग्रामीणों को एकत्र कर कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रामरति निषाद हत्याकांड में फरार चल रही चौथी महिला आरोपी गिरफ्तार, भेजी गई जेल

पायनियर संवाददाता। भीटी/अंबेडकरनगर

भीटी थाना क्षेत्र के चर्चित रामरति निषाद हत्याकांड में फरार चल रही चैथी महिला अभियुक्त को पुलिस ने शुक्रवार सुबह गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। मामले में इससे पहले तीन आरोपी पहले ही सलाखों के पीछे भेजे जा चुके हैं।

ग्राम खमपुर मदारभारी निवासी रामरति निषाद पत्नी स्वर्गीय रामजी निषाद 17 अक्टूबर को खेत में धान काटने गई थीं। आरोप है कि इसी दौरान उनके पड़ोसी रामदयाल, उसके पुत्रों और सहयोगियों ने मिलकर खेत में ही उनकी हत्या कर दी थी। वारदात को छिपाने के लिए शव को बोरे में भरकर जयसिंहपुर थाना क्षेत्र में फेंक दिया गया था। लगातार तीन दिन तक चली खोजबीन और आरोपी बृजलाल पुत्र रामदयाल की निशानदेही पर पुलिस ने शव बरामद कर लिया था। घटना के बाद रामदयाल, बृजलाल और जोजो वर्मा को गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है। विवेचना के दौरान आरोपी आशा पत्नी रामदयाल का नाम सामने आया था, जो घटना के बाद से फरार चल रही थी। प्रभारी निरीक्षक भीटी अमित कुमार पांडे ने बताया कि मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने शुक्रवार सुबह करीब 8: 30 बजे उसके घर पर दबिश दी और उसे गिरफ्तार कर लिया। न्यायालय में पेश करने के बाद उसे जेल भेज दिया गया। गिरफ्तारी करने वाली टीम में प्रभारी निरीक्षक अमित कुमार पांडे, महिला कांस्टेबल सुषमा यादव, कांस्टेबल नवनीत कुमार और कांस्टेबल हरि विष्णु बघेल शामिल रहे।

हत्या व लूट मामले के खुलासे के करीब पहुंची टांडा पुलिस

टांडा/अंबेडकरनगर। टांडा कोतवाली क्षेत्र के ग्राम हजला पुर में एक 52 वर्षीय महिला की हत्या व लुट के मामले में कोतवाली पुलिस खुलासे के करीब पहुंच गई है ।मामले का खुलासा रविवार को होने की उम्मीद जताई जा रही है।पुलिस बीते 4 दिनों में दर्जनों लोगों से पूछताछ भी कर चुकी है।पुलिस का कहना है कि वह ठोस नतीजे पर पहुंच चुकी है।

घटना में मृतका का करीबी ही शामिल है आज शनिवार को सी ओ टांडा शुभम कुमार,कोतवाल टांडा दीपक सिंह रघुवंशी, थानाध्यक्ष अलीगंज भूपेंद्र कुमार सिंह,एस ओ जी प्रभारी विनोद कुमार यादव,सर्विलांस सेल प्रभारी संजय कुमार पांडे आदि ने हत्या के खुलासे को लेकर गहन मंत्रणा किया।पुलिस मृतका के एक पुत्र को अभी भी पूछताछ कर रही है।आज पुनः मृतका के परिवार के लोगों से पुलिस ने बात चीत करते देखा गया।

घर में लगी आग, महिला गंभीर रूप से झुलसीं

बरेली । थाना कोतवाली क्षेत्र के चैपला क्षेत्र में उस समय अफरा-तफरी मच गई जब दीपमाला हॉस्पिटल के सामने स्थित बगिया के पास एक मकान में अचानक आग भड़क उठी। आग की इस घटना में मकान में रहने वाली रमा सक्सेना, पत्नी राजेश कुमार सक्सेना, गंभीर रूप से झुलस गईं। स्थानीय लोगों के अनुसार, घर में गरम पानी करने के लिए उपयोग की जाने वाली रॉड को गलती से उपयोग के बाद बेड पर रख दिया गया था। कुछ ही देर में पानी की रॉड से गद्दे और बिस्तर आग लग गई , जिससे पूरा कमरा लपटों की चपेट में आ गया।आग लगते ही पड़ोसियों में हड़कंप मच गया।

बेमिसाल है बीएलओ का हौंसला

एसआईआर का 100 दिन का कार्य पूर्ण

पायनियर संवाददाता। बरेली

विशेष पुनरीक्षण अभियान को लेकर जहां एक और सपा कांग्रेस तृणमूल कांग्रेस जैसी विपक्षी पार्टियों ने पूरे देश में अपना वोट बैंक खिसकने के डर से हाय तौबा मचा रखी है और कुछ बीएलओ की हार्ट अटैक और सुसाइड को राजनीतिक तीर बना रहे हैं वहीं दूसरी ओर सिंचाई विभाग के रोहिलखंड नहर खंड बरेली में कार्यरत सींचपाल एम एल गौतम शहर विधानसभा क्षेत्र के वार्ड 29 के बीएलओ मिसाल बन गए हैं वर्ष 2005 में एक तांगा दुर्घटना के शिकार हो गए सींचपाल एम एल गौतम का पीजीआई के चिकित्सकों ने आधा आमाशय काटकर निकाल दिया और आगे जीवन भर पिसी हुई धुली दाल का घोल और पिसी हुई तोराई पीकर जिन्दगी को आगे ले जाना उनके जीवन का एक हिस्सा बन गया लेकिन ऐसे बीएलओ के उसे चाहिए और हिम्मत को सलाम जिन्होंने वर्ष 2015 से लेकर आज तक बीएलओ की ड्यूटी लगाए जाने पर कभी भी मेडिकल ग्राउंड पर अपना नाम कटवाने की कोई गुजारिश किसी अधिकारी से नहीं की और खुशी-खुशी पूरे जज्बे और हौसले का साथ विषम परिस्थितियों में भी हमेशा की तरह अपने काम को अंजाम ही नहीं दिया वरन्‌ ड्यूटी पर बेहोश हो जाने के बावजूद भी दो दिन आराम करने के बाद 100: अपने काम को पूरा किया। बीएलओ गौतम अब तक नगर निगम, विधानसभा, लोकसभा के सभी चुनाव में अपनी बीएलओ की जिम्मेदारी का फर्ज निभा चुके हैं ।

एक फूल दो माली: महिला को धमकाने पहुंचा प्रेमी

❖ पुलिस ने दूसरे पति प्रेमी, महिला सहित चार लोगों को थाने ले जाकर शुरू की जांच

पायनियर संवाददाता। बरेली

शुक्रवार दोपहर कलेक्ट्रेट गेट के बाहर उस समय हंगामा मच गया जब एक महिला को उसका प्रेमी जान से मारने की धमकी देने लगा।

मामला घरेलू विवाद से जुड़ा बताया जा रहा है।जानकारी के अनुसार थाना भमोरा क्षेत्र के कस्बा बलिया निवासी ठाकुर सत्येंद्र सिंह की मुलाकात करीब एक माह पहले फरीदपुर निवासी उमेश पाल की पुत्री राजवती से स्टेशन पर हुई थी। राजवती ने अपनी और अपनी दो बेटियों (1 वर्ष व 3 वर्ष) के भविष्य को देखते हुए सत्येंद्र से जीवनभर साथ निभाने की बात कही, जिसके बाद दोनों ने विवाह कर लिया। राजवती महिला की पहली शादी बदायूं क्षेत्र के मुजरिया के पास हुई थी पति परेशान करता था शराब पीकर पत्नी की पिटाई करता था दो लड़की होने के ताने देता था राजवती ने पहले पति को छोड़ दिया मायके में रहने लगी एक महीने पहले दूसरी शादी सतेन्द्र सिंह से कर ली ।

महापरिनिर्वाण दिवस पर पालिकाध्यक्ष गोला ने डॉ. अंबेडकर को किया याद

गोला गोकर्णनाथ-खीरी। नगर पालिका परिषद गोला के सभागार में भारत रत्न बाबासाहेब डा० भीमराव अंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर भारतीय समाज में किए गए उनके योगदान को याद कर नगर पालिका अध्यक्ष विजय शुक्ला रिंकू ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि बाबासाहेब ने अपनी पूरी जिंदगी हमेशा ऐसे समाज की बात की जिसमें सभी लोगों के साथ बराबरी का व्यवहार किया जाए। डॉ. आंबेडकर ने हमेशा असमानताओं के खिलाफ संघर्ष किया था। इस अवसर पर सभासद धर्मेन्द्र तिवारी ,एस आई संदीप वर्मा, वरिष्ठ लिपिक अमित श्रीवास्तव, लेखाकार मोहित अवस्थी,जे ई अनिल कुमार यादव, मण्डल अध्यक्ष कुम्भी रविन्द्र कटियार, धीरज बाजपेयी, राजीव वर्मा, विनोद वर्मा, शिवम गुप्ता, सुरेन्द्र वर्मा, काके सहगल,आदि मौजूद रहे। रेखा मिश्रा, गीता विश्वकर्मा सहित अनेक लोग उपस्थित रहे।

जिन्होंने कत्ल किया वे बाहर घूम रहे : आरती राय

पूर्व विधायक पुत्र संजीव मुन्ना की गिरफ्तारी के विरोध में नारेबाजी कर सौंपा ज्ञापन

पायनियर संवाददाता। पलियाकलां-खीरी।

जमीनी विवाद 35 साल पुराने को लेकर बिना पूर्व सूचना के गत शनिवार को पूर्व विधायक निरवेंन्द्र कुमार मिश्रा ₹मुन्ना₹ के पुत्र संजीव कुमार मिश्रा को पलिया पुलिस ने पीएससी और भारी पुलिस बल के साथ गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था। इस गिरफ्तारी को लेकर क्षेत्र में काफी विवाद उत्पन्न हो गया है।

इस गिरफ्तारी के खिलाफ आज दोपहर 12 बजे अखिल भारतीय किसान महासभा और क्षेत्र के बुद्धिजीवी वर्ग (लोकतंत्र बचाओ) के बैनर तले एक ज्ञापन राज्यपाल संबोधित उप जिलाधिकारी को सौंपा गया। ज्ञापन में संजीव मिश्रा को न्याय दिलाने, लोकतांत्रिक व्यवस्था को जीवित रखने और इस मामले की निष्पक्ष जांच की मांग की गई है।

किसान महासभा के नेताओं ने आरोप लगाया कि संजीव मुन्ना की गिरफ्तारी में राजनीतिक दबाव और तात्कालिक परिस्थितियों का प्रभाव था और उन्होंने इसे एक राजनीतिक साजिश करार दिया। उन्होंने प्रशासन से मामले की निष्पक्ष जांच करने की अपील की है। यह ज्ञापन प्रशासन के लिए एक चुनौती बन गया है, और अब सभी की निगाहें इस मामले पर टिकी हुई हैं।

ज्ञापन में ये प्रमुख लोग शामिल हुएः वरिष्ठ नेता कमलेश राय,अखिल भारतीय प्रगतिशील महिला संगठन की जिला अध्यक्ष आरती राय,लल्लन गोड पूर्व प्रधान, सोनू चौधरी, पूर्व सभासद विश्वाकांत त्रिपाठी, अतुल शुक्ला, सुरेश कुमार, विनोद निषाद, अनुज निषाद, राधेश्याम, राजेंद्र सिंह, विक्की पाल, अनु चौधरी सपा महिला विधानसभा अध्यक्ष, रवि प्रताप, कुलदीप सिंह, राकेश कुमार, चंद्रभूषण मिश्रा, अब्दुल खालिक, मुमताज राजा, मोतीलाल निषाद, सनी सिंह, राकेश सिंह, मनोज कुमार, शिवम कुमार, नितिन कुमार, नत्थू गौतम। चौआ ठाकुर आदि मौजूद रहे।यह मामला अब प्रशासन के लिए एक बड़ी चुनौती बन चुका है, और क्षेत्र की राजनीति पर इसका असर साफ़ नजर आ रहा है। प्रशासन को निष्पक्ष जांच के दबाव का सामना करना पड़ रहा है, जिससे यह मामला और भी महत्वपूर्ण हो गया है।

तीन दिन से लापता युवक का शव बरामद!

पायनियर संवाददाता। गोला-खीरी

विकास खंड मितौली के ग्राम विशोखर निवासी 30 वर्षीय संतू पुत्र रामदयाल का शव थाना हैदराबाद क्षेत्र के ग्राम चांदामऊ गांव के निकट अशर्फी लाल यादव के खेत के पास सड़क किनारे पानी भरे खंदक में उतराता हुआ मिला।

राहगीरों ने शव देखकर हैदराबाद पुलिस और परिजनों को सूचना दी।मौके पर पहुंची पुलिस और परिजनों ने शव की पहचान की। मृतक की पत्नी कल्पना देवी ने शव को अपने पति संतू के रूप में पहचाना। संतू पेशे से किसान थे और उनके चार छोटे बच्चे हैं, जिनमें तीन बेटियां और एक बेटा शामिल है।मृतक की पत्नी कल्पना देवी ने बताया कि संतू उन्हें बच्चों सहित उनकी ननद के यहां नीमगांव थाना क्षेत्र के ग्राम अटवा में छोड़कर घर वापस आए थे, जिसके बाद से वह लापता थे। उन्होंने यह भी बताया कि वह तीन दिनों से अपने पति की गुमशुदगी की शिकायत लेकर थाने के चक्कर लगा रही थीं, लेकिन उनकी कहीं सुनवाई नहीं हुई।शव मिलने की सूचना पर मौके पर क्षेत्र के सैकड़ों लोग जमा हो गए। कुछ ग्रामीणों ने दबी जुबान में बताया कि हैदराबाद थाना क्षेत्र के ग्राम लोहरय्या में वर्षों से अवैध शराब का धंधा चल रहा है, जिसमें कई नौजवान अपनी जान गंवा चुके हैं। ग्रामीणों का मानना है कि संतू भी लोहरय्या में शराब पीने गए हो सकते हैं। वहीं, कुछ अन्य ग्रामीणों का कहना है कि अज्ञात वाहन की टक्कर से पानी भरे गड्ढे में गिरने के कारण उनकी मृत्यु हुई होगी।

खबर कोना

कार चालक ने मोटरसाइकिल सवार को मारी टक्कर, दो की मौत

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 6 दिसंबर।

शाहबाद डेयरी थाना क्षेत्र में कार और मोटरसाइकिल की टक्कर में दो छात्रों की मौत हो गई। मृतकों की पहचान अंश (18) और यशोदान (18) के रूप में की गई है। घटना के बाद पुलिस टीम मौके पर पहुंची और पाया कि दोनों वाहन क्षतिग्रस्त अवस्था में थे। घायलों को पहले महावीर अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां से उन्हें बाबा साहब आंबेडकर अस्पताल भेजा गया। इलाज के दौरान दोनों छात्रों ने दम तोड़ दिया। पुलिस के अनुसार, घटना के समय कार में छह लोग सवार थे और वह बवाना की ओर जा रही थी। कार चालक ने मोटरसाइकिल सवार छात्रों को टक्कर मार दी। इस हादसे में कुल आठ लोग घायल हुए। सभी घायलों को महावीर अस्पताल में भर्ती कराया गया था। कार चालक की पहचान शाहबाद डेयरी निवासी आकाश (22) के रूप में हुई है। पुलिस ने मामला दर्ज कर हादसे के कारण, वाहन की गति और चालक की लापरवाही की जांच शुरू कर दी है।

बच्ची का यौन शोषण करने का आरोपी गिरफ्तार

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 6 दिसंबर।

नरेला औद्योगिक क्षेत्र थाना पुलिस ने बच्ची का यौन शोषण करने के आरोप में एक 25 वर्षीय युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी ने पिछले तीन दिसंबर को वारदात को अंजाम दिया था। दरअसल, वारदात से पहले आरोपी इलाके में नशे में धुत होकर घूम रहा था। तभी पीड़िता पर उसकी नजर पड़ी। पीड़िता के अकेले होने का फायदा उठाकर आरोपी उसे एक कमरे में ले गया, जहां उसने कमरा अंदर से बंद कर दिया और वारदात को अंजाम देकर फरार हो गया। बाद में पुलिस को वारदात की जानकारी मिली थी। पुलिस ने बच्ची का मेडिकल जांच करवाने के बाद पाक्सो समेत अन्य धाराओं में मामला दर्ज कर लिया था और आरोपी की तलाश में जुटी थी। इसी बीच टीम को आरोपी के बारे में सूचना मिली, जिसके बाद उसे दबोच लिया।

अदालत ने बुराड़ी दोहरे हत्याकांड मामले में आरोपी को बरी किया

नई दिल्ली, 6 दिसंबर (भाषा)।

दिल्ली की एक अदालत ने 2014 में दो व्यक्तियों की हत्या के आरोपी को बरी कर दिया। अदालत ने कहा कि बरामदगी, वैज्ञानिक रपट और गवाहों के बयानों में कई संदेह हैं और अभियोजन विश्वसनीय परिस्थितिजन्य साक्ष्यों की श्रृंखला स्थापित करने में विफल रहा। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश अंकुर जैन ने कहा कि आरोपी के नाबालिग बेटे के बयान से मुकरने के बाद मामला पूरी तरह परिस्थितिजन्य साक्ष्य पर निर्भर था। अभियोजन हत्या के मकसद को स्थापित करने में विफल रहा। अभियोजन के अनुसार, मामला 2014 की उस घटना से जुड़ा है, जब पुलिस को बुराड़ी के पश्चिम कमल विहार में खाली पड़े प्लॉट में दो शव मिलने की सूचना मिली थी। अभियोजन के अनुसार, काल करने वाले सोहनवीर ने एक शव की पहचान अपने रिश्तेदार संसरपाल सिंह के रूप में की, जबकि दूसरे शव की पहचान बाद में मनोज के रूप में हुई।

दिल्ली सरकार ने जारी की सूची

अब 95 और मोहल्ला क्लीनिकों पर लगेगा ताला

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 6 दिसंबर।

दिल्ली सरकार ने अब 95 और मोहल्ला क्लीनिकों को बंद करने के लिए सूची जारी की है। स्वास्थ्य सेवा केंद्रों के शून्य से 1.6 किलोमीटर के दायरे में आने वाले क्लीनिकों को बंद करने का निर्णय लिया गया है। वहीं आप ने दिल्ली में 95 और मोहल्ला क्लीनिक बंद होने की आशंका पर भाजपा सरकार पर गंभीर आरोप लगाए हैं।

बता दें कि यह मोहल्ला क्लीनिक पोर्टा केबिन और किराये की इमारत में संचालित हो रहे हैं। इससे पहले एक किलोमीटर के दायरे वाले मोहल्ला क्लीनिक बंद किए गए थे। मोहल्ला क्लीनिक बंद होने पर कार्यरत कर्मियों के बीच रोष है। इससे पहले सितंबर, अक्तूबर में भी क्लीनिक बंद किए गए थे। आम आदमी मोहल्ला क्लीनिक यूनियन के अध्यक्ष जितेंद्र कुमार ने कहा कि इन 95 क्लीनिक को मिलाकर बंद होने वाले क्लीनिकों की संख्या 296 हो जाएगी। इससे लगभग 1100 से अधिक कर्मी बेरोजगार हो रहे हैं। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने 16 मई को जनता दरबार में वादा किया था कि सभी स्वास्थ्यकर्मियों को आयुष्मान आरोग्य मंदिर में समायोजित किया जाएगा। इसके अलावा इसी मामले में कैट के भी 22 जनवरी 2026 तक कुछ कर्मियों के स्टे आर्डर हैं। जिनको निकाला नहीं जा सकता है। कर्मियों ने सरकार से गुहार लगाई है कि समस्या दूर करे और उन्हें आयुष्मान आरोग्य मंदिर में नियुक्त किया जाए।

आम आदमी पार्टी ने लगाए आरोप

वहीं इसपर आम आदमी पार्टी ने दिल्ली में 95 और मोहल्ला क्लीनिक बंद होने की आशंका पर भाजपा सरकार पर गंभीर आरोप लगाए हैं। प्रदेश संयोजक सौरभ भारद्वाज ने कहा कि सरकार गरीबों को मुफ्त इलाज से वंचित कर रही है, मेट्रो स्टेशनों और शापिंग माल में शराब के प्रीमियम शोरूम खोलने की तैयारी कर रही है। उनके अनुसार, सरकार शराब को बढ़ावा दे रही है, लेकिन स्वास्थ्य सेवाओं की जिम्मेदारी से पीछे हट रही है।

भाजपा का आप पर पलटवार

भाजपा ने आम आदमी पार्टी पर भ्रामक बयानबाजी और झूठ फैलाने का आरोप लगाया है। पार्टी प्रवक्ता प्रवीण शंकर ने कहा कि पिछले 18 महीनों में लोकसभा, विधानसभा और नगर निगम स्तरों के चुनावों में हार के बावजूद आप नेता अब भी मनगढ़ंत कहानियां गढ़ना बंद नहीं कर रहे। सौरभ लगातार जनता को गुमराह करने की कोशिश कर रहे हैं, जबकि दिल्लीवासी अब उनके दावों पर भरोसा नहीं करते।

पार्किंग विवाद में घर के बाहर गोली चलाने का आरोपी व्यक्ति गिरफ्तार

नई दिल्ली, 6 दिसंबर (संवाददाता)।

सीलमपुर में अपने घर के बाहर कार पार्किंग को लेकर भाई से हुए झगड़े के बाद कथित तौर पर गोलीबारी करने के लिए 38 वर्षीय एक व्यक्ति को शनिवार को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने बताया कि घटना शुक्रवार देर रात सवा एक बजे हुई और आरोपी की पहचान मोहम्मद शाहिद के रूप में हुई है।

पुलिस के अनुसार, शिकायतकर्ता इमरान (33) ने जांचकर्ताओं को बताया कि उसके भाई ने सीलमपुर में उनके घर के पास अपनी कार खड़ी की थी, जिस पर उसने आपत्ति जताई थी। शिकायतकर्ता ने बताया कि झगड़ा बढ़ गया और शाहिद ने कथित तौर पर एक गोली चलाई और मौके से फरार हो गया। उन्होंने बताया कि गोलीबारी में कोई घायल नहीं हुआ। उत्तरी पूर्वी जिला पुलिस उपायुक्त आशीष मिश्रा ने बताया कि भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की संबंधित धाराओं और शस्त्र अधिनियम के प्रावधानों के तहत मामला दर्ज कर लिया गया।

फर्जी आयकर अधिकारी बन कर एक किलो सोना लूटने के आरोप में पांच पकड़े गए

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 6 दिसंबर।

मध्य जिला पुलिस ने प्रसाद नगर थाना क्षेत्र में खुद को आयकर और दिल्ली पुलिस का अधिकारी बताकर एक आभूषण बनाने वाली दुकान से करीब एक किलो सोना लूटने वाले पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है। फिलहाल एक आरोपी अकरम फरार है, जिसने सोना होने की जानकारी इन आरोपियों को दी थी।

पुलिस ने शनिवार को बताया कि आरोपियों की पहचान 42 वर्षीय परविंदर, 30 वर्षीय संदीप, 30 वर्षीय लवप्रीत सिंह उर्फ काका, 43 वर्षीय शमिंदर पाल सिंह उर्फ सन्नी और 41 वर्षीय राकेश शर्मा उर्फ केशा के तौर पर की गई हैं। इनमें से संदीप मध्य प्रदेश सरकार के जनसंपर्क विभाग में ओएसडी के तौर पर काम करता है और अकसर दिल्ली आता-जाता रहता है।

मध्य जिले के अतिरिक्त पुलिस उपायुक्त ऋषि कुमार ने बताया कि वारदात के बाद मामला दर्ज कर इन आरोपियों को दिल्ली, बहादुरगढ़, गुरुग्राम, सोनीपत, पानीपत, रोहतक, झज्जर, हिसार और जींद में लगभग 1200 किलोमीटर तक पीछा कर गिरफ्तार किया गया है। इनकी निशानदेही पर 435.03 ग्राम सोना और 3.97 लाख रुपए बरामद किया गया। इनके पास से अपराध में इस्तेमाल किए गई तीन कारें जब्त की हैं। साथ ही पुलिस के फर्जी पहचान पत्र और अन्य सामान बरामद किया गया है। ऋषि कुमार ने बताया कि गत 27 नवंबर को प्रसाद नगर थाने में धोखाधड़ी की शिकायत दर्ज कराई।

किराना दुकान में लगी आग

दम घुटने से पति-पत्नी की गई जान

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 6 दिसंबर।

मुंडका थाना क्षेत्र के टिकरी कलां में एक किराना दुकान में आग लगने के बाद अंदर फंसे रहने से पति-पत्नी की दम घुटने से मौत हो गई। मृतकों की पहचान उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर निवासी 31 वर्षीय विनीत और उनकी 29 वर्षीय पत्नी रेणु के रूप में हुई है।

आग लगने की सूचना दिल्ली दमकल विभाग को रात करीब 8:58 बजे मिली थी। मौके पर पहुंचे दमकल कर्मियों ने लगभग डेढ़ घंटे की मशक्कत के बाद रात 10:15 बजे आग पर काबू पा लिया। पुलिस ने शनिवार को बताया कि शुरुआती जांच में आग लगने की वजह शार्ट-सर्किट प्रतीत होती है। आग लगते ही दुकान का शटर करंट की चपेट में आ गया, जिसके कारण पति-पत्नी समय पर दुकान से बाहर नहीं निकल सके। पुलिस ने दोनों शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और मामले की कानूनी कार्रवाई जारी है।

शटर में करंट आने से नहीं निकल सके बाहर, जांच के आधार पर पता चला कि शार्ट-सर्किट के कारण लगी थी आग।

बाहरी जिला पुलिस उपायुक्त सचिन शर्मा ने बताया कि शुक्रवार शाम एक स्थानीय व्यक्ति ने पुलिस नियंत्रण कक्ष को सूचना दी थी कि पड़ोस की दुकान से धुआं निकल रहा है। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची तो पाया कि दुकान का शटर आधा गिरा हुआ था और अंदर घना धुआं भरा था। प्रारंभिक जांच के अनुसार, दुकान के काउंटर के पास शार्ट-सर्किट के बाद आग भड़की और वहां रखे प्लास्टिक पैकेट तुरंत जलने लगे। धुआं तेजी से दुकान में भर गया। जैसे ही पति-पत्नी ने बाहर निकलने की कोशिश की, शटर में करंट आने की वजह से वे उसे पूरी तरह खोल नहीं पाए और अंदर फंस गए। दम घुटने के कारण उनकी मौत हो गई।उपायुक्त ने बताया कि पुलिस टीम ने लकड़ी के लट्ठे की मदद से शटर को तोड़कर दोनों को बाहर निकाला और तुरंत बहादुरगढ़ के आस्कर अस्पताल पहुंचाया, जहां डाक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस, अग्निशमन और फारेंसिक टीमों ने घटनास्थल का निरीक्षण किया और मामले की विस्तृत जांच जारी है।

पहली बार रिंग रोड की धुलाई करवा रही सरकार : रेखा गुप्ता

जनसत्ता संवाददाता
नई दिल्ली, 6 दिसंबर।

दिल्ली में धूल प्रदूषण को कम करने के लिए सरकार ने एक व्यापक सफाई और धुलाई अभियान शुरू किया है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने रिंग रोड पर चल रहे इस अभियान का नेतृत्व किया और स्वयं सड़क की सफाई एवं पानी छिड़काव के कार्य में भाग लिया।

मुख्यमंत्री ने बताया कि यह पहली बार है जब पूरे रिंग रोड पर धुलाई अभियान चलाया गया है। मुख्यमंत्री के अनुसार, शहर में धूल नियंत्रण के लिए लगभग 200 वाटर-स्प्रिंकलर वाहन प्रतिदिन तैनात हैं, जो पेड़ों की धूल साफ करने, सड़क किनारे की मिट्टी हटाने और सड़क के मध्य किनारों (सेंट्रल वर्ज) पर नियमित जल छिड़काव का कार्य कर रहे हैं।

रेखा गुप्ता ने कहा कि यह अभियान दिल्ली को प्रदूषण मुक्त बनाने और धूल नियंत्रण सुनिश्चित करने की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है। सरकार नियमित सड़क धुलाई, मैकेनिकल रोड स्वीपिंग और जमीनी निगरानी को तेज गति से आगे बढ़ा रही है। उन्होंने कहा कि धूल भी प्रदूषण का एक बड़ा कारक है और पूर्ववर्ती सरकारों की अनदेखी के कारण सड़क निर्माण और रख-रखाव ठीक से नहीं हुआ था, जिससे दिल्ली में वर्षभर धूल उड़ती रहती थी। मुख्यमंत्री ने यह भी बताया कि सरकार खुले में कोयला और लकड़ी जलाने पर रोक लगाने के लिए सक्रिय रूप से कार्य कर रही है।

व्यापक सफाई और धुलाई अभियान का हिस्सा बनीं मुख्यमंत्री।

'वंचितों के अधिकारों के लिए बाबा साहेब का संघर्ष आज भी प्रासंगिक'

नई दिल्ली, 6 दिसंबर (संवाददाता)।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर सिविल लाइंस स्थित महापरिनिर्वाण स्थल पहुंचकर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि यह हम सभी का सौभाग्य है कि बाबा साहेब ने इसी स्थान को अपने महापरिनिर्वाण के लिए चुना। यह स्थल उन 'पंचतीर्थों' में शामिल है, जिन्हें प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बाबा साहेब के सम्मान में राष्ट्र को समर्पित किया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बाबा साहेब का जीवन सामाजिक समरसता, समानता और न्याय की प्रेरणा देता है। संविधान निर्माण में उनका ऐतिहासिक योगदान और वंचितों के अधिकारों के लिए उनका संघर्ष आज भी उतना ही प्रासंगिक है। उन्होंने कहा कि महापरिनिर्वाण स्थल को 'पंचतीर्थ' के रूप में विकसित करने का उद्देश्य बाबा साहेब के जीवन से जुड़े महत्त्वपूर्ण स्थलों को राष्ट्रीय स्मारक के रूप में संरक्षित कर उन्हें सांस्कृतिक और वैचारिक धरोहर के रूप में स्थापित करना है। मुख्यमंत्री गुप्ता ने घोषणा की कि सरकार महापरिनिर्वाण स्थल को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने के लिए इसे एक प्रमुख अंतरराष्ट्रीय पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करेगी। साथ ही, स्कूल के बच्चों को इस स्थल का भ्रमण करवाने के लिए एक विशेष योजना भी तैयार की जा रही है, ताकि वे बाबा साहेब के जीवन, विचारों और योगदान से प्रेरित हो सकें।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता ने आंबेडकर के महापरिनिर्वाण दिवस पर श्रद्धांजलि दी।

दो स्थानों को बम से उड़ाने की धमकी अफवाह निकली

नई दिल्ली, 6 दिसंबर (संवाददाता)।

राजधानी में दो स्थानों-इंडियन वुमन प्रेस कोर (आइडब्लूपीसी) और शंकर मार्केट को बम से उड़ाने की धमकी मिलने के बाद शनिवार दोपहर व्यापक तलाशी अभियान चलाया गया। हालांकि, बाद में यह जानकारी अफवाह साबित हुई।

पुलिस के मुताबिक, आइडब्लूपीसी को एक ई-मेल के माध्यम से विंडसर प्लेस स्थित उसके परिसर में विस्फोटक होने की धमकी दी गई थी। यह सूचना शनिवार दोपहर करीब 1:30 बजे पुलिस को दी गई। उन्होंने बताया कि एक अन्य संदेश में कनाट प्लेस क्षेत्र के शंकर मार्केट को भी इसी तरह की धमकी दी गई। बम निरोधक दस्ता, खोजी कुत्तों का दस्ता और दमकल की गाड़ियों के साथ कई पुलिस टीम दोनों जगहों पर पहुंची और गहन जांच की। एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कहा कि दोनों जगह पर कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। गहन जांच के बाद दोनों धमकियों को अफवाह घोषित कर दिया गया। हालांकि, इस मामले में आगे की जांच की जा रही है कि ई-मेल किसने और कहां से भेजा था।

बस्तियों के विकास के लिए 65 करोड़ मंजूर : रविंद्र इंद्राज

नई दिल्ली, 6 दिसंबर (संवाददाता)।

मंत्री रविंद्र इंद्राज सिंह ने कहा कि विकसित भारत-विकसित दिल्ली का संकल्प पूरा करने के लिए बाबा साहेब के सपनों को धरातल पर उतारने का काम पहली बार व्यापक स्तर पर हो रहा है।

एससी बस्ती सुधार योजना के तहत 65.55 करोड़ रुपए के 114 विकास कार्य अब तक स्वीकृत किए जा चुके हैं। सरकार स्लम और जेजे कालोनियों के सुधार-पुनर्वास के लिए करीब 700 करोड़ रुपए खर्च कर रही है। मंत्री ने कहा कि बाबा साहेब का जीवन हमें समानता, स्वाभिमान, शिक्षा और सामाजिक न्याय के लिए निरंतर समर्पण की प्रेरणा देता है। दिल्ली सरकार उनके आदर्शों को प्रत्येक नागरिक तक पहुंचाने का कार्य पूरी प्रतिबद्धता से करेगी। रविंद्र इंद्राज ने बाबा साहेब के महापरिनिर्वाण दिवस पर बवाना के राजीव नगर, रोहिणी सेक्टर 20 में आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम में शिरकत की।

सीलमपुर से बच्चे का अपहरण व तस्करी करने वाले पांच गिरफ्तार

नई दिल्ली, 6 दिसंबर (संवाददाता)।

सीलमपुर मेट्रो स्टेशन से एक बच्चे का अपहरण और तस्करी करने के आरोप में सात महीने से फरार चल रही एक महिला समेत पांच लोगों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने शनिवार को बताया कि डेढ़ महीने के बच्चे का जून में अपहरण कर लिया गया था और उसे सकुशल बरामद कर उसकी मां से मिलवाया गया है।पुलिस ने बताया कि बच्चे को खरीदने वाले पति 40 वर्षीय धीर सिंह और उनकी पत्नी बनीता को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पति-पत्नी की चार बेटियां हैं और वे एक बेटा चाहते थे।

इस कारण बच्चे को खरीदा था। वहीं, मुख्य आरोपी 22 वर्षीय देवकी पिछले कई महीनों से लगातार अपने ठिकाने बदल रही थी और आखिरकार उत्तर प्रदेश के महोबा जिले में एक किराए के मकान से उसे पकड़ लिया गया। उसने चार जून को मेट्रो स्टेशन से नवजात का अपहरण किया था और बाद में उसे दिल्ली के आर्य नगर में डेढ़ लाख रुपए में बेच दिया था।

APPLICATION FOR ONE (01) SENIOR RESEARCH FELLOW (SRF) FOR AFMRC PROJECT AT ARMY DENTAL CENTRE (RESEARCH AND REFERRAL), DELHI

1. Applications are invited for the post of one (01) Senior Research Fellow (SRF) for the AFMRC Project at Army Dental Centre Research and Referral, Delhi.
2. Duration : 2.5 years (30 months)
3. Eligibility :

Essential qualifications:
(a) MSc. in Life Sciences / Biotechnology / Biochemistry / Stem Cell Biology or related Fields
(b) Minimum 1 year experience in cell culture / molecular biology laboratory from a reputed institute.

Desirable:
(a) PhD (b) Experience in bioinformatics

4. Age Limit : Less than 45
5. Mode of selection:
(a) The interested candidates can submit their applications with brief resume, colour photo, contacts, age proof, qualifications, experience, and list of publications, as a single PDF file not more than 3MB to the e-mail: registrar.adcrr@gov.in within 2 weeks from the date of this advertisement.
(b) The applications received will be scrutinized by the screening committee BOO.
(c) Shortlisted candidates shall be intimated through e-mail or tele for appearing offline interview at ADC (R&R) on the time and date mentioned.
(d) The final selection is based on written test (if required) and interview.
6. Remuneration : Rs 45,000.00/month (Consolidated)

GENERAL INFORMATION / INSTRUCTIONS
1. The post is purely temporary and co-terminus with the project.
2. Appointment is terminable with one month notice from either side without assigning any reason.
3. The selected candidates will have no claim for regular appointment under Ministry of Defence, Govt. of India.
4. No academic program shall be permissible along with the project.
5. Benefits of Provident Fund, HRA, CCA, accommodation, leave travel concession etc., and medical claims are not admissible.
6. Only casual leave (8 per year) shall be admissible.
7. No TA/DA will be paid for attending interview, joining or termination of the services.
8. Age is relaxable for meritorious and experienced candidates.

Terms and conditions:
1. Canvassing of any kind will lead to disqualification.
2. The prescribed qualification is minimum and mere possessing the same does not entitle any candidate for selection.
3. The appointment is full time (0830-1630) and private practice of any type is strictly prohibited.
4. He / She expected to conform to the rules of conduct and discipline as applicable to the institute employees.
5. The candidate should not have been convicted by any court of law.
6. In case any information given or declaration by the candidate is found to be false or if the candidate has wilfully suppressed any material information relevant to this appointment, he/she will be liable to be removed from the service and action taken as deemed fit by the appointing authority.
7. The decision of the competent authority regarding selection of candidates will be final and no representation will be entertained in this regard.
8. Applications incomplete in any aspect will be summarily rejected.
9. The competent authority reserves the right of any amendment, cancellation, and changes to this advertisement as as whole or in part without assigning any reason or giving notice.
10. All disputes will be subject to jurisdictions of court of law at Delhi.

List of enclosures to be submitted along with e mail application
1. Date of birth proof
2. Photo identity proof
3. Graduation / Post Graduation / PhD and relevant qualifications.
4. Certificate of experience
5. Research publications
6. Any other relevant documents

आंकड़े | पांच वर्षों में बिजली की मांग 1056 मेगावाट बढ़ी

सर्दी के आगाज के साथ बिजली की खपत में रेकार्ड बढ़ोतरी

निर्भय कुमार पांडेय
नई दिल्ली, 6 दिसंबर।

राजधानी दिल्ली में अब सर्दियां भी बिजली की रेकार्ड खपत की वजह बनती जा रही हैं। केवल गर्मियों में ही नहीं, बल्कि ठंड के मौसम में भी बिजली की मांग साल-दर-साल बढ़ रही है।

पिछले वर्ष 2024 की भीषण गर्मी में जहां 19 जून को 8656 मेगावाट की ऐतिहासिक अधिकतम मांग दर्ज की गई थी। वहीं सर्दियों में भी खपत लगातार ऊपर जाती हुई नजर आ रही है। आंकड़ों के मुताबिक, पिछले पांच वर्षों में सर्दी के मौसम में बिजली की मांग लगभग 1056 मेगावाट बढ़ी है। राजधानी में बिजली वितरण करने वाली कंपनियां बीएसईएस और टाटा पावर दिल्ली डिस्ट्रीब्यूशन लिमिटेड (टीपीडीडीएल) का कहना है कि इस बार सर्दियों के दौरान बिजली की खपत 6000 मेगावाट तक पहुंच सकती है। पिछले साल इसी मौसम में यह मांग 5655 मेगावाट दर्ज की गई थी। कंपनियों का दावा है कि चाहे मांग 6000 मेगावाट तक भी पहुंच जाए, उन्होंने निर्बाध बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने की पूरी तैयारी कर ली है। पिछले वर्षों के आंकड़ों पर नजर डालें तो 28 नवंबर 2020 को दिल्ली की बिजली खपत 3430 मेगावाट थी, जो इस वर्ष बढ़कर 4486 मेगावाट तक पहुंच गई। इसके अलावा, 28 नवंबर 2021 को 3494 मेगावाट, 2022 में 3692 मेगावाट, 2023 में 3825 मेगावाट और 2024 में 3856 मेगावाट खपत दर्ज की गई थी। ये आंकड़े साफ दिखाते हैं कि सर्दियों में बिजली की मांग हर वर्ष स्थिर रूप से बढ़ रही है।

दूसरी ओर, 20 से 27 नवंबर के बीच भी खपत में खासा उतार-चढ़ाव देखने को मिला। इस अवधि में बिजली की मांग 4027 मेगावाट से लेकर 4352 मेगावाट के बीच दर्ज की गई। जानकारों का कहना है कि ठंड बढ़ने के साथ ही शहर के लोग हीटर, गीजर और कई घरों में गर्म एवं ठंडे दोनों मौसम में काम करने वाले एसी का इस्तेमाल शुरू कर देते हैं, जिससे बिजली की मांग तेजी से ऊपर जाती है।

टीपीडीडीएल के अनुसार, उत्तरी और बाहरी दिल्ली में इस सर्दी बिजली की अधिकतम मांग 1859 मेगावाट तक पहुंच सकती है। वहीं बीएसईएस द्वारा संचालित दो कंपनियां दिल्ली के अन्य हिस्सों में बिजली की आपूर्ति करती हैं, जहां पर मांग 3920 मेगावाट तक जाने की संभावना है।

बहस पर शिकंजा

दूसरी नजर

पी चिदंबरम

आंकड़े खुद ही सब कुछ बयां कर देते हैं। अपने पहले कार्यकाल में मोदी सरकार ने कार्य स्थगन प्रस्ताव का विरोध किया था, क्योंकि उसे ऐसे प्रस्ताव को लेकर अनुचित धारणा का डर था। तब सरकार अल्पकालिक चर्चाओं या ध्यानाकर्षण प्रस्तावों के प्रति कुछ उदार थी, लेकिन दूसरे कार्यकाल में इन पर सरकार की असहिष्णुता साफ दिखाई दी; दरवाजे बंद थे, लेकिन खिड़कियां खुली थीं।

यह तंज किसी से छिपा नहीं था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 1 दिसंबर, 2025 को अपने 'परंपरागत' सत्र-पूर्व भाषण में संसद सदस्यों- विशेषकर 'एक या दो दलों' से यह याद रखने का आग्रह किया कि संसद एक ऐसी जगह है, जहां 'कार्य होना चाहिए, नाटक नहीं'।

उकसाने वाली टिप्पणियां

संसद के शीतकालीन सत्र की शुरुआत अशुभ रही। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुछ शब्द यहां उद्धृत करने लायक हैं:

'दुर्भाग्य से एक-दो पार्टियां ऐसी हैं, जो अपनी हार को भी पचा नहीं पाती हैं। मुझे लगा था कि बिहार के नतीजों को काफी समय बीत चुका है और वे संभल गए होंगे, लेकिन कल उनके बयान सुनकर ऐसा लग रहा है कि उनकी हार उन्हें अभी भी परेशान कर रही है। ...

'...देश में नारे लगाने के लिए बहुत जगह है। आप वहां नारे लगा चुके हैं, जहां आप हारे थे। आप वहां भी नारे लगा सकते हैं, जहां अगली बार हारने वाले हैं। लेकिन यहां हमें नारों पर नहीं, नीतियों पर जोर देना चाहिए।'

उन्होंने राज्य-विशेष के दलों पर भी तंज कसा- *'कुछ राज्यों में सत्ता-विरोधी भावना इतनी ज्यादा है कि वहां सत्ता में रहने के बाद भी नेता जनता के बीच नहीं जा पाते... वे संसद में आकर अपना सारा गुस्सा यहीं निकाल देते हैं।'*

यह एक तरह का दोहरा चरित्र था। संसद के हर सत्र की शुरुआत में सरकार दुनिया के सामने यह घोषणा करती है कि उसके पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है और न ही डरने की कोई बात है, और संसद में *किसी भी* विषय पर चर्चा हो सकती है। मगर इसमें एक पेच हैः वह पेच है 'नियमों के अधीन'। नियम, प्रक्रिया के नियमों की *किताब* में हैं, लेकिन उनकी व्याख्या और अनुप्रयोग पीठासीन अधिकारी (अध्यक्ष या सभापति) के हाथ में है, जो अक्सर सदन में सत्तापक्ष के नेताओं के परामर्श से होता है। जब विपक्ष कार्य मंत्रणा समिति में अपना एजंडा रखता है, तो सरकार हमेशा *हर* विषय का विरोध करती है। इससे कटुता पैदा होती है, और जैसा कि प्रधानमंत्री ने कहा, 'नाटक' होता है।

किसका एजंडा?

विधेयक और बजट सरकार का एजंडा हैं। प्रश्नकाल में चर्चा की अनुमति नहीं होती। विपक्ष की पहल पर एक वास्तविक एवं स्वतंत्र चर्चा केवल कार्य स्थगन प्रस्ताव या कुछ हद तक अल्पकालिक चर्चा या फिर ध्यानाकर्षण प्रस्ताव के माध्यम से ही हो सकती है। ये संसदीय प्रक्रियाएं समय-समय पर अपनाई जाती हैं और इनके अपने नियम हैं।

कार्य स्थगन प्रस्ताव को किसी कारणवश सरकार की निंदा माना जाता है।

जबकि, नियम पूरी तरह स्पष्ट हैः लोकसभा में नियम-57 कहता हैः *कार्य स्थगन प्रस्ताव का नोटिस केंद्र सरकार की जिम्मेदारी से जुड़े किसी हाल ही में घटित विशिष्ट मामले पर दिया जाएगा।* राज्यसभा में नियम-267 *अति महत्त्वपूर्ण* विषय पर सदन का कार्य स्थगित कर चर्चा की अनुमति देता है।

अल्पकालिक चर्चा के लिए नियम-193 (लोकसभा) और नियम-176 (राज्यसभा) हैं, जिनके तहत तत्काल लोक महत्त्व के किसी मामले पर चर्चा की जाती है।

ध्यानाकर्षण प्रस्ताव सबसे सरल प्रक्रिया है। नियम-197 (लोकसभा) और नियम-180 (राज्यसभा) के तहत सदस्य किसी भी तत्काल लोक महत्त्व के मामले पर संबंधित मंत्री का ध्यान आकर्षित कर सकते हैं और मंत्री की ओर से इस पर बयान देना अनिवार्य है।

तालिका में दिए गए आंकड़े निर्णायक रूप से साबित करते हैं कि कैसे विपक्ष के लिए धीरे-धीरे हर दरवाजा और खिड़की बंद कर दी गई है। हाल के वर्षों में स्थिति और भी बदतर हो गई है, क्योंकि मोदी सरकार लगातार अड़ियल रुख अपनाती जा रही हैः ***(देखें तालिका)***

वर्ष	कार्य स्थगन प्रस्ताव		अल्पकालिक चर्चा		ध्यानाकर्षण प्रस्ताव	
	लोस	रास	लोस	रास	लोस	रास
2014	..	..	9	6	9	4
2015	1	..	8	4	3	5
2016	..	..	9	9	4	10
2017	..	..	4	7	1	3
2018	..	..	1	2	..	2
2019	..	..	4	4	..	6
2020	..	..	2	1	..	..
2021	..	..	3	3	1	..
2022	..	..	5	2	..	..
2023	..	..	..	2	..	..
2024	..	..	2	3	..	1
2025 (नवंबर तक)	..	..	..	..	1	..

स्रोतः पीआरआइएसएम

दरवाजे खिड़कियां बंद

आंकड़े खुद ही सब कुछ बयां कर देते हैं। अपने पहले कार्यकाल में मोदी सरकार ने कार्य स्थगन प्रस्ताव का विरोध किया था, क्योंकि उसे ऐसे प्रस्ताव को लेकर अनुचित धारणा का डर था। तब सरकार अल्पकालिक चर्चाओं या ध्यानाकर्षण प्रस्तावों के प्रति कुछ उदार थी, लेकिन दूसरे कार्यकाल में इन पर सरकार की असहिष्णुता साफ दिखाई दी; दरवाजे बंद थे, लेकिन खिड़कियां खुली थीं। तीसरे कार्यकाल में भाजपा साधारण बहुमत से भी कम समर्थन हासिल कर सत्ता में लौटी और सरकार ने खिड़कियां भी बंद कर दीं। क्या हमें यह मान लेना चाहिए कि कोई ऐसा तात्कालिक सार्वजनिक महत्त्व का मामला नहीं था, जिस पर चर्चा की जानी चाहिए?

दुर्भाग्य से लोकसभा की तुलना में राज्यसभा में बहस को ज्यादा रोका गया। कई सदस्यों ने इसके लिए तत्कालीन पीठासीन अधिकारी को जिम्मेदार ठहराया। सितंबर में राज्यसभा में नए सभापति ने कार्यभार संभाला। मुझे लगता है कि सभापति अभी सीख रहे हैं; इसके अलावा इस बार का शीतकालीन सत्र कोई राय बनाने के लिए बहुत छोटा है।

सीधे शब्दों में कहें तो, सरकार इस बात को नहीं मानती कि एक जीवंत और बहस-समृद्ध संसद लोकतंत्र को मजबूत करेगी। मोदी के नेतृत्व वाली सरकार संवाद, चर्चा और बहस के सख्त खिलाफ है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सत्र-पूर्व बयानों की विडंबना को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

बिगड़ती छवि

वक्त की नब्ज

तवलीन सिंह

चुनावों के नतीजे बताते हैं कि मोदी की लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई है, तो प्रधानमंत्री अपने आपको इतना असुरक्षित क्यों महसूस करते हैं? क्यों नहीं उनमें कम से कम इतना आत्मविश्वास है जिसके बिना इतने बड़े देश को ढंग से चलाना मुश्किल है? थोड़ा-सा आत्मविश्वास दिखाते, तो संभव है कि विश्व के बड़े राजनेताओं में उनकी भी गिनती होती।

अच्छी बात है कि भारत सरकार ने आम लोगों का विरोध देख कर संचार साथी योजना रद्द कर दी है। फिलहाल। सवाल लेकिन अभी भी यह है कि इस जासूसी योजना के पीछे कौन लोग थे और उनकी मंशा क्या थी! साइबर सुरक्षा के बहाने किस आला मंत्री या अधिकारी ने सोचा कि साइबर डकैतों को रोकने के लिए एक ऐसा ऐप बनाया जाए जो भारत में बनने वाले हर सेलफोन में डालना अनिवार्य किया जाए? इन सवालों के जवाब ढूंढ़ना इसलिए जरूरी है कि वैसे भी सरकारी नजर हमारे निजी जीवन पर कुछ ज्यादा होती है आजकल।

आम लोग बेशक इस सरकारी दखलंदाजी से बच सकते हैं, लेकिन अगर हर फोन में एक जासूस बैठाने की कोशिश सफल हो जाती, तो भारतीय लोकतंत्र दुनिया की दृष्टि में कमजोर दिखने लगेगा। इस किस्म की जासूसी होती है अक्सर रूस, चीन और पाकिस्तान जैसे देशों में जहां लोकतंत्र नहीं, लोकतंत्र का ढोंग रचा जाता है झूठे चुनाव कराके। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन अभी दिल्ली में थे, इसलिए बात उन्हीं से शुरू करते हैं। पुतिन का आधे से ज्यादा जीवन बीता था रूस की शक्तिशाली केजीबी में काम करते। यह ऐसी जासूसी संस्था है, जिसने शीत युद्ध के समय से जासूसी द्वारा अपनी विदेश नीति बनाई थी। जासूसी पर इतना भरोसा था रूस के कम्युनिस्ट शासकों को कि अपने जासूसों को पश्चिमी देशों में रहने के लिए भेजा करते थे, जहां उनको अपनी रूसी पहचान मिटा कर बिल्कुल स्थानीय नागरिक की तरह बनने के लिए कहा जाता था। बरसों तक ये पकड़े नहीं जाते थे।

इन चीजों के बारे में तब पता लगने लगा पश्चिमी देशों को जब, केजीबी के बड़े अफसर रूस से तंग आकर किसी दूसरे देश में भाग जाते थे। ऐसा ही एक आला अफसर था वसीली मित्रोखीन, जिसने रूस से भाग जाने के बाद केजीबी के सारे राज 'मित्रोखीन आर्काइव' नाम की किताबों में बता दिए थे। इन किताबों के जरिए मालूम हुआ कि इंदिरा गांधी के कई मंत्री केजीबी से जासूसी के लिए वेतन लेते थे। यह भी मालूम हुआ कि कुछ वामपंथी पत्रकार भी रूस का साथ विचारधारा के आधार पर नहीं, पैसों के लिए दे रहे थे। इन चीजों से 'संचार साथी' का क्या वास्ता है? गहरा वास्ता है, क्योंकि यह ऐप अगर डाले जाते हैं हमारे सेलफोन में, तो यकीन मानिए कि इनका असली काम साइबर सुरक्षा नहीं, जासूसी होगा। बिल्कुल वैसे, जैसे कुछ साल पहले सरकार ने 'पेगासस' नाम का ऐप इजराइल से खरीद कर पत्रकारों, राजनेताओं, वामपंथियों और विरोधियों के मोबाइल फोन में डालने की कोशिश की थी।

असल में बात साइबर सुरक्षा की है ही नहीं। राजनेता जितने बड़े हो जाते हैं, उतना ही वे अपने आपको असुरक्षित महसूस करने लगते हैं। इस दौर में हाल यह है कि प्रधानमंत्री खुद अपने आपको असुरक्षित महसूस करते हैं इतना कि पिछले ग्यारह साल में उन्होंने एक भी प्रेस वार्ता को संबोधित नहीं किया है। सच यह भी है कि जब भी कोई पत्रकार उनकी आलोचना करता है अपने किसी अनजान 'पाडकास्ट' पर, तो उसके खिलाफ सरकार कार्रवाई किए बगैर नहीं रहती है। कुछ लोगों पर इतनी सख्त कार्रवाई होती है कि उनके 'पाडकास्ट' ही बंद हो जाते हैं।

इस तरह की जासूसी में नई कड़ी बनने वाला था 'संचार साथी'। जब इसका विरोध होने लगा, तो सरकार ने पहले तो सफाई देने की कोशिश की यह कह कर कि इसको अपने फोन में डालना अनिवार्य नहीं होगा और इसको कभी भी हटाया जा सकता है, लेकिन बात नहीं बनी। इसलिए कि सोशल मीडिया पर खूब हल्ला मचाया पत्रकारों और नेताओं ने। अभी के लिए इस योजना को सरकार ने वापस ले लिया है, लेकिन एक बार फिर नुकसान हुआ है नरेंद्र मोदी की निजी छवि का। न्यूयार्क में मुझे पिछले दस दिनों में ऐसे लोग मिले जिन्होंने स्पष्ट कहा कि उनकी नजरों में नरेंद्र मोदी एक लोकतांत्रिक राजनेता नहीं, तानाशाही फितरत के राजनेता हैं। ऐसा नहीं है कि यही बात डोनाल्ड ट्रंप के बारे में भी नहीं कही जाती है, लेकिन इसलिए कि ट्रंप रोज मिलते हैं पत्रकारों से और बेबाक तरीके से अपनी बातें रखते हैं, उनकी छवि अपने प्रधानमंत्री से थोड़ी बेहतर है।

चुनावों के नतीजे बताते हैं कि मोदी की लोकप्रियता में कोई कमी नहीं आई है, तो प्रधानमंत्री अपने आपको इतना असुरक्षित क्यों महसूस करते हैं? क्यों नहीं उनमें कम से कम इतना आत्मविश्वास है जिसके बिना इतने बड़े देश को ढंग से चलाना मुश्किल है? थोड़ा-सा आत्मविश्वास दिखाते, तो संभव है कि विश्व के बड़े राजनेताओं में उनकी भी गिनती होती। न्यूयार्क में मुझे कई लोग मिले, जिन्होंने स्वीकार किया कि मोदी के आने के बाद भारत में विकास की रफ्तार बहुत बढ़ी है। उनका कहना था कि जब वे आजकल भारत आते हैं, तो उनको आश्चर्य होता है नई सड़कें और नए हवाई अड्डे देख कर। ऐसा कहने के बाद लेकिन यह भी हमेशा कहते हैं कि मोदी को वे पसंद नहीं करते हैं, क्योंकि वे लोकतांत्रिक नहीं हैं।

संचार साथी वाली योजना का जिक्र अंतरराष्ट्रीय मीडिया में भी हुआ है और अक्सर इसके बारे में लोग कहते हैं कि ऐसी चीजें लोकतांत्रिक देशों में जब होने लगती हैं, तो सबूत मिलता है कि लोकतंत्र कमजोर किया जा रहा है। आमराय यही बन रही है दुनिया में कि भारत में लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर किया जा रहा है इतना कि देश की छवि अब उदारवादी लोकतांत्रिक देश की न रह कर थोड़ा बहुत ऐसी हो रही है जैसे रूस और पाकिस्तान की है। यानी इन देशों में चुनाव होते तो हैं, लेकिन लोकतंत्र पर बेड़ियां डाल कर, ताकि जब कोई इमरान खान जैसा कठिन राजनेता जीत जाता है, उसको जेल में डाल कर चलती है देश की गाड़ी।

चेतना की स्वाधीनता

विचार

राजेंद्र मोहन शर्मा

अगर हमारा 'निर्णय' केवल कर्मफल की एक अटूट शृंखला का हिस्सा है, जहां आज का विचार कल के अनुभव का फल है, और कल का अनुभव परसों के विचार को जन्म देगा, तो 'स्वाधीनता' कहां टिकती है? हम स्वयं को उस रथ के सारथी समझते हैं, जिसका नियंत्रण दरअसल रथ के अश्वों (इंद्रियों) और रास्ते (नियति) के हाथों में है। हमारी 'इच्छाशक्ति' उस मोहग्रस्त यात्री की तरह है, जो यह मान बैठा है कि वह पहियों को घुमा रहा है, जबकि रथ स्वत: ही अपने पूर्व-निर्धारित गंतव्य की ओर खिंचा जा रहा है।

हम मनुष्य, इस विशाल ब्रह्मांड रूपी रंगमंच पर स्वयं को कर्ता, 'निर्णायक' की उपाधि से विभूषित करते हैं। हमारी चेतना का दीपक जलता है और हम सोचते हैं कि यह प्रकाश हमारी अपनी इच्छाशक्ति का है, जिससे हम जीवन के मार्ग की हर पगडंडी को अपनी मर्जी से चुनते हैं, ठीक वैसे ही जैसे नर्तक अपनी हर मुद्रा का चयन करता है। पर क्या यह अहंकार नहीं? क्या यह 'मैं करता हूं' का भाव मात्र एक मोहक आवरण नहीं है, जिसके पीछे 'हो रहा है' का सनातन सत्य छिपा है? अगर हम आंखें मूंदकर विचार करें तो पाएंगे कि हमारा हर चुनाव, एक जटिल समीकरण का अपरिहार्य हल है, न कि कोई स्वतंत्र आविष्कार। जब हम कोई संकल्प लेते हैं, तो वह संकल्प कहां से फूटता है? क्या वह अनायास हमारी आत्मा से प्रस्फुटित होता है, या वह पूर्वजन्मों के संस्कारों का, बाल्यकाल की स्मृतियों का, और इस क्षण मस्तिष्क में चल रहे त्रिगुणात्मक स्पंदनों (सत्त्व, रजस, तमस) का अनिवार्य परिणाम है?

यह हमारी जन्मकुंडली की तरह है। एक ऐसा सूत्रपात, जो उसी क्षण हो गया था, जब प्रकृति और पुरुष का संयोग हुआ। हमारे विचार उसी धारा के बुलबुले हैं, जिसे वंशानुक्रम, शिक्षा और परिवेश की शक्तियां अपनी दिशा देती हैं। हम जिस 'स्वतंत्रता' का दावा करते हैं, वह उस नदी की धारा जैसी हो सकती है, जो पहाड़ की ढलानों, चट्टानों के विन्यास और वर्षा की मात्रा से पहले ही निश्चित हो चुकी है। वह नदी बहने के लिए स्वतंत्र है, पर क्या वह अपनी दिशा चुनने के लिए स्वतंत्र है? उसका वेग और उसका मार्ग पहले से ही काल के मानचित्र पर अंकित है। यह ज्ञान, हमारे 'स्व' के सिंहासन को हिला देता है और हमें आत्म-नियंत्रण के एक गहरे विरोधाभास में उलझा देता है।

अगर हमारा 'निर्णय' केवल कर्मफल की एक अटूट शृंखला का हिस्सा है, जहां आज का विचार कल के अनुभव का फल है, और कल का अनुभव परसों के विचार को जन्म देगा, तो 'स्वाधीनता' कहां टिकती है? एक बात तो यह भी है कि स्वाधीनता की खोज हमने अपने भीतर कितनी की है, उसे पहचाना कितना है और उसे बरता कितना है। हम स्वयं को उस रथ के सारथी समझते हैं, जिसका नियंत्रण दरअसल रथ के अश्वों (इंद्रियों) और रास्ते (नियति) के हाथों में है। हमारी 'इच्छाशक्ति' उस मोहग्रस्त यात्री की तरह है, जो यह मान बैठा है कि वह पहियों को घुमा रहा है, जबकि रथ स्वतः ही अपने पूर्व-निर्धारित गंतव्य की ओर खिंचा जा रहा है।

हमारी नैतिक जिम्मेदारी का भव्य भवन इसी भ्रम पर खड़ा है। अगर किसी प्राणी ने घोर पाप किया, तो हमारी न्याय की तुला यह मानती है कि उसके पास धर्म का मार्ग चुनने का विकल्प था, लेकिन अगर उसके चित्त की गति, उसके पूर्व कर्मों की वासनाओं और उसके वर्तमान भौतिक तत्त्वों के मिश्रण से अपरिहार्य थी, तो हम उसे अपराधी कहकर कैसे दंडित करें? क्या वह केवल उस ब्रह्मांडीय नाटक का एक पात्र नहीं था, जिसने अपने विवश स्वभाव के कारण एक निश्चित भूमिका निभाई?

यह चिंतन हमें दंड और पुरस्कार की सारी अवधारणाओं पर पुनः विचार करने पर बाध्य करता है। अगर नियतिवाद ही अंतिम सत्य है, तो हमारी क्षमता क्या है? क्या संसार के सारे प्रयास, तपस्या और साधनाएं निरर्थक हैं, क्योंकि परिणाम तो पहले से ही तय है? इस निराशा में भी, दर्शन का एक गुप्त मार्ग खुलता है। यह मार्ग हमें नियति के सम्मुख पूर्ण आत्मसमर्पण की ओर ले जाता है, जहां 'मैं' के बोझ से मुक्ति मिलती है और ईश्वर की लीला या कर्म के विधान की सर्वोपरिता स्वीकार होती है। मगर चेतना का एक कोना अब भी विद्रोह करता है।

जब हम गहरे ध्यान में उतरते हैं, तो हमें लगता है कि हमारे भीतर एक अव्यक्त साक्षी है, जो प्रकृति के खेल को तटस्थ भाव से देख रहा है। यही वह शुद्ध बोध है, जो हमें माया के जंजाल से बाहर खींचने की क्षमता रखता है। संभव है कि हमारी भौतिक क्रियाएं (कर्म) और विचार (मन) नियति के अधीन हों, पर उस क्षण जब हम जानते हैं कि हम नियति के अधीन हैं, वही बोध ही हमारी एकमात्र और सच्ची स्वतंत्रता है। यह बोध, कर्म की बेड़ियों को नहीं तोड़ता, बल्कि उन बेड़ियों के अस्तित्व को जानने की स्वतंत्रता देता है।

इसलिए शायद कर्म (क्रिया) और विकल्प (चयन) का विरोधाभास नहीं है, बल्कि यह द्वैत है। हमारा शरीर और मन प्रकृति के नियमों से बंधा है, पर हमारी आत्मा (चेतना) उन बंधनों को जानने और स्वीकारने के लिए स्वतंत्र है। यह 'ज्ञान' ही वह दुर्लभ प्रकाश है, जो हमें 'मैं करता हूं' के अहंकार से मुक्त करता है और 'सब होता है' के अनासक्त भाव की ओर ले जाता है। 'मैं' और 'सब' को पहचानने की शक्ति हमें अनासक्ति तक पहुंचाती है और उसके बाद फिर अनासक्ति ही हमें नियति के लिखे को जीते हुए भी उससे ऊपर उठने की शक्ति देती है। यह आखिर यही प्रश्न छोड़ जाता है कि क्या हम वह पात्र हैं, जो विवशता में अभिनय कर रहा है, या वह साक्षी, जो उस अभिनय को केवल देख रहा है और क्या यह देखना ही वास्तविक स्वाधीनता है, जिससे हमारे चित्त की विवशता समाप्त होती है और चेतना परम स्वाधीनता को प्राप्त करती है।

कटाक्ष और निशाने

बाखबर

सुधीश पचौरी

एक दिन जनहित में आनलाइन फर्जीवाड़ा रोकने के लिए सरकार ने 'संचार साथी' लाने का एलान कर दिया। 'निजता के हनन' को लेकर विपक्ष की आपत्ति पर मंत्री ने साफ किया कि आप चाहें, तो 'संचार साथी' ऐप को 'डिलीट' कर सकते है।

बिहार की हार के बाद 'इंडिया' समूह के दलों के बीच आरोप-प्रत्यारोप और दूसरी ओर 'हारे को हरिनाम' होने लगा कि हम इस तरह क्यों हारे! एक कहिन कि 'जंगलराज' ने हराया, दूसरे कहिन कि सहयोगियों ने ही हराया। फिर एक हलके में 'दिल को समझाने को गालिब ये खयाल अच्छा' आया कि हम कहां हारे... हमें हराया गया... 'वोट चोरी' ने हराया..! फिर कर्नाटक में अचानक 'मुख्यमंत्री बरक्स उपमुख्यमंत्री' होने लगा। दिल्ली दरबार ने कहा कि हमारे सिर न पड़ो... अपनी समस्या अपने आप हल करो। फिर कहा कि आपस में बैठकर 'नाश्ता-वास्ता' करो... रास्ता निकालो। इसके बाद 'आज्ञाकारी' की तरह एक सुबह एक ने दूसरे को इडली-डोसा, सांबर-उपमा का नाश्ता कराया, तो जवाब में दूसरे ने पहले को बुलाकर इडली-डोसा, सांबर-उपमा खिलाया। एक चाहे कि अभी हो और आधी इडली आधा डोसा हो, क्योंकि कल का क्या भरोसा, तो दूसरा चाहे कि काहे का आधा और काहे का 'उप'! फिर एक दिन कई चैनलों में राष्ट्रगीत 'वंदेमातरम्' की 150 वीं वर्षगाठ मनाने और संसद में अन्य बहुत से शब्दों के साथ 'वंदेमातरम्' का नाम 'न लेने और लेने' के भ्रम पर चर्चा करने की खबर आई, लेकिन अफसोस कि इस 'वंदेमातरम्' की प्रतिक्रिया में मानो एक अल्पसंख्यक समुदाय के बड़े नेता ने 'जिहाद' की चर्चा चलाकर एक नया ही मोर्चा खोल दिया। उन्होंने फरमाया कि 'जब-जब जुल्म होगा, तब-तब जिहाद होगा... इस्लाम में जुल्म का खात्मा जिहाद का हक है...

दस फीसद लोग मुसलमानों के साथ हैं, तीस फीसद खिलाफ हैं। साठ फीसद वे हैं, जिनको मुसलमान समझाएं... नहीं तो बड़ी मुश्किल पैदा होगी! एक मुसलमान ने अलबत्ता इसका विरोध किया, लेकिन तभी बंगाल के एक सत्तापक्षी विधायक ने एलान कर दिया कि वे बंगाल में 'बाबरी मस्जिद बनाएंगे... सौ मुसलमान मरें तो पांच सौ को लेकर मरें..! इसे सुनते ही एक एंकर कह उठा कि इसे गिरफ्तार क्यों नहीं किया जाता? फिर एक निरा बेशर्म-सा दृश्य भी दिखा। केरल के विपक्ष के एक विधायक पर गंभीर 'यौन अपराध' के आरोप लगे। उनको गिरफ्तार करने की मांगें भी रहीं, लेकिन वे अब तक गायब दिखे और वे जिस वीडियो में दिखे, उसमें हंसते हुए ही दिखे। यानी 'या बेशर्मी तेरा ही आसरा..!'

फिर आया शीतकालीन सत्र के शुरू होने से पहले प्रधानमंत्री का एक संबोधन कि हमारे सदन को चुनावी गर्माहट के लिए या बौखलाहट के लिए उपयोग किया जा रहा है... ये 'सत्ता विरोधी लहर' के लिए मैदान में जो नहीं कह पाते, वो सारी बातें सदन में निकालते हैं। ये सोचें और नीति बदलें तो मैं 'नुस्खे' देने को तैयार हूं। देश, विपक्ष के खेल को स्वीकार नहीं कर रहा। संसद में 'ड्रामा' नहीं 'डिलीवरी' होनी चाहिए... जहां से पराजित होकर आए, वहां बोल चुके... जहां से पराजित होकर आने वाले हैं, वहां बोल दीजिएगा..!

प्रधानमंत्री के ऐसे कटाक्षों के जवाब में एक दृश्य में एक विपक्षी नेता की गाड़ी में कुत्ता अपनी चुप्पी के साथ दिखा, जिसकी व्याख्या विपक्षी नेता ने ही की कि ये काटता नहीं... जो काटते हैं, अंदर बैठे हैं..। सत्ता-प्रवक्ता 'जो काटते हैं, अंदर हैं...' को लेकर किंचित बिफरते भी दिखे, लेकिन विपक्ष का यह कटाक्ष एकदम निशाने पर चोट की तरह ही महसूस हुआ। फिर विपक्ष का एक 'चाईवाला चाईवाला' के साथ तंज करने वाला वीडियो भी घिसा-पिटा लगा।

यह शीतकालीन सत्र भी पिछले सत्र की तरह मतदाता सूची के गहन पुनरीक्षण के खिलाफ विपक्ष के प्रदर्शनों से सुशोभित दिखा। कई 'बीएलओ'(बूथ स्तरीय अधिकारी) की मौतों को देख विपक्ष की मांग रही कि 'बीएलओ' दबाव से परेशान हैं, इसलिए 'एसआइआर की जल्दबाजी' पर संसद में तुरंत चर्चा हो, जिसे अंततः सत्ता पक्ष द्वारा मान लिया गया।

इसी बीच सत्ता की एक और पलटी दिखीः एक दिन जनहित में आनलाइन फर्जीवाड़ा रोकने के लिए सरकार ने 'संचार साथी' लाने का एलान कर दिया। 'निजता के हनन' को लेकर विपक्ष की आपत्ति पर मंत्री ने साफ किया कि आप चाहें, तो 'संचार साथी' ऐप को 'डिलीट' कर सकते हैं, लेकिन जब विपक्ष अड़ा रहा कि 'निजता का हनन' क्यों, तब सरकार ने 'संचार साथी' ऐप की 'अग्रिम अनिवार्यता' को हटाने की बात कह कर 'बीच का रास्ता' निकाला। लेकिन सत्ता का 'विउपनिवेशीकरण अभियान' जारी रहा। प्रधानमंत्री आवास परिसर को 'सेवा तीर्थ', 'केंद्रीय सचिवालय' को 'कर्तव्य भवन' और राजभवन को 'लोक भवन' घोषित किया गया। अंत में एक बार फिर 'जिहाद' के व्याख्याकार ने फरमाया कि 'जिहाद' एक पवित्र शब्द है, 'जिहाद' के बारे में स्कूलों में पढ़ाया जाना चाहिए। मगर पुतिन के भारत दौरे ने और प्रधानमंत्री के साथ उनके तालमेल ने वैश्विक राजनीति में सबसे बड़ी खबर बनाई। उधर पुतिन ने एक हिंदी चैनल को लंबा साक्षात्कार देकर हिंदी वालों का दिल जीत लिया।

rasrang@dbcorp.in

दैनिक भास्कर रविवार, 07 दिसंबर 2025

रसरंग

अगर हम अपने ग्राहकों की प्राइवेसी में विश्वास नहीं रखते तो हमें उनका भरोसा पाने का हक नहीं है।
- टिम कुक, सीईओ, एपल

दैनिक भास्कर | अब आप रसरंग के सभी आर्टिकल DB एप पर हर रविवार पढ़ सकते हैं। डाउनलोड करें DB एप

'संचार साथी' ऐप पर उठे विवाद ने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या हमारा स्मार्टफोन ही हम पर निगरानी का साधन बन चुका है? ऐसे दौर में डिजिटल ट्रैकिंग के इस बढ़ते खतरे को समझना जरूरी है।

क्या हम पर नजर रख रहा है कोई ऐप?

कवर स्टोरी

तुषार मेहता
टेक एक्सपर्ट और athenil के को-फाउंडर

भारत सरकार ने हाल ही में फोन निर्माताओं के लिए हर नए फोन में 'संचार साथी' ऐप प्री-इंस्टॉल करना अनिवार्य बना दिया था। विरोध के बाद अंततः दूरसंचार विभाग को यह नियम वापस लेना पड़ा। लेकिन इसका फायदा यह हुआ कि आम लोगों में इसको लेकर जागरूकता पैदा हो गई है कि हमारे फोन में मौजूद कौन-सी ऐप्स हमें ट्रैक कर सकती हैं और इससे बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए। हममें से कई लोगों ने महसूस किया होगा कि अगर हम किसी प्रोडक्ट के बारे में बात भी करने लगे तो गूगल, इंस्टाग्राम या फेसबुक पर उससे जुड़े विज्ञापन दिखने लगते हैं। तो आज हम बता रहे हैं कि क्या ऐसा वास्तव में संभव है? ऐप्स ऐसा कैसे करते हैं और अपनी डेटा सुरक्षा के लिए हम क्या कर सकते हैं।

जितनी अधिक परमिशन उतना अधिक जोखिम?

किसी भी ऐप में जासूसी की संभावनाओं को पहचानने के शुरुआती तरीकों में से एक है उसके पास मौजूद परमिशनों की संख्या। अधिकांश एंड्रॉइड ऐप्स जरूरत से ज्यादा परमिशन मांगते हैं, जैसे आपकी लोकेशन देखना, आपके फोन का मेक एवं मॉडल पहचानना, नेटवर्क स्टेटस देखना और यहां तक कि आपके कैलेंडर और क्लॉक तक पहुंच होना। साइबरन्यूज की 2024 की एक स्टडी के अनुसार माय जियो में 29, वाट्सऐप में 26, ट्रूकॉलर में 24 और फेसबुक में 22 तक परमिशन मांगी गईं, जबकि एक्स 13 और यूट्यूब 12 केवल परमिशन मांगते हैं। हालांकि केवल इन परमिशनों के आधार पर ही कोई यह नहीं कह सकता कि अमुक ऐप आपका डेटा चुरा सकता है या आपकी जासूसी कर सकता है, लेकिन ये परमिशन डेवलपर्स को ऐसा करने की क्षमता अवश्य दे देती हैं। दुर्भाग्य से, आम यूजर्स यह नहीं समझ पाते कि कोई ऐप उनके फोन की परमिशनों का दुरुपयोग कर रहा है या नहीं। फिर भी कुछ संकेत ऐसे हैं, जिनसे हम समझ सकते हैं कि क्या हमारा फोन हम पर ही तो नजर नहीं रख रहा।

इन संकेतों को देखकर हो जाएं सतर्क

अगर आपको लगता है कि आपके स्मार्टफोन के जरिए कोई आप पर नजर रख रहा है, तो इन संकेतों पर ध्यान दीजिए। इससे आप वक्त पर सतर्क रहकर कार्रवाई कर सकते हैं :

अगर फोन ज्यादा गर्म हो रहा हो...

स्पाईवेयर या कोई भी छिपा हुआ मैलवेयर बैकग्राउंड में लगातार चलता रहता है। इससे आपका फोन तब भी प्रोसेसर, रैम और बैटरी उपयोग करता रहता है, जब वह आपकी जेब या मेज पर पड़ा हो। नतीजतन, फोन हैंग होने लगता है, स्लो चलने लगता है, बिना उपयोग किए भी गर्म हो सकता है या बैटरी असामान्य रूप से जल्दी खत्म हो सकती है। हालांकि यह सिर्फ अनुमान है, असली कारण जानने के लिए कुछ और कदम उठाने पड़ते हैं।

जब फोन के किनारों पर दिखे रंगीन आइकॉन्स...

एंड्रॉयड और आईफोन दोनों में कैमरा/माइक्रोफोन के उपयोग पर फोन के किनारों में रंगीन आइकॉन या कलरफुल डॉट्स नजर आते हैं। कैमरा ऐप, इंस्टाग्राम आदि यूज करते समय ये सामान्य है। लेकिन यदि ये अचानक दिखाई दें तो संभव है कोई ऐप चुपचाप आवाज रिकॉर्ड कर रहा हो या तस्वीर/वीडियो ले रहा हो।

जब टचस्क्रीन अपने आप काम करने लगे...

यदि आपके फोन की टचस्क्रीन खराब नहीं है, लेकिन इसके बावजूद वह अपने आप काम करने लगे, फोन खुद टैप होता दिखे या आपकी टच कमांड पर देर से प्रतिक्रिया मिले तो यह संकेत हो सकता है कि कोई स्पाईवेयर फोन को रिमोटली नियंत्रित कर रहा है और यह संदिग्ध गतिविधि का संकेत है।

डेटा का असामान्य तौर पर अधिक उपयोग हो

यदि आपका मोबाइल फोन मोबाइल डेटा या वाई-फाई का बहुत ज्यादा उपयोग कर रहा हो तो हो सकता है कोई ऐप आपके फोन से जानकारी किसी दूरस्थ सर्वर पर भेज रहा हो।

सामान्य ऐप और स्पाईवेयर में होते हैं ये 4 मुख्य अंतर

अनेक ऐप्स की आपके डेटा तक पहुंच हो सकती हैं, लेकिन कुछ ऐप तो खास तौर पर डेटा चुराने या आपकी जासूसी करने के लिए बनाए जाते हैं। इन ऐप्स को 'स्पाईवेयर' कहा जाता है और इनका इस्तेमाल अक्सर धोखाधड़ी या हाई-प्रोफाइल जासूसी के लिए किया जाता है। एक रेगुलर या स्टैंडर्ड ऐप और स्पाईवेयर के बीच बुनियादी अंतर इस तरह होते हैं:

1. परमिशन

स्टैंडर्ड ऐप: यह स्पष्ट रूप से परमिशन मांगता है, जैसे 'Allow Maps to access location?' आपको पता रहता है कि ऐप क्या मांग रहा है और क्यों।
स्पाईवेयर: ऐसा ऐप चुपके से या धोखे से डेटा एक्सेस करता है। कई बार तो बिना पूछे या फेक पॉप-अप के जरिए अनुमति ले लेता है।

2. विजिबिलिटी

स्टैंडर्ड ऐप: इसका आइकॉन ऐप ड्रॉवर में साफ दिखता है। इससे यूजर को पता रहता है कि यह फोन में मौजूद है।
स्पाईवेयर : यह खुद को छिपा लेता है। या तो आइकॉन हटा देता है या खुद को 'System Update' या 'Wi-Fi Service' जैसे नाम से सिस्टम ऐप जैसा दिखाता है।

3. अनइंस्टालेशन

स्टैंडर्ड ऐप : इसे आसानी से Settings Apps में जाकर अनइंस्टॉल किया जा सकता है।
स्पाईवेयर : यह फोन से आसानी से नहीं हट पाता है। अक्सर 'Device Administrator' परमिशन ले लेता है, ताकि यूजर इसे डिलीट नहीं कर पाए। कई बार इसके लिए स्मार्टफोन की फॉरमैटिंग करनी पड़ती है।

4. मकसद

स्टैंडर्ड ऐप : इसका उद्देश्य सर्विस देना होता है, जैसे मौसम के हाल बताना, चैट करना, गेमिंग, पेमेंट आदि।
स्पाईवेयर : इसका एक ही उद्देश्य होता है- आपके फोन में से डेटा चुराना, आपकी गतिविधियों की जासूसी करना या धोखाधड़ी करना।

रसरंग टिप्स

अपने फोन की ट्रैकिंग से बचने के लिए रखें ये 5 मुख्य सावधानियां

1. असामान्य रूप से हो रहे बैटरी ड्रेन की जांच करें
अगर आपके फोन की बैटरी बहुत तेजी से खत्म हो रही है तो आप अपने फोन की Settings » Battery में जाएं और देखें कि कौन-से ऐप्स सबसे ज्यादा बैटरी खा रहे हैं। अगर आपको कोई ऐप संदिग्ध लगे तो उसे हटा दें। जरूरी ऐप हो तो उसे फिर से इंस्टॉल कर सकते हैं। बस पहले आवश्यक डेटा का बैकअप ले लें।

2. संदेह होने पर माइक्रोफोन और कैमरे का उपयोग बंद करें
अगर आपको लगे कि फोन के कैमरे अथवा माइक्रोफोन का बार-बार या सामान्य से ज्यादा उपयोग हो रहा है तो इन्हें आप Settings या Quick Settings (नोटिफिकेशन बार से नीचे स्वाइप करने पर) से आसानी से बंद कर सकते हैं। यह विकल्प एंड्रॉइड और iOS दोनों पर मौजूद रहता है और तुरंत काम करता है।

3. केवल विश्वसनीय स्रोतों से ही ऐप डाउनलोड करें
अनजान स्रोतों से ऐप डाउनलोड न करें। APK फाइलों में वायरस या ऐसा कोड हो सकता है जो फोन को हैक कर ले या उस पर पूरा नियंत्रण पा ले। हमेशा गूगल प्ले स्टोर या एपल ऐप स्टोर से ही ऐप इंस्टॉल करें। एंड्राइड में Google Play Protect लगातार आपका फोन स्कैन करता है। इसे कभी बंद न करें, खासकर जब कोई ऐप इसे बंद करने को कहे।

4. एक्सेसिबिलिटी या एडमिन परमिशन देने से बचें
Accessibility परमिशन वाले ऐप्स को फोन पर अधिक नियंत्रण मिल जाता है। यथासंभव इन्हें अनुमति न दें। ज्यादातर ऐप्स को जरूरत भी नहीं होती। एंड्राइड में देखें कि कोई ऐप Admin Access तो नहीं लिए बैठा है। Settings » Security & privacy » Device admin apps पर जाकर आप किसी भी ऐप का एडमिन एक्सेस हटा सकते हैं।

5. पब्लिक वाई-फाई का उपयोग यथासंभव नहीं करें
इसके जरिए आपके फोन पर मैलवेयर इंस्टाल हो सकता है या डेटा चुराया जा सकता है। इसकी वजह यह है कि पब्लिक वाई-फाई कम सुरक्षा पर चलता है और हैकर्स आसानी से एक ही नेटवर्क पर मौजूद किसी भी डिवाइस तक पहुंच सकते हैं। बहुत जरूरी हो तो Cloudflare Warp या किसी VPN का उपयोग कर सकते हैं।

बैंकॉक के होटल परिसर में ब्रह्म देव की उपस्थिति का रहस्य!

मायथोलॉजी

देवदत्त पट्टनायक

हिंदू धर्म में साधारणतः ब्रह्मा की पूजा-अाराधना नहीं की जाती, जबकि वे सृष्टि के सृजनकर्ता माने जाते हैं। इसके कई कारण बताए जाते हैं। एक कथा के अनुसार, एक बार ब्रह्मा और विष्णु के बीच इस बात पर विवाद हुआ कि दोनों में कौन श्रेष्ठ हैं। तभी अचानक पृथ्वी और आकाश को चीरता हुआ अग्नि का एक विशाल स्तंभ प्रकट हुआ। ब्रह्मा और विष्णु ने तय किया कि जो उस स्तंभ का स्रोत ढूंढ लेगा, वही श्रेष्ठ माना जाएगा। ब्रह्मा हंस का रूप लेकर स्तंभ का छोर खोजने आकाश की ओर उड़ चले, जबकि विष्णु वराह का रूप लेकर पृथ्वी के भीतर गए।

लेकिन दोनों ही असफल रहे। विष्णु ने पराजय स्वीकार कर ली, पर ब्रह्मा ने झूठा दावा किया कि उन्होंने स्तंभ का मूल पा लिया है। तभी शिव उस स्तंभ के भीतर से प्रकट हुए। यह स्तंभ उनकी असीम शक्ति का प्रतीक था। उन्होंने क्रोधित होकर ब्रह्मा को श्राप दिया कि उन्हें कभी किसी मंदिर में पूजा नहीं जाएगा। ब्रह्मा ने क्षमा मांगी, तब शिव ने कहा कि राजस्थान में पुष्कर झील के पास स्थित एक मंदिर में उनकी पूजा की जाएगी।

दक्षिण भारत में विष्णु को समर्पित विशाल मंदिर परिसरों में ब्रह्मा को समर्पित कुछ छोटे मंदिर जरूर मिल जाते हैं, किंतु सामान्यतः हिंदू देवताओं में ब्रह्मा लोकप्रिय नहीं हैं। इसी कारण, थाईलैंड के बैंकॉक में ब्रह्मा को समर्पित अत्यंत लोकप्रिय और पूज्य तीर्थस्थल को देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। यह तीर्थस्थल वहां के एरावान में ग्रैंड हयात होटल के परिसर में सड़क के किनारे स्थित है। सुनहरी चतुर्मुख मूर्ति दंड, चम्मच, जपमाला और

बैंकॉक के ग्रैंड हयात होटल के परिसर में स्थित ब्रह्मा की प्रतिमा।

पुस्तक धारण किए हुए थी और उसकी गोद में एक कमंडल रखा हुआ था, मानो वह यज्ञ प्रारंभ करने जा रहा कोई पुजारी हो। उसकी छाती पर जनेऊ स्पष्ट दृष्टिगोचर था। चूंकि तीर्थस्थल किसी दीवार से घिरा नहीं है, इसलिए चारों दिशाओं से उसके चारों मुख दिखाई देते हैं। दर्जनों थाई, और यहां तक कि कुछ चीनी श्रद्धालु भी प्रत्येक मुख की पूजा कर रहे थे। सभी मुखों की पूजा के बाद वे चांदी के एक विशाल पात्र में रखे पवित्र जल को अपने हाथ और सिर पर छिड़कते थे। तीर्थस्थल के चारों ओर सैकड़ों दीप और अगरबत्तियां जल रही थीं। एक ओर मंडप के नीचे कुछ सुंदर नर्तकियां बैठी थीं। उन्हें पारिश्रमिक देने पर वे पारंपरिक गीत पर नृत्य और गायन करती थीं। वहां के गाइड के अनुसार, इससे हिंदू देवता प्रसन्न होते हैं।

1950 के दशक में थाईलैंड में एक भव्य अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित हुआ था। उस सम्मेलन के प्रतिनिधियों के लिए सरकार ने उतना ही भव्य एरावान होटल का निर्माण करवाना शुरू किया। लेकिन निर्माण के हर चरण में विलंब होने लगा। और जब कीमती संगमरमर से भरा एक जहाज बैंकॉक पहुंचने के बजाय लापता हो गया, तब वहां काम कर रहे मजदूरों को विश्वास हो गया कि कुछ तो ऐसा है जो ठीक नहीं है। उन्होंने निर्णय लिया कि भूमि की संरक्षक आत्माओं को शांत किए बिना वे काम नहीं करेंगे।

होटल बनाने वाली कंपनी ने समस्या के समाधान की जिम्मेदारी बैंकॉक के पुलिस मेजर जनरल को सौंपी। उन्होंने एक प्रसिद्ध ज्योतिषी, रियर एडमिरल लुआंग सुविचर्नपट से मदद मांगी। विस्तृत गणना के बाद सुविचर्नपट ने पाया कि होटल की नींव अशुभ समय में डाली गई थी। उन्होंने समाधान सुझाया कि इस भूमि की आत्मा को समर्पित एक तीर्थस्थल बनाना आवश्यक है। यह तीर्थस्थल इस भूमि के सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मा देवता 'चतुर्मुख थान ताओ महाप्रॉम' के सम्मान में बनाया गया, क्योंकि वे अत्यंत शुभ माने जाते हैं और उससे नींव डालने में हुई भूल सुधारी जा सकती थी।

थान ताओ की प्लास्टर ऑफ पेरिस की मूर्ति बनाई गई और उस पर स्वर्ण लेप चढ़ाया गया। 9 नवंबर 1956 को इसे तीर्थस्थल में स्थापित किया गया। हर वर्ष इसी दिन हजारों श्रद्धालु उनका आशीर्वाद लेने आते हैं। तीर्थस्थल बनने के बाद होटल का निर्माण बिना किसी बाधा के पूरा हुआ।

मान्यता है कि थान ताओ महाप्रॉम कृपा, दयालुता, सहानुभूति और निष्पक्षता से पूर्ण ब्रह्मा देवता हैं। इन चारों गुणों को मूर्ति के प्रत्येक मुख में दर्शाया गया है, इसलिए उनकी कृपा सभी पर समान रूप से बरसती है। अधिकांश विदेशी पर्यटकों के लिए थान ताओ महाप्रॉम नाम को याद रखना या उच्चारित करना कठिन होता है। इसलिए समय के साथ यह तीर्थस्थल एरावान के नाम से जाना जाने लगा, क्योंकि उनका वाहन तीन मुखों वाला गज 'एरावान' था।

अगले सप्ताह हम इस तीर्थस्थल पर चर्चा जारी रखेंगे। • **devdutthindi@gmail.com**

इस कॉलम को मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

आत्मविश्वास और आत्मनिर्णय की एक मजेदार कहानी

हिन्दवी से खास

गीतांजलि सिन्हा
नई पीढ़ी की लेखिका

मुझे ऐसा लगता है कि दुनिया में जितने भी देश हैं, वहां रहने वाली जितनी भी लड़कियां हैं, उनका अपने प्रेमी, पति, बच्चों, बहन-मां-बेटी से जितना आत्मीय रिश्ता है, उससे भी कहीं ज्यादा आत्मीय रिश्ता उनका अपने बालों से है। हां जी! आपने एकदम सही पढ़ा, लड़कियों का बहुत गहरा रिश्ता होता है अपने बालों के साथ। कितना गहरा? इतना कि सारी दुनिया में अकेली पड़ जाने के बाद भी यह बाल उनको असीमित आत्मविश्वास और हिम्मत से भर देते हैं। उसके असंख्य केश कभी खुले, कभी वेणी में तो कभी किसी जूड़े में सज्जित होते हैं, तरह-तरह के फूल जैसे मोंगरे, रजनीगंधा, गुलाब, गेंदें आदि से सजते हैं, तो कभी चांदी, सोने के आभूषणों से और कभी-कभी जल्दबाजी में केवल एक पेंसिल या पेन की मदद से बेतरतीबी से खोंसकर, जिनका जुड़े जैसा कुछ बना दिया जाता है।

अपने बालों से मेरा कैसा रिश्ता है, इसका पता मुझे तब चला जब मैं दस साल की हुई और तब ही शुरू हुआ 'बालकांड' का पहला अध्याय।

हुआ यूं कि जब मैं दस साल की थी, तब नवोदय विद्यालय में पढ़ने के लिए मेरा चयन हुआ। हमको निर्देशित किया गया था कि लड़कियों के बाल छोटे होने चाहिए, क्योंकि नवोदय एक आवासीय स्कूल था और वहां छोटी बच्चियों के लिए अपने बाल संभाल पाना बड़ा ही कठिन कार्य है। अब मेरे बाल कमर के नीचे तक लंबे थे, उनको एकाएक कान तक छोटे करवा देते तो मेरी मां को बहुत दुख होता और देखने में भी अच्छा नहीं लगता, इसलिए पिताजी ने मेरे बाल पीठ तक और फिर कुछ दिनों में कान तक छोटे करवाए। हालांकि मां को तब भी उतना ही दुख हुआ और गांव के बच्चों के बीच मेरा मजाक बना सो अलग।

बालकांड के अध्याय दो की शुरुआत होती है मेरे नवोदय आने से। यहां लड़कियों के हॉस्टल दो विंग में बंटे थे- जी-वन और जी-टू। जी-वन में सीनियर लड़कियां रहती थीं और जी टू में मिडिल स्कूल वाली जूनियर लड़कियां। हर दो महीनों में हमारे स्कूल में एक बार्बर जी-टू में पढ़ने वाली लड़कियों के बाल कतरने आता था। किसी जूनियर लड़की के बाल कान से बढ़कर गले तक पहुंच पाए हों, ऐसा जी-टू हॉस्टल के इतिहास में कभी नहीं हुआ। जी-टू हॉस्टल की हाउस मास्टर इस मामले में बड़ी कड़क थीं। हमें हमेशा यही लगता था कि किसी महीने हमारी जी-टू की वार्डन मैम खुद ही कैंची लेकर लड़कियों के बाल काटने न लग जाए। कई-कई बार तो मेरे बाल इतने ज्यादा काट दिए गए कि मेरे छोटे भाई के बाल भी मुझसे लंबे होते। जी-वन में आते ही हमको थोड़ी छूट मिली, हम अपने बाल लंबे कर सकती थीं, पर हमको अब चोटी बनाकर स्कूल जाना होता था। बारहवीं पास होते तक मेरे बाल कंधे तक ही थे, कॉलेज में कंधों से उतरकर पीठ को पहुंचने लगे। चूंकि अब छोटे बालों की आदत हो चुकी थी तो मैं पीठ तक के बालों को कंधे तक कटवाने की जिद करती और मेरी मां उन्हें बढ़ाकर कमर तक लाने पर अड़ी रहतीं।

बालकांड का तीसरा अध्याय शुरू होता है, जब मैं इक्कीस की हुई और मैंने अपने बाल अपने हिसाब से अपनी मां से बहुत लड़ने-मनाने के बाद कटवाए। मुझे तब ऐसा लगा कि अपने बालों को लेकर अगर आप कोई फैसला लेते हैं, एकदम छोटा ही फैसला, तब भी यह बहुत बड़ी जंग जीतने वाली बात जैसी ही है। लोग कहते हैं कि आपके बाल यादें कैद करके रखते हैं, आपकी भावनाएं और बहुत हद तक आपकी आजादी भी। मैं आपको शब्दों में बता नहीं सकती हूं कि हर बार जब भी मैं अपने बाल कटवाती हूं तो मुझे आजाद महसूस होता है! ऐसा लगता है जैसे मैंने अपने बालों के साथ दूसरों की मुझसे बंधी बेबात की उम्मीदें भी काट दी हैं, अपने सफर में सामान कुछ कम कर लिया है।

मुझे नहीं पता कि बालकांड में अभी और कितने अध्याय जुड़ने बाकी हैं, पर मैं इस बात का आश्वासन अवश्य दे सकती हूं कि इसके सारे अध्याय मैं खुद अपने हिसाब से लिखूंगी।

▪ **हिन्दवी के साथ विशेष अनुबंध के तहत।**

हर हफ्ते खेलिए भास्कर फैमिली क्विज

*हर रविवार **रसरंग** में खेलिए भास्कर फैमिली क्विज। इसमें भाग लेने के लिए यहां दिए गए **क्यूआर कोड** को स्कैन करें। वहां आपको मिलेंगे पांच सवाल।*

*या आप **8770592563** नंबर पर QUIZ टाइप करके वॉट्सअप भी भेज सकते हैं। इस पर मिले लिंक को ओपन करके दीजिए सवालों के जवाब। पांचों सवालों के सही जवाब देकर आप बन सकते हैं लकी विनर और जीत सकते हैं 2100 रु. तक के उपहार।*

अब आप क्विज में आज रात 12 बजे तक शामिल हो सकते हैं।

भास्कर फैमिली क्विज- 159 के सवाल

Q-1. रामायण के अनुसार भरत इनमें से किसके अवतार थे?
(A) नारद (B) शेषनाग
(C) इंद्र (D) शंख

Q-2. राजगढ़ किला इनमें से किस राज्य में स्थित है?
(A) राजस्थान (B) महाराष्ट्र
(C) उत्तर प्रदेश (D) पश्चिम बंगाल

Q-3. प्रसिद्ध पुस्तक मानसरोवर इनमें से किस भारतीय लेखक द्वारा लिखी गई है?
(A) जैनेंद्र कुमार (B) प्रेमचंद
(C) नागार्जुन (D) यशपाल

Q-4. नेल्सन मंडेला इनमें से किस देश के राष्ट्रपति थे?
(A) जिम्बॉब्वे (B) इंडोनेशिया
(C) श्रीलंका (D) दक्षिण अफ्रीका

Q-5. खून के अध्ययन को इनमें से क्या कहा जाता है?
(A) हेमेटोलॉजी (B) पोटामोलॉजी
(C) टोपोलॉजी (D) एलोटोलॉजी

भास्कर फैमिली क्विज- 158 के जवाब

प्रश्न 1 - सही जवाब : (A) कावेरी नदी, प्रश्न 2: (B) आर के नारायण, प्रश्न 3: (C) महाराष्ट्र, प्रश्न 4: (C) कुमारगुप्त, 5: (A) गंगा।

... और लकी विनर्स

देवेश कुमार सेन (XXXXX98965), किरण मिश्रा (XXXXX29785), किरण नागर (XXXXX45474), महबूब कोहरी (XXXXX04387), महेश चंदर सिंह (XXXXX72108), नोटन दास (XXXXX32224), रिचा सिलेकर (XXXXX01746), श्याम सुंदर दुबे (XXXXX05661), सुभाष (XXXXX48290), वरुण शर्मा (XXXXX04135)।

(लकी विनर्स से दैनिक भास्कर की टीम संपर्क करेगी)

"लायन ब्रान्ड"

शुद्ध कौचा, शुद्ध शिलाजीत, दालचीनी एवं जायफल जैसे 15 आयुर्वेदिक औषधिओ से निर्मित...
"लायन ब्रान्ड"
वा-नरी वटी
श्री नरनारायण आयुर्वेदिक फार्मसी
An ISO 9001 - 2015 & GMP Certified Company
सभी मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध
Delhi 99114 84940 | Hariyana 70175 67294
UIN:GUJARAT/0053/2025

अभिनेता धर्मेंद्र को सदैव इस बात का मलाल रहा कि उनके बच्चों ने उर्दू नहीं सीखी

एक्टर ही नहीं, एक मुकम्मल शायर थे धर्मेंद्र

मेरे हिस्से के किस्से

रूमी जाफरी
बॉलीवुड फिल्मों के लेखक, निर्देशक

आज धरम जी को हमसे बिछड़े करीब दो हफ्ते हो चुके हैं, लेकिन दिल-दिमाग अब भी इस सच्चाई को स्वीकार करने को तैयार नहीं है कि वो अब हमारे बीच नहीं रहे। कल यानी 8 दिसंबर को उनकी सालगिरह है। तो वे कल 90 साल के हो जाते और परिवार, दोस्त, प्रशंसक, सब मिलकर जश्न मनाते। लेकिन ऊपरवाले को शायद कुछ और ही मंजूर था।

धरम जी का जाना सिर्फ एक अभिनेता का जाना नहीं है। यह उस युग का विराम है, जिसने भारतीय सिनेमा की आत्मा को आकार दिया। जिस्मानी तौर पर धरम जी हमारे बीच नहीं रहे, मगर उनका काम, उनकी पर्सनैलिटी, उनका अपनापन और उनके नेक कर्म उन्हें हमेशा-हमेशा हमारे बीच जिंदा रखेंगे। एक और चीज जो लोगों के सामने बहुत कम आई, वो यह है कि उनके भीतर दिलीप कुमार, उर्दू भाषा और शायरी के लिए एक गहरी मोहब्बत थी। उनकी इस नर्मदिल शायराना पहचान से बहुत कम लोग वाकिफ थे। मुझे आज भी 1988 का वह दिन याद है। फिल्म 'जुल्म की हुकूमत' के सेट पर मेरी उनसे पहल बार मुलाकात हुई थी। उन्होंने मुझसे कहा, 'तुम्हारी जुबान बहुत अच्छी है। तुमसे बात कर रहा हूं तो ऐसा लगता है जैसे 'सीता और गीता' के दिनों वाले जावेद अख्तर से बात कर रहा हूं।' मैंने मुस्कराते हुए कहा, 'शायद इसलिए क्योंकि हम दोनों का ताल्लुक एक ही शहर भोपाल और एक ही कॉलेज सैफिया कॉलेज से है।'

धरम जी कभी-कभी अपना लिखा हुआ सुनाते थे। तब महसूस होता था कि इंसान सिर्फ अभिनेता नहीं, बल्कि भीतर से एक नाजुक दिल वाला रचनाकार भी है। मैंने सोचा कि फिल्मी किस्से तो आप सबने बहुत सुने होंगे, लेकिन उनके लिखे कुछ अशआर आप तक पहुंचाने चाहिए। तो पेश ए खिदमत धरम जी के लिखे कुछ अशआर :

काश यादों में जान होती, आवाज देकर बुला लेता,
पास बैठा लेता, उनकी सुनता अपनी सुनाता
सीने से लगा लेता
बाकलम खुद अल्फाज मेरे अशआर हैं
नहीं आता खुद को भी यकीन शायद इसलिए
क्यूंकि जमाने को भरोसा है, धरम शायर हो नहीं सकता।

दूसरी मिट्टी से जुड़ी नज्म है :

मिट्टी का बेटा हूं, मरते-मरते भी कुछ कर जाऊंगा
उखड़ती बूढ़ी सांसों से चुरा के चंद सांसें,
मैं चीर के सीना धरती का फसल नई बो दूंगा
जब खेतों में हरियाली की चादर बिछ जाएगी,
जब हवा में गेहूं की खुशबू तैर जाएगी,
तब उग आएगी जवानी
मेरी बूढ़ी सांसों में भी जान लौट आएगी।

एक पुराना मिसरा है - 'आवाज-ए-खलक को नक्कारा-ए-खुदा समझो।' इसमें धरम जी ने अपना मिसरा जोड़ा- 'तो खिदमत-ए-खलक भी इबादत-ए-खुदा होती है।'

फिल्म 'यमला पगला दीवाना' के एक दृश्य में धर्मेंद्र अपने दोनों बेटों सनी और बॉबी देओल के साथ।

वो हमेशा मुझसे कहा करते थे, 'यार रूमी, उर्दू खत्म होती जा रही है। मुझे कुछ करना है उर्दू के लिए, क्या करूं? मुझे कुछ बता। देख ले, मेरे घर में मेरे बच्चे ही उर्दू नहीं पढ़ते।' तो उनके देहांत के अगले दिन जब मैं उनके परिवार से मिलने गया तो बहुत इमोशनल माहौल था। पिछले कॉलम में मैंने आपको बताया था कि यह परिवार जज्बाती तौर पर आपस में कितना जुड़ा हुआ है। किसी की आंख से आंसू बंद नहीं हो रहे थे। बॉबी तीन बार मेरे सामने रो दिया। मेरी भी आंखों में आंसू आ गए। बॉबी ने कहा, 'पापा ने मेरे लिए उर्दू टीचर रखे थे। मैं एक साल तक उनके घर उर्दू पढ़ने जाता था। वो अच्छा पढ़ाते थे और अच्छा खाना भी खिलाते थे। मैं काफी हद तक सीख भी गया था, मगर मेरा काम शुरू हुआ और सीखना बंद हो गया। तो इतने सालों में जो सीखा था वो भी भूल गया। अलिफ़, बे, ते मुझे अभी भी आता है, पूरा आता है।' यह उसने मुझे सुनाया भी। उसने मुझसे कहा, काश, मैंने उर्दू ठीक से सीख ली होती तो पापा की लिखी शेरो-शायरी, उनकी लिखी डायरी, सब पढ़ पाता। मगर अब मैंने सोचा है कि मैं उर्दू सीखूंगा, ताकि पापा की रूह भी खुश होगी और उनकी लिखी चीजों को मैं पढ़ सकूंगा।

धरम जी की याद में आज उनकी फिल्म 'बहारें फिर भी आएंगी' का ये गाना सुनिए, अपना खयाल रखिए और खुश रहिए...

बदल जाए अगर माली, चमन होता नहीं खाली,
बहारें फिर भी आती हैं बहारें फिर भी आएंगी...।

•rumyjafrywrites@gmail.com

लेखक-प्रकाशक के पास सर्वाधिकार सुरक्षित। लिखित पूर्वानुमति के बिना इस लेख के किसी भी हिस्से को ना तो पुनः प्रकाशित किया जा सकता है, ना ही किसी तरह का व्यावसायिक इस्तेमाल किया जा सकता है।

'मेरे हिस्से के किस्से' कॉलम को अपने मोबाइल पर सुनने के लिए **QR कोड** को स्कैन करें।

सब्जी में दूध के मिश्रण से बनेगी ये पारंपरिक डिश

रीडर रेसिपी कॉन्टेस्ट

ज्योति जारोलिया
गृहिणी
इंदौर (मप्र)

भेजिए रेसिपी और जीतिए 5,100 रु. का गिफ्ट

इस कॉलम में आप भी अपनी रेसिपी भेजकर हर सप्ताह जीत सकते हैं **5,100 रु.** मूल्य का गिफ्ट। इसके लिए **QR कोड** को स्कैन कीजिए और लिख भेजिए अपनी रेसिपी। साथ में अपना नाम, प्रोफेशन, फोटो, डिश की तस्वीर जरूर भेजें।

भारत के गांवों और कस्बों में ऐसी कई देसी रेसिपियां हैं, जिनका स्वाद एक बार चखने पर हमेशा याद रह जाता है। ऐसी ही एक पारंपरिक डिश है दूध-बालोर की सब्जी। खास बात यह है कि इसमें ज्यादा मसाले या तेल का इस्तेमाल नहीं होता है, फिर भी इसका स्वाद बेहद लाजवाब होता है।

बनाने की सामग्री :
250 ग्राम बालोर (या बलोर) फली, 500 ग्राम उबला हुआ दूध, 2 चम्मच तेल, 8-10 मेथी दाने, 1/2 छोटा चम्मच राई, 1/2 छोटा चम्मच जीरा, 1 चम्मच मिर्च पाउडर, 1 चम्मच हल्दी पाउडर, 2 चम्मच धनिया पाउडर, 2 चुटकी हींग, 1 चम्मच लहसुन (बारीक कटा हुआ), नमक स्वादानुसार, हरा धनिया सजावट के लिए।

बनाने की विधि :
- सबसे पहले बालोर की फली को साफ करके अच्छी तरह धो लीजिए और एक हल्का-सा उबाल ले लीजिए, ताकि फली मुलायम हो जाए।
- एक कड़ाही में तेल गरम करें। उसमें राई, जीरा, मेथी दाने और हींग डालकर तड़का लगाइए। जब ये तड़कने लगे, तब उसमें लहसुन डालें और सुनहरा भून लीजिए। अब हल्दी, मिर्च और धनिया पाउडर डालकर मसाला भी भून लीजिए।
- अब इसमें उबली हुई बालोर फली डालें और धीमी आंच पर कुछ मिनटों तक चलाते रहें, ताकि मसाले आपस में अच्छी तरह से मिल सकें।
- इसके बाद इसमें उबला हुआ दूध और नमक डाल दीजिए। धीमी आंच पर 8 से 10 मिनट तक पकने दीजिए, जब तक कि ग्रेवी थोड़ी गाढ़ी न हो जाए और ऊपर से हल्का तेल न दिखने लगे। अब इस पर हरा धनिया डालकर सजा दीजिए।
- दूध-बालोर की सब्जी को गरमा-गरम रोटी, पराठा या चपाती के साथ परोसें।

तारे-सितारे

मनीष शर्मा
ज्योतिषाचार्य

मंगल की अष्टम पूर्ण दृष्टि गुरु पर है। सप्ताह के आरंभ में कठिनाई आ सकती है। मंगलवार से स्थितियों में सुधार होगा। सेंसेक्स में बढ़ोतरी होगी। राजनीति में उलटफेर होने की संभावना है। सोने-चांदी के दाम बढ़ सकते हैं। वायरल रोगों में भी वृद्धि हो सकती है।

•jyotish.sansar@gmail.com

मेष
तृतीय चंद्र पराक्रम में वृद्धि करेगा। भाइयों से सहयोग प्राप्त होगा। मंगल एवं बुधवार को चंद्र आय को बाधित करेगा। गुरुवार से सुधार होगा। शुक्र एवं शनिवार को संतान से सहयोग की प्राप्ति होगी। आय में सुधार होगा।

वृषभ
यात्रा सुखदायक होगी एवं कचहरी के मामलों में विजय की प्राप्ति होगी। बुध एवं गुरुवार को पराक्रम श्रेष्ठ रहेगा। शुक्र एवं शनिवार से स्थिति में पुनः सुधार संभव है। जमीन संबंधी मामलों में सफलता मिलेगी।

मिथुन
चंद्र का गोचर सब प्रकार से अनुकूलता दिलाने वाला होगा। गुरु-शुक्रवार को कार्यक्षेत्र में कुछ परेशान करने वाली खबरें मिल सकती हैं। योजना विफल हो सकती है। शनिवार को अच्छा होने के आसार बन रहे हैं।

कर्क
प्रारंभ में बाधाओं के बाद सफलता मिलेगी। मंगल से गुरुवार पूर्णतः अनुकूल है। शुक्र एवं शनिवार को स्थाई धन में वृद्धि होगी। भाइयों से सहयोग प्राप्त होगा एवं पराक्रम श्रेष्ठ रहेगा। भाग्य का साथ भी प्राप्त होगा।

सिंह
आरंभ में धीमी शुरुआत होगी, किंतु आय अच्छी बनी रहेगी। सोम एवं मंगलवार को आनंदपूर्वक समय व्यतीत होगा। बुधवार एवं गुरुवार को व्यय की अधिकता होगी। शुक्रवार से पुनः तेजी से कार्य होने लगेंगे।

कन्या
नई सफलताएं मिलेंगी। निर्णय सही एवं सटीक होंगे। बुध एवं गुरुवार को आय की प्राप्ति में वृद्धि होगी। प्रसन्नता रहेगी एवं संतान से सुख मिलेगा। शुक्र एवं शनिवार परेशानी भरा समय होगा। विरोधी भी मुखर होंगे।

तुला
सप्ताह अनुकूल रहेगा। कार्य में नए अवसर मिलेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। मित्र मददगार रहेंगे। शुक्र और शनिवार को खुशखबरी मिलेगी। रुके काम गति पकड़ेंगे। राजनीतिज्ञों को सम्मान मिलने की संभावना है।

वृश्चिक
सप्ताह की शुरुआत खर्च बढ़ा सकती है। मंगल के बाद परिस्थितियां सुधरेंगी और सरकारी लाभ मिल सकता है। कार्यस्थल पर प्रभाव बढ़ेगा। सप्ताहांत में काम ज्यादा रहेगा, लेकिन परिवार का सहयोग मिलेगा।

धनु
चंद्र की दृष्टि से धन, सुख और सफलता के योग हैं। पराक्रम बढ़ेगा। बुध और गुरुवार थोड़े चुनौतीपूर्ण रहेंगे। यात्रा, विवाद और खर्च से बचें। सप्ताहांत फिर अनुकूल होगा। आय बढ़ेगी और कार्यों में गति आएगी।

मकर
चंद्र षष्ठम होने से सतर्क रहें। विरोधी सक्रिय रहेंगे, किंतु आप नियंत्रण में रख पाएंगे। बुध और गुरुवार लाभदायक रहेंगे। शुक्र को आर्थिक नुकसान की आशंका है। शनिवार को सकारात्मक माहौल बना रहेगा।

कुंभ
पंचम चंद्र लाभ और प्रसन्नता देगा। संतान से सुख मिलेगा। बुध और गुरुवार सफलता देंगे, किंतु क्रोध और विवाद से बचें। शुक्र एवं शनिवार को आय बढ़ेगी, कार्य में सुधार होगा और यात्रा का योग बनेगा।

मीन
सप्ताह की शुरुआत सामान्य रहेगी। मंगल व बुधवार से स्थितियां अनुकूल होंगी, रुके काम पूरे होंगे और नए वाहन या वस्त्र मिलने के योग बनेंगे। सप्ताहांत थोड़ा उदासीन हो सकता है और अनचाही यात्राएं संभव हैं।

मेरा पैसा

मैनेजमेंट गुरु

एन. रघुरामन

सुरक्षित बचत और गारंटीड ऊंचा रिटर्न एक कला है!

हाल ही में, सारस्वत बैंक में काम करने वाले मेरे एक परिचित ने मुझे बताया कि वे सीनियर सिटीजन को लंबी अवधि के फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) पर 9.5% तक का ब्याज दे रहे हैं। इस बात ने मुझे छोटे बैंकों और निवेश के अवसरों को तलाशने के लिए प्रेरित किया। मैंने कई बड़े सरकारी बैंकों में पता किया और पाया कि वहां वरिष्ठ नागरिकों के लिए भी 444 दिनों की एफडी पर ब्याज दर 7.5% से ज्यादा नहीं है। अगर बचत राशि 5 लाख से ज्यादा नहीं है, तो ऐसे ऊंची दर वाले ऑफर को तुरंत भुना लेना चाहिए। यदि बचत 5 लाख के गुणक में है, जैसे कि 20 लाख, तो भी आप सुरक्षित तरीके से ऊंचा ब्याज कमा सकते हैं। आसान उपाय यह है कि परिवार के प्रत्येक सदस्य के नाम पर अलग-अलग एफडी बना सकते हैं। अगर आपके परिवार में चार सदस्य हैं, तो आप प्रत्येक सदस्य के नाम पर 5 लाख जमा करके कुल 20 लाख सुरक्षित रूप से जमा कर सकते हैं।

यह 5 लाख की सीमा क्यों महत्वपूर्ण है? दरअसल भारत सरकार, डिपॉजिट इंश्योरेंस एंड क्रेडिट गारंटी कॉर्पोरेशन (डीआईसीजीसी) के माध्यम से प्रति जमाकर्ता 5 लाख तक की जमा राशि पर बीमा सुरक्षा और गारंटी देती है। इस गारंटी में बचत खाता, फिक्स्ड डिपॉजिट, चालू खाता और रिकरिंग डिपॉजिट जैसे सभी खाते शामिल हैं।

यह सुरक्षा सभी वाणिज्यिक बैंकों, सहकारी बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों पर लागू होती है। अगर कोई बैंक डूब जाता है या बंद हो जाता है, तो डीआईसीजीसी जमाकर्ता को 90 दिनों के भीतर बीमित राशि (यानी ₹5 लाख तक) का भुगतान करने के लिए बाध्य है। यह सीमा 2020 में 1 लाख से बढ़ाकर 5 लाख की गई थी।

अगर आप स्थायी कर्मचारी हैं और आपकी कंपनी में पीएफ की सुविधा है, तो स्वैच्छिक प्रॉविडेंट फंड (वीपीएफ) के बारे में विचार करना चाहिए। भले ही इसकी ब्याज दर वर्तमान में 8.25% है, लेकिन यह मेच्योरिटी पर पूरी तरह से कर-मुक्त होता है। हालांकि आप इसे एफडी की तरह आसानी से बीच में नहीं निकाल सकते। चूंकि यह मेच्योरिटी पर कर-मुक्त है, इसलिए यह लंबी अवधि में स्थिर और तुलनात्मक रूप से बेहतर रिटर्न देता है। विशेषज्ञों के मुताबिक 30% टैक्स स्लैब में आने वाले व्यक्ति के लिए 8.25% का रिटर्न किसी टैक्सेबल निवेश के 12% रिटर्न जितना है।

बैंकों में एफडी पर ब्याज दरें घटने के बाद पोस्ट ऑफिस एफडी भी बेहतर विकल्प हैं। पोस्ट ऑफिस एक साल से 5 साल की एफडी पर सालाना 6.9% से 7.5% ब्याज दरों की पेशकश कर रहा है। सीनियर सिटीजन सेविंग्स स्कीम पर ब्याज दर 8.2% है।

मैनेजमेंट टिप

अपनी सुरक्षा के लिए हमेशा उन ऑफर को देखें जिन्हें सरकार का समर्थन या गारंटी प्राप्त हो। अपनी मेहनत की कमाई को लंबी अवधि के लिए निवेश करते समय, आपको ब्याज दरों के बीच के छोटे से अंतर पर भी ध्यान देना चाहिए, क्योंकि लंबी अवधि में यह छोटा सा अंतर भी आपको संचयी लाभ देता है।

पैसे ऐसे कमाएं • 40 हजार करोड़ का एसएलबीएम बाजार, बिना शेयर बेचे करें कमाई

एसएलबीएम यानी शेयरों को किराये पर देकर कमाएं, 15% तक सालाना ब्याज

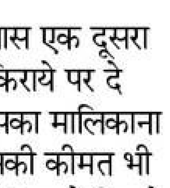

वैभव जैन,
सीएफए, वेल्थ मैनेजमेंट एक्सपर्ट

मान लीजिए आपके पास एक दूसरा मकान है जिसे आप किराये पर दे देते हैं। मकान पर आपका मालिकाना हक बना रहता है, उसकी कीमत भी बरकरार रहती है और आपको किराये की आमदनी भी मिलती रहती है। शेयर बाजार में भी बिल्कुल ऐसा ही एक तरीका मौजूद है, जहां आप अपने शेयर कुछ समय के लिए उधार देकर अतिरिक्त आय प्राप्त कर सकते हैं। इसी व्यवस्था को प्रतिभूति उधार–लेनदेन व्यवस्था (एसएलबीएम) कहा जाता है। अब एसएलबीएम का सालाना टर्नओवर 40 हजार करोड़ है, जो 2023 में 30 हजार करोड़ था। 15%की सालाना रफ्तार साफ संकेत देती है कि कैपिटल मार्केट नई दिशा में बढ़ रहा है। निवेशक पोर्टफोलियो का बेहतर उपयोग कर रहे हैं। ब्रोकर्स इसे आसान बनाते जा रहे हैं। समझते हैं कि यह व्यवस्था कैसे काम करती है...

▪ मालिकाना हक किसके पास रहता है?
शेयर डीमैट खाते में आपके ही नाम पर माने जाते हैं। कंपनी यदि लाभांश, बोनस, शेयर स्प्लिट या बायबैक जैसी कोई घोषणा करती है, तो इसका पूरा लाभ आपको मिलता है। यानी शेयर भी आपके, भविष्य का मूल्य भी आपका और ऊपर से अतिरिक्त आय।

▪ यह व्यवस्था कैसे काम करती है?
निवेशक अपने ब्रोकर के माध्यम से 'उधार पर देने' का आदेश भरता है। दूसरी ओर, जिसको जरूरत होती है, वह वही शेयर कुछ माह के लिए उधार लेता है। निर्धारित अवधि पूरी होने पर, उधार लेने वाले को वे शेयर हर हाल में लौटाने होते हैं। इन सभी प्रक्रियाओं की देखरेख एक्सचेंज की क्लियरिंग संस्था करती है।

▪ अगर उधार लेने वाले शेयर नहीं लौटाए?
दुर्लभ स्थिति में उधार लेने वाला शेयर वापस न लौटा पाए, तो एक्सचेंज उसकी सुरक्षा राशि का उपयोग करके बाजार से शेयर खरीद कर वापस करता है। संबंधित व्यक्ति पर दंड भी लगता है।

▪ उधार लेने वाले कौन होते हैं?
शॉर्ट बेचने वाले यानी अधिकतर बेचकर फिर सस्ते में खरीदने की योजना बनाने वाले ट्रेडर्स या भावों के फर्क से लाभ कमाने वाले व्यापारी (अरबिट्राज करने वाले) या हेजिंग के लिए अस्थायी रूप से शेयर चाहने वाले संस्थागत लोग।

▪ निवेशक को इससे क्या लाभ है?
कई चर्चित शेयरों पर मांग के आधार पर वार्षिक आधार पर 6 से 15% तक उधार शुल्क आमदनी मिलती है। शेयर बेचना नहीं पड़ता और दीर्घकालीन निवेश बना रहता है। संपत्ति सुरक्षित रहती है और ऊपर से वह निष्क्रिय न रहकर आपके लिए आय पैदा करती है। वोल्टास, अंबर, आरवीएनएल, एंजेल वन जैसे कई शेयर पिछले समय में अच्छी उधार-शुल्क दरों पर चले हैं। ध्यान रखें हर शेयर इस व्यवस्था में उपलब्ध नहीं होता। उधार-शुल्क की दरें मांग और आपूर्ति के अनुसार बदल सकती हैं

▪ एसएलबीएम कैसे शुरू कर सकते हैं?
ब्रोकर के साथ यह सुविधा सक्रिय करवानी होती है। यह लेनदेन प्रातः 9:15 बजे से शाम 5:00 बजे तक चलता है। केवल वे ही चयनित शेयर उपलब्ध होते हैं जिन्हें एक्सचेंज ने इस व्यवस्था के लिए सूचीबद्ध किया है (अधिकतर बड़े और तरल शेयर)।

केस स्टडी... निवेशक कितना कमा सकता है

मान लेते हैं आपके पास एंजेल वन के शेयर हैं और उसमें लेंडिंग करनी है। बीते 3 दिसंबर को, इस शेयर का बेस्ट ऑस्क (उधार देने वाला जितना मांग रहा था) 22 था।। यानी निर्धारित अवधि के लिए प्रत्येक शेयर पर 22 रुपए का उधार शुल्क प्राप्त कर सकते थे। अगर 100 शेयर्स हैं तो संभावित कमाई 22x100= 2200 रुपए होती। इसमें कुछ शुल्क भी कटते हैं:

1. कई ब्रोकर्स 10% से लेकर 20% तक प्रोसेसिंग चार्ज लेते हैं। 2,200 पर 20% = 440 रुपए
2. **डिपॉजिटरी शुल्क:** हर स्लिप से 15 का अमाउंट कटता है।
3. **जीएसटी:** 18%। यानी **नेट आय 1,720-1,760 रुपए।**

मौजूदा शेयर प्राइस पर ये महीने का 0.65% और अगर हम इसे सालाना आधार पर देखें तो यह दर 8.1% होती है।

आईटीआर भरने के बाद अब तक नहीं आया पैसा, जानिये कहां रुका है पैसा

कई टैक्सपेयर्स शिकायत कर रहे हैं कि महीनों पहले आईटीआर दाखिल करने के बावजूद उनका रिटर्न प्रोसेस नहीं हुआ। वे 'पेंडिंग फॉर प्रोसेसिंग' का स्टेटस दिखने से परेशान हैं। हाल ही में आयकर विभाग ने स्थिति स्पष्ट की है। रिफंड में देरी का मुख्य कारण स्वचालित सिस्टम में जारी जांच प्रक्रिया है। पूरी प्रक्रिया निर्धारित कानूनी समय-सीमा के अंदर पूरी की जाएगी।

1. प्रोसेसिंग: विभाग ने बताया कि आईटीआर अभी भी उनके सिस्टम में प्रोसेस हो रहा है।

2. कंप्यूटरीकृत जांच: रिटर्न की जांच पूरी तरह से ऑटोमेटेड सिस्टम द्वारा होती है। इसमें, सभी क्लेम, कटौतियों का और टैक्स क्रेडिट का मिलान व सत्यापन किया जाता है। इस कारण कुछ केस में समय लग सकता है।

3. कानूनी समय-सीमा: विभाग के पास रिटर्न दाखिल करने वाले वित्त वर्ष के अंत से 9 माह तक का समय होता है।

4. टैक्सपेयर्स से अनुरोध: विभाग ने टैक्सपेयर्स से धैर्य रखने का अनुरोध किया। आश्वासन दिया कि जैसे आईटीआर प्रोसेस होगा, उन्हें ईमेल से सूचित कर दिया जाएगा।

तारीखें... 31 तक पैन को आधार से लिंक कराएं, बैंकिंग, निवेश में दिक्कत आएगी

साल 2025 का अंतिम महीना दिसंबर कई अहम वित्तीय व टैक्स संबंधी कार्यों को पूरा करने की अंतिम समय-सीमा लेकर आया है।

10 दिसंबर 2025: टैक्स ऑडिट केस वाले करदाताओं के लिए आयकर रिटर्न दाखिल करने की अंतिम तारीख 10 दिसंबर 2025 है।

15 **दिसंबर 2025:** एडवांस टैक्स भरने की आखिरी तारीख 15 दिसंबर है। इसे हर उस व्यक्ति को चुकाना होता है, जिसकी अनुमानित कुल कर देनदारी, टीडीएस (स्रोत पर कर कटौती) काटने के बाद, 10,000 से अधिक है।

31 दिसंबर 2025: अगर आपने 1 अक्टूबर 2024 या उससे पहले आधार कार्ड बनवाया था, तो इसे पैन के साथ लिंक करना 31 दिसंबर तक अनिवार्य है। चूकने पर पैन निष्क्रिय हो जाएगा। बैंकिंग, निवेश, आईटीआर फाइलिंग में बाधा आ सकती है।

31 दिसंबर 2025: यदि आप रिटर्न नहीं भर सके, तो 31 दिसंबर तक विलंबित रिटर्न भर सकते हैं। साथ ही, भरे गए रिटर्न को संशोधित भी कर सकते हैं।

सोमवार को भास्कर बिजनेस गाइड में पढ़ें — मार्केट इनसाइट: मूविंग एवरेज के लिहाज से मार्केट कहां खड़ा है और आने वाले दिनों में कैसी रहेगी चाल? | प्राइमरी मार्केट- जानिए आईपीओ मार्केट में क्या होने जा रहा है? किन कंपनियों की लिस्टिंग होने जा रही है?

सुझाव और प्रतिक्रिया इस पते पर भेज सकते हैं- business.bhaskar@dbcorp.in

भास्कर Q&A

हर खर्च ट्रैक करें, फिजूल खरीदारी रुक सकती है

▪ सैलरी एक लाख रुपए है। 3 साल पहले 20 लाख रु. का होम लोन लिया। बकाया राशि उतनी ही है। 2 बेटे हैं। पारिवारिक जिम्मेदारियां हैं। कैसे मैनेज करूं? - हुकम सिंह , ग्वालियर

50/30/20 नियम का उपयोग करके मासिक बजट बनाएं। 50% जरूरतों के लिए: जैसे लोन की किस्त, राशन, बिजली/पानी बिल और बच्चों की पढ़ाई। 30% इच्छाओं के लिए: बाहर खाना, फिल्में देखना या ऐसी चीजें जो जरूरी नहीं हैं। 20% बचत या इमरजेंसी फंड के लिए।
1. जरूरी खर्चों को तय करें, फिर पिछले बैंक स्टेटमेंट या ऐप का इस्तेमाल करके सभी खर्चों पर नजर रखें। बाहर खाने या फिजूल खरीदारी में कटौती करें।
2. होम लोन जल्दी चुकाएं: जब सैलरी बढ़े, ईएमआई को सालाना 5-10% तक बढ़ा दें। लोन अवधि 20 से घटकर 10-12 साल हो जाएगी, लाखों रुपए बचेंगे। कुल ईएमआई वेतन के 40% से ज्यादा न हो।।
3. बच्चों की शिक्षा और घरेलू खर्च: बच्चों की पढ़ाई, ट्यूशन या अन्य गतिविधियों के लिए हर महीने 10,000-15,000 का बजट बनाएं।
किसी भी मेडिकल इमरजेंसी से बचने के लिए परिवार के स्वास्थ्य बीमा की समीक्षा करें।
लंबी अवधि के कदम: जब तक लोन बकाया 15 लाख से कम न हो जाए, तब तक गैर-जरूरी चीजों जैसे कि सब्सक्रिप्शन या यात्रा पर खर्च कम करें। व्यक्तिगत सलाह के लिए किसी सर्टिफाइड वित्तीय सलाहकार से जरूर मिलें।

▪ मेरी 19 साल की बेटी कॉलेज फर्स्ट ईयर में हैं। सालाना खर्च 2.5 लाख और मासिक आय 35,000 रुपए है। 80 लाख की एफडी है। 6 साल बाद बेटी की शादी करनी है। कैसे मैनेज करूं? -सचिन, रोहतक

आपकी मौजूदा 80 लाख की एफडी ग्रोथ ओरिएंटेड म्यूचुअल फंड स्कीम में बदलने से 7 साल में 12% की दर पर यह राशि 1.76 करोड़ रुपए हो सकती है। मौजूदा वक्त में शादी का खर्च 30 लाख रु. है। 10% महंगाई के हिसाब से 7 वर्ष बाद 26 की उम्र में यह खर्च 30 लाख से बढ़कर 51 लाख रुपए हो सकता है। यह राशि निकालने के बाद 1.35 करोड़ बचेंगे। अनुमानित 12% रिटर्न मिलने पर अगले 10 सालों में 4.22 करोड़ रु. का फंड बन सकता है। सेवानिवृत्ति तक वर्तमान सालाना खर्च बढ़कर लगभग 10.08 लाख रु. होने का अनुमान है। 60 वर्ष की आयु में निकासी शुरू करने के बाद भी 8% रिटर्न और 10% वार्षिक वृद्धि का उपयोग करते हुए 80 वर्ष की आयु तक आराम से अपने खर्चों को पूरा कर सकते हैं। फिर भी लगभग 11.75 करोड़ रुपए सरप्लस बचा रहेगा।

एक्सपर्ट: विजय माहेश्वरी,
फाउंडर, स्टॉकटिक कैपिटल

आपके मन में बचत, निवेश और टैक्स जैसे पर्सनल फाइनेंस से जुड़े कोई भी सवाल हों, तो यह क्यूआर कोड स्कैन करके भेजें। एक्सपर्ट इनके जवाब देंगे।

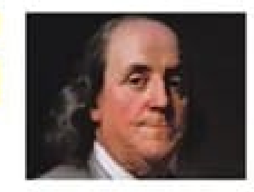

"आलस और घमंड राजाओं तथा सरकारों से भी ज्यादा टैक्स लगाते हैं।

- बेंजामिन फ्रैंकलिन

लाल दाढ़ी वाला वह राजा, हेनरी अष्टम, जो बाद में छह बीवियां बदलेगा, अभी युवा है। उसके सलाहकार ट्यूडर सब्सिडीज का आदेश सुना रहे हैं। यह ब्रिटेन का पहला पर्सनल वेल्थ टैक्स है। अधिकारी गांव-गांव जा रहे हैं। लोगों से पूछा जा रहा है कि उनके पास कितनी भेड़ें, कितनी जमीन है? अमीर चतुर हैं, वह क्यों बताने लगे! हर कोई खुद को सबसे गरीब बता रहा है।

टैक्स की तलवार

लेबर सरकार ने विदेशी संपत्ति पर भी 40 प्रतिशत इनहेरिटेंस टैक्स लगा दिया है। इसके बाद अप्रैल, 2025 में एक महीने में 691 अमीर ब्रिटेन छोड़कर चले गए।

अंशुमान तिवारी
वरिष्ठ पत्रकार

लक्ष्मी मित्तल की संपत्ति 15 अरब पाउंड है। अगर ब्रिटेन में रहेंगे, तो बच्चों को करीब छह अरब पाउंड इनहेरिटेंस टैक्स देना पड़ेगा। इसलिए तीस साल से ब्रिटेन में रह रहे लक्ष्मी मित्तल भी अब दुबई के नाइआ आइलैंड पर रहेंगे, जहां अब पूरी दुनिया के अरबपति बस रहे हैं।

नवंबर, 2025 के आखिरी सप्ताह में एक खबर दुनिया भर में फैल गई। भारतीय मूल के ब्रितानी अरबपति आर्सेलर मित्तल के मालिक, 15 अरब पाउंड की संपत्ति वाले लक्ष्मी नारायण मित्तल ब्रिटेन से जा रहे हैं। तीस साल तक वह ब्रिटेन में रहे। केंसिंग्टन पैलेस गार्डन की वह सड़क (जिसे 'बिलियनेयर्स रो' कहते हैं) पर एक महल खाली हो जाएगा, जिसका नाम था ताज मित्तल। मित्तल ब्रिटेन छोड़ रहे हैं, क्योंकि लेबर सरकार अमीरों पर नए टैक्स लगाने जा रही है, खासतौर पर उत्तराधिकार पर। अगर आपको लक्ष्मी मित्तल की रवानगी पर हैरत हो रही है, तो आइए टाइम मशीन में विराजिए, झट से 500 साल का सफर करके आते हैं।

टाइम मशीन की पहली मंजिल है 1515 यानी ट्यूडर्स युग। लाल दाढ़ी वाला वह राजा, हेनरी अष्टम, जो बाद में छह बीवियां बदलेगा, अभी युवा है। उसके सलाहकार ट्यूडर सब्सिडीज का आदेश सुना रहे हैं। यह ब्रिटेन का पहला पर्सनल वेल्थ टैक्स है। अधिकारी गांव-गांव जा रहे हैं। लोगों से पूछा जा रहा है कि उनके पास कितनी भेड़ें, कितनी जमीन है? अमीर चतुर हैं, वह क्यों बताने लगे! कोई अपनी जायदाद को 'टेम्परेरी पॉवर्टी' बताता है, तो कोई उसे रिश्तेदारों के नाम ट्रांसफर कर देता है। हर कोई खुद को सबसे गरीब बता रहा है। सौ साल बाद एलिजाबेथ प्रथम के जमाने तक यह टैक्स बहुत मामूली राजस्व ला सका, जबकि ब्रिटेन में अमीरों का सिक्का चल रहा था। भविष्य की कर व्यवस्था के लिए हेनरी का सबक था-जितना ज्यादा टैक्स लगेगा, लोग कमाई को उतना ज्यादा छिपाएंगे।

टाइम मशीन

अतीत से सुनें वर्तमान की धड़कन ■ हर पखवाड़े

टाइम मशीन अब दौड़ पड़ी है सत्रहवीं सदी की ओर। यह ब्रिटेन का स्टुअर्ट युग है। 1630 का दशक। किंग चार्ल्स प्रथम के खजाने में चूहे दौड़ रहे हैं। संसद तैयार है कि किंग के खर्च पर पाबंदी लगाई जाए। चार्ल्स ने समुद्री टैक्स यानी 'शिप मनी' थोप दी है। संसद से इजाजत भी नहीं ली। यह टैक्स शिप मनी है, मगर समुद्र से दूर वाले इलाकों को भी देना पड़ता है। अब इंग्लैंड का माहौल बिगड़ रहा है। जॉन हैंपडन नाम के एक जमींदार ने कोर्ट में केस लड़ा। हालांकि, वह हार गया, पर हीरो बन गया है। यही शिप मनी संसद और किंग के बीच खुले युद्ध, यानी सिविल वार की वजह बन गई।

हेनरी अष्टम

यह 30 जनवरी, 1649 है। नाराज जनता के सामने इंग्लैंड के सम्राट की गर्दन काट दी गई है। किंग की ताकत कम हुई और ऑलिवर क्रामवेल ने कॉमनवेल्थ बना दी है। मगर किंग कहां मानने वाले हैं! टाइम मशीन अब 1662 में उड़ रही है। चार्ल्स द्वितीय ने सिंहासन की ताकत वापस हासिल कर ली है। उन्होंने संपत्ति पर टैक्स का एलान कर दिया है। यह हर्थ टैक्स है, यानी हर चूल्हे पर सालाना कर। जितने चूल्हे, उतना अमीरी का सबूत। टैक्स लेने वाले घर के अंदर घुसकर चूल्हों की गिनती कर रहे हैं। अमीरों ने चूल्हे ईंटों से बंद करवा दिए। लोग भड़क रहे हैं और हम टाइम मशीन लेकर 1696 की तरफ बढ़ रहे हैं। विलियम थर्ड सिंहासन पर हैं। उन्होंने हर्थ, यानी चूल्हा टैक्स हटाकर खिड़की, यानी विंडो टैक्स लगा दिया है। अब जितनी खिड़कियां, उतना कर। अमीरों ने राजमिस्त्री बुलाए और खिड़कियां ईंटों से बंद करवा दीं। अब घरों में दिन में भी अंधेरा रहने लगा। इंग्लैंड के पुराने घरों में वे बंद खिड़कियां 330 साल बाद, यानी 21वीं सदी में पर्यटकों को दिखाई जाएंगी।

टाइम मशीन अब पहुंच रही है उस दौर में, जब पहली बार इनकम टैक्स अस्तित्व में आया। 1799 में नेपोलियन से जंग। विलियम पिट द यंगर ने पहला इनकम टैक्स लगा दिया है। 60 पाउंड से ऊपर की कमाई पर दो पैसे प्रति पाउंड, 200 पाउंड से ऊपर पर 10 फीसदी। 1802 में खत्म किया, 1803 में फिर शुरू। वाटरलू की लड़ाई के बाद 1816 में इनकम टैक्स खत्म कर दिया गया। अब इनकम टैक्स रिकॉर्ड लंदन में सार्वजनिक रूप से जलाए जा रहे हैं, ताकि लोग भरोसा करें कि सरकार उनकी जेब में हमेशा झांकती नहीं रहेगी। पिट द यंगर के प्रयोग से सरकारों को इनकम टैक्स की सूझ मिल गई है। यह 1842 का साल है। रॉबर्ट पील ने फिर इनकम टैक्स शुरू किया-सिर्फ सात पैसे प्रति पाउंड। इसके बाद इनकम टैक्स स्थायी हो जाएगा।

अब जरा 19वीं सदी की एस्टेट ड्यूटी से भी मिल ही लीजिए, जिसे (1894) में वित्त मंत्री सर विलियम हरकोर्ट ने शुरू किया है। यह मरने के बाद संपत्ति पर टैक्स है। सरकार ने देखा कि विशाल जमींदारियां और फैक्टरियां बिना टैक्स के बाप से बेटे को चली जाती थीं। मजदूरों की तनख्वाह पर टैक्स था, पर अमीरों की विरासत पर नहीं। हरकोर्ट ने इसे बदल दिया। यह 2025 के इनहेरिटेंस टैक्स का दादा है। वही टैक्स, जिसकी वजह से मित्तल ब्रिटेन छोड़ रहे हैं।

टाइम मशीन 1909 में है। डेविड लॉयड जॉर्ज ने 'पीपुल्स बजट' पेश किया है कि गरीबों की पेंशन के लिए ऊंची कमाई पर सुपरटैक्स, मरने के बाद और भी डेथ ड्यूटी, जमीन पर नया टैक्स घोषित किया गया है। हाउस ऑफ लॉर्ड्स में सैकड़ों ड्यूक और अर्ल बैठे हैं, जिनकी जेब पर सीधी चोट पड़ रही है। उन्होंने बजट रोक दिया। देश में हंगामा मचा और दो चुनाव हुए हैं।

अब 1911 आ गया है। आखिर में बजट पास हुआ और पार्लियामेंट एक्ट से लॉर्ड्स की वीटो पावर हमेशा के लिए कमजोर कर दी गई। टाइम मशीन 1915 में है। पहली बड़ी जंग शुरू हो गई है। ब्रिटेन में भारी टैक्स आ गए हैं। वित्त मंत्री लॉयड जॉर्ज ने ब्रिटेन के सबसे बड़े मीट व्यापारी विलियम वेस्टे की कर रियायत की अर्जी ठुकरा दी है। वेस्टे पूरा व्यापार, हजारों नौकरियां, सारे जहाज लेकर अर्जेंटीना चले गए हैं। यह 1909 का साल है। ब्रिटेन का टैक्स सिस्टम हमेशा के लिए बदलने वाला है। कोर्ट ने फैसला किया है कि कंपनी ब्रिटेन में हो सकती है, टैक्स कहीं और का दे सकती है। यही फॉर्मूला बरमूडा, केमैन और स्विट्जरलैंड तक फैल जाएगा।

यह 1970 का दशक है। ब्रिटेन की बीमार अर्थव्यवस्था में निवेश लाने के लिए 1799 की पुरानी नॉन-डॉम स्कीम को चमकाया गया है। विदेश में जन्मे हो, ब्रिटेन में रहो, पर 'परमानेंट होम' कहीं और दिखाओ। ब्रिटेन की कमाई पर कर दो, बाकी दुनिया की कमाई पर कुछ नहीं। सालाना 30-60 हजार पाउंड फीस देकर अरबों बचाओ। लक्ष्मी मित्तल भी तीस साल इसी वजह से ब्रिटेन में जमे रहे।

टाइम मशीन अब लंदन में उतरने की तैयारी में है। आपको पता चलेगा कि 2024 में लेबर पार्टी सत्ता में आई, तो वित्त मंत्री रेचल रीव्स ने नॉन-डॉम स्कीम खत्म कर दी। नए लोगों को सिर्फ चार साल की छूट, उसके बाद पूरी दुनिया की कमाई पर टैक्स लगेगा। अगर कोई दस साल से ज्यादा रह रहा है, तो विदेशी संपत्ति पर भी 40 प्रतिशत इनहेरिटेंस टैक्स। सरकार का हिसाब है कि हर साल 32 अरब पाउंड आएंगे। इसके बाद अप्रैल, 2025 में एक महीने में 691 अमीर ब्रिटेन छोड़कर चले गए। लक्ष्मी मित्तल की संपत्ति 15 अरब पाउंड। अगर ब्रिटेन में रहेंगे, तो बच्चों को करीब छह अरब पाउंड इनहेरिटेंस टैक्स देना पड़ेगा।

लक्ष्मी मित्तल की टैक्स रेसिडेंसी अब स्विट्जरलैंड होगी। वह अब रहेंगे दुबई के नाइआ आइलैंड पर, जहां अब पूरी दुनिया के अरबपति बस रहे हैं। टाइम मशीन फिलहाल लंदन में रुकेगी। फिर मिलते हैं अगले सफर पर...

अवश्यंभाविभावानां प्रतीकारो भवेद् यदि।
तदा दुःखैर्न बाध्यन्ते नलरामयुधिष्ठिराः॥

यदि होने वाली घटनाओं का प्रतिरोध सफलतापूर्वक किया जा सकता, तो राजा नल, श्रीराम और धर्मराज युधिष्ठिर विपत्तियों से कभी पीड़ित न हुए होते।

बेतालपञ्चविंशति (14.3)

प्रस्तुति : शास्त्री कोसलेंद्रदास

शरीर का हर संकेत कुछ कहता है

कार्ल जिमर

शरीर के कुछ हिस्से ऐसे हैं, जिनके बारे में विज्ञान भी निश्चित तौर पर नहीं कह सकता कि वहां नसें कैसे काम करती हैं। इन रहस्यों को समझने का सूत्र यही है कि शरीर के संकेतों को समझा जाए।

पिछले साल अर्देम पैटापाउटियन ने एक टैटू बनवाया। टैटू बनाने वाले ने उनके दाएं हाथ पर एक उलझी हुई रिबन जैसी आकृति बनाई, जो 'पीजो' नामक प्रोटीन का आरेख था। स्क्रिप्स रिसर्च इंस्टीट्यूट में न्यूरोसाइंटिस्ट डॉ. पैटापाउटियन ने 2010 में पीजो की खोज की थी, और इसके लिए उन्हें 2021 में नोबेल पुरस्कार मिला था। तीन साल बाद उन्होंने इस प्रोटीन को त्वचा पर टैटू के रूप में यादगार बनाने का फैसला किया। अब उनका ध्यान शरीर के भीतर से उठने वाले संकेतों पर है।

उनका नया शोध हमारे शरीर की छठी आंतरिक इंद्रिय, जिसे 'अंतर्ज्ञान' कहते हैं, को समझने के लिए है। वैज्ञानिक पता लगा रहे हैं कि अंतर्ज्ञान मस्तिष्क को हमारे शरीर की हरेक हलचल का विस्तृत चित्र कैसे देता है। यह अंतर्ज्ञान हमारी भावनाओं, व्यवहार, निर्णयों व बीमार महसूस करने के तरीके को भी प्रभावित करता है। चिंता और अवसाद जैसी मानसिक बीमारियां भी इसी को समझने में हमारी गड़बड़ी से हो सकती हैं। हर किसी को अंतर्ज्ञान की बुनियादी जानकारी होती है, चाहे दिल की धड़कन तेज होने का एहसास हो या पेट में तितलियों के फड़फड़ाने जैसी गुड़गुड़ हो।

तंत्रिका वैज्ञानिक लंबे समय से अंतर्ज्ञान को तंत्रिका तंत्र का काम मानते रहे हैं। सबसे पहले नोबेलजयी वैज्ञानिक चार्ल्स शेरिंगटन ने 1906 में 'इंटर-रिसेप्टर्स' का विचार दिया था, लेकिन वह मानते थे कि ये मस्तिष्क को बहुत कम संकेत भेजते हैं। पर आज की उन्नत तकनीकों से पता चलता है कि शरीर के अंग और नसें गहराई से जुड़े हुए हैं और भीतर से लगातार सूचनाएं भेजते रहते हैं। यदि पेट में कोई विषैला पदार्थ मिले, तो वेगस तंत्रिका तुरंत मस्तिष्क को उल्टी करने का आदेश भेजती है। मस्तिष्क इन संकेतों से सीखता भी है। जैसे नई चीज खाने पर शरीर यह तय करता है कि वह भोजन लाभदायक है या नहीं। बीमार व्यक्ति को देखकर प्रतिरक्षा प्रणाली का सक्रिय होना और सभी मोर्चे को खुद से संभलाना भी इसी का हिस्सा है।

वहीं कुछ शोधकर्ताओं को शक है कि अगर दिमाग शरीर से आने वाले संकेत को गलत समझता है, या यदि वे संकेत गड़बड़ हैं, तो दिमाग ऐसे आदेश भेज सकता है, जिनसे नुकसान हो सकता है। कुछ शोध तो मस्तिष्क के विशेष क्षेत्रों को 'री-ट्यून' करके उपचार की संभावनाएं खोज रहे हैं, लेकिन डॉ. पैटापाउटियन कहते हैं कि इसके लिए पहले अंतर्ज्ञान को गहराई से समझना जरूरी है।

©The New York Times 2025

जानना जरूरी है

संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

वशिष्ठ ने राजा धर्ममूर्ति से कहा कि आप दोनों ने लीलावती के घर निर्मल भावना से धार्मिक अनुष्ठान के लिए जो कार्य किया, उसी कारण आज आपको राजलक्ष्मी, आरोग्य, सौभाग्य और अपराजेयता प्राप्त हुई है।

राजा धर्ममूर्ति के तेज का रहस्य

यह पूर्वकाल की बात है। बृहत् नामक कल्प में धर्ममूर्ति नाम के एक महान राजा हुआ करते थे। उनकी देवराज इंद्र से घनिष्ठ मित्रता थी। वह इतने पराक्रमी थे कि सहस्र दैत्यों का अकेले संहार कर चुके थे। उनका तेज इतना प्रखर था कि सूर्य और चंद्र भी उनके सामने फीके पड़ जाते थे। युद्ध के मैदान में उन्होंने असंख्य शत्रुओं को परास्त किया और कभी किसी से पराजित नहीं हुए। वह इच्छा होने पर किसी भी रूप में प्रकट हो सकते थे। उनकी पटरानी का नाम भानुमती था। वह अनुपम सुंदरी मानी जाती थीं। देवांगनाएं भी उसके रूप के आगे पानी भरती थीं। धर्ममूर्ति उन्हें प्राणों से बढ़कर प्रेम करते थे और भानुमती भी राजा का यथोचित सम्मान करती थीं।

धूप आने दो

एक दिन राजा अपने विशाल राजसभागृह में बैठे थे। चारों ओर शांति थी और टिमटिमाते दीप प्रकाशित हो रहे थे। अचानक राजा के मन में एक प्रश्न उठा और वह अपने पुरोहित महर्षि वशिष्ठ के पास जाकर विनम्रता से बोले, 'भगवन्! ऐसा कौन-सा धर्म है, जिसके प्रभाव से मुझे इतनी उत्तम लक्ष्मी प्राप्त हुई है? मेरे शरीर में जो निरंतर तेज भरा रहता है, इसके पीछे कौन-सा कारण छिपा है?'

● वशिष्ठ जी मुस्कराए, मानो वर्षों पुरानी कोई स्मृति उनके मन में तैर उठी हो। वह बोले, 'राजन ! यह सब तुम्हारे पिछले जन्म के पुण्य का प्रताप है। मैं तुम्हें वह कथा कहता हूं।'

फिर वशिष्ठ जी ने कहना शुरू किया, 'प्राचीन काल में लीलावती नाम की एक वेश्या थी, पर मन से अत्यंत धर्मपरायण थी और भगवान शिव का भजन करती थी।

एक बार उसने पुष्कर में चतुर्दशी के दिन नमक का एक विशाल पर्वत बनाकर उस पर सोने की देव प्रतिमाएं स्थापित कीं और विधिपूर्वक दान किया। उस समय 'शुद्ध' नामक एक गरीब, पर सात्विक प्रवृत्ति का सुनार, लीलावती के घर नौकर का काम करता था। प्रतिमाएं बनाने का कार्य उसी को सौंपा गया था। उसने बड़ी श्रद्धा से देवी-देवताओं की सुवर्ण मूर्तियां गढ़ीं। वे सब इतनी अनुपम थीं कि देखते ही मन श्रद्धा से भर जाता था। सुनार ने इसे धर्म का कार्य समझकर मजदूरी लेने से भी मना कर दिया। शुद्ध की पत्नी भी लीलावती के घर में काम करती थी। नमक के पर्वत पर लगे स्वर्ण वृक्षों को चमकाने का कार्य सुनार की पत्नी ने ही किया था। पति-पत्नी ने पूरे तन-मन से उस अनुष्ठान को संपन्न कराया। कुछ समय बाद लीलावती अपने पुण्य से स्वर्ग चली गई। उस सुनार ने आपके, यानी राजा धर्ममूर्ति के, रूप में जन्म लिया है। आपका यह तेज, विजयशक्ति व अपराजेयता-सब उसी पुण्य का फल है।'

राजा धर्ममूर्ति यह सुनकर स्तब्ध रह गए। वशिष्ठ जी ने आगे कहा, 'और उसी सुनार की पत्नी लीलावती आपकी पत्नी, यानी रानी भानुमती, के रूप में पैदा हुई हैं। इसीलिए उनका रूप भी त्रिभुवन में अनुपम है। राजन्! आप दोनों ने उस समय जो निर्मल भावना से कार्य किया था, उसी कारण आज आपको राजलक्ष्मी, आरोग्य, सौभाग्य और अपराजेयता प्राप्त हुई है। यदि आगे भी ऐसा ही फल चाहते हैं, तो धान्य व अन्य पदार्थों के पर्वत बनाकर उनका दान कीजिए, जैसे लीलावती ने नमक का पर्वत दान किया था।'

यह सुनकर धर्ममूर्ति ने कहा, 'भगवन्! जैसा आपने कहा, मैं वैसा ही करूंगा।' और फिर धर्ममूर्ति ने विशाल पर्वतों के समान अन्न भंडार, घी, शक्कर, धान्य, वस्त्र तथा विभिन्न सामग्रियों के ढेर बनवाए और वशिष्ठ जी के निर्देशन में उनका विधिपूर्वक दान किया। इसके बाद आकाश से देवताओं ने राजा पर पुष्प-वर्षा की। उस पुण्य से राजा धर्ममूर्ति देवताओं द्वारा पूजित हुए और अंत में परमधाम को प्राप्त हुए।

पद्म पुराण के अनुसार, जो मनुष्य इस प्रसंग को श्रद्धापूर्वक सुनता है, वह भी पापमुक्त होकर स्वर्गलोक को प्राप्त होता है। अन्न आदि पर्वतों के दान का केवल पाठ भी दुःस्वप्नों का विनाश कर देता है, और जो पुरुष स्वयं इन पर्वतों का दान करता है, उसके अच्छे फल का तो वर्णन करना भी कठिन है।

अध्ययन कक्ष

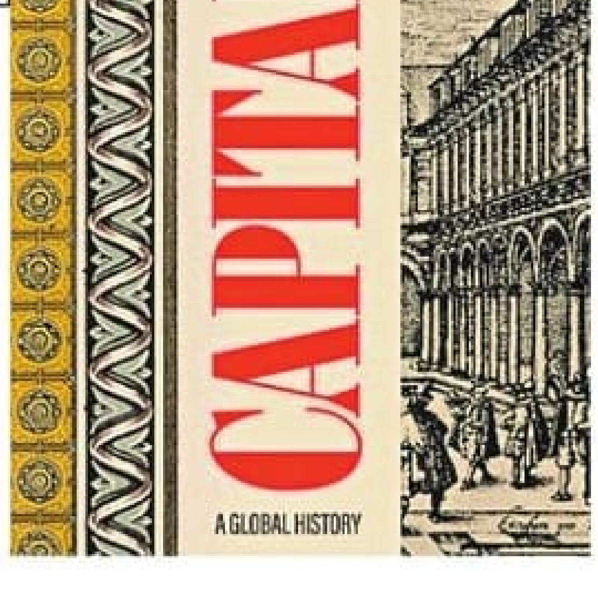

कैपिटलिज्मः ए ग्लोबल हिस्ट्री

लेखक : स्वेन बेकर्ट

प्रकाशक : पेंगुइन प्रेस

मूल्य : 3,642 रुपये (हार्डकवर)

दुनिया को आकार देने वाले पूंजीवाद की कहानी

पिछले ही महीने प्रकाशित हुई हार्वर्ड के इतिहासकार स्वेन बेकर्ट की यह चर्चित व बेस्टसेलर किताब उस विचारधारा के इतिहास को बताती है, जिसने हमारी दुनिया को आकार दिया है और आज भी दे रही है।

लगभग 900 साल पहले अदन के बंदरगाह शाह (जो अब यमन है) में शुरू होने वाले पूंजीवाद के बारे में हर किताब एक नई कहानी का वादा करती है। *कैपिटलिज्म* में हार्वर्ड के इतिहासकार स्वेन बेकर्ट ने इस वादे को पूरा किया है, और उस वैश्विक विचारधारा के बारे में बताया है, जिसने वह दुनिया बनाई, जिसमें हम रहते हैं।

शीतयुद्ध के दौरान, पूंजीवाद एक ऐसी वैश्विक ताकत थी, जिसका नाम लेने की हिम्मत नहीं होती थी। मुख्यधारा के अमेरिकी इतिहासकार अर्थव्यवस्था के बारे में बिना यह बताए कि यह कैसी है, बहुत कुछ लिखते रहे। इससे भी बुरी बात यह थी कि उन्होंने पूंजीवाद की अवधारणा का इस्तेमाल करने वालों को नीचा दिखाया। आज तक, बेकर्ट के ज्यादातर साथी इतिहासकार शायद ही कभी अपने स्थानीय, क्षेत्रीय या राष्ट्रीय इतिहास को उस बड़ी व्यवस्था से जोड़ते हैं, जिसका वे हिस्सा हैं। बेकर्ट ने अब हमेशा के लिए साबित कर दिया है कि उस वैश्विक विचारधारा का नाम लेना जरूरी है, ताकि उसकी पिछली और आज की बड़ी ताकत का पता चल सके।

पिछले इतिहास में आमतौर पर पूंजीवाद को एक यूरोपीय खोज माना गया है, लेकिन बेकर्ट दिखाते हैं कि पूंजीवाद कैसे एक वैश्विक विचारधारा के तौर पर उभरा। वह इसके बदलते और मजबूत स्वभाव को दिखाते हैं। सैकड़ों वर्षों में, व्यापारियों ने बंदरगाह वाले शहरों के अंदर पूंजी के छोटे-छोटे ठिकाने तथा भरोसे के नेटवर्क बनाए, जो दूर तक फैले हुए थे। उनका मानना है कि इसने उन्हें जमीनी स्तर के उन लोगों के विरोध से बचने में मदद की, जिन्हें लगता था कि 'पैसे से पैसा कमाना पाप या चोरी है।'

पूंजीवाद के कई इतिहास अमूर्त, संरचनात्मक और सिर्फ आर्थिक होते हैं, लेकिन बेकर्ट अपनी किताब को पाठकों के लिए रोचक बनाने की खातिर उन जगहों के बारे में बताते हैं, जहां लोगों ने अपनी किस्मत चमकाई। वह कंबोडिया की राजधानी नोम पेन्ह जाते हैं, जहां वह एक टेक्सटाइल श्रमिक का इंटरव्यू लेते हैं और उसके अनुभवों को अपनी कहानी में शामिल करते हैं।

बेकर्ट ने अपने इतिहास को ब्रिटिश भारत में गोदरेज परिवार जैसे खास पूंजीपतियों की जिंदगी से जोड़कर उसे मानवीय भी बनाया है। उनकी किताब उस खूनी युद्ध के मैदान पर भी आती है, जहां दो सदियों से ज्यादा समय से बौद्धिक, सांस्कृतिक व भू-राजनीतिक युद्ध चल रहा है कि पूंजीवाद क्या है और इसके उदय की कहानी हमें क्या बता सकती है। वह पूंजीवाद की पुरानी कहानियों की आलोचना करते हैं, यह दिखाते हुए कि कैसे बाजार के 'अदृश्य हाथ' दुनिया के मामलों को शांत नहीं करता, और कैसे पूंजीवाद का विकास 'स्वाभाविक' नहीं था। यह पूंजीवाद के बारे में एक शानदार किताब है, जो उन वैश्विक ताकतों के बारे में बताती है, जिन्होंने हमारी दुनिया को आकार दिया है और आज भी दे रही है।

अभियान

amarujala.com
अमर उजाला

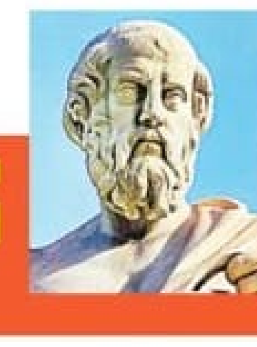

अच्छे कर्म स्वयं को शक्ति और दूसरों को अच्छे कर्म करने की प्रेरणा देते हैं।

- प्लेटो

Hindi@mithelesh
■ मिथिलेश बारिया

गोल चबूतरा

मां ने कुछ पैसे आटे के डिब्बे में छुपाए थे,
ख्वाब कुछ मेरे, ऐसे पकाए थे...

मेरे पुराने फटे हुए बटुए में बहुत सारा वक्त था,
उसके महंगे हैंडबैग में सिर्फ पैसे थे...

ख्वाहिशें सांस नहीं ले पातीं,
जरूरतों का इस घर में धुआं बहुत है...

स्टीम इंजन जहाज पहुंचा था कोलकाता

झरोखा
7 दिसंबर

आज के ही दिन 1825 में भाप से चलने वाला पहला नौकायन जहाज 'एसएस एंटरप्राइज' कोलकाता (तब कलकत्ता) पहुंचा था। यह घटना केवल तकनीकी उपलब्धि नहीं थी, बल्कि भारत में आधुनिक परिवहन व्यवस्था की शुरुआत का संकेत भी थी। उस समय तक समुद्री यात्रा मुख्य रूप से हवा और पाल पर निर्भर रहती थी, जिसके कारण यात्राएं लंबी, अनिश्चित और मौसम पर आधारित होती थीं। भाप से चलने वाले इंजनों ने समुद्री यात्रा को अधिक विश्वसनीय, तेज और नियंत्रित बनाया। 'एसएस एंटरप्राइज' के कोलकाता पहुंचने से ब्रिटिश भारत में व्यापार, प्रशासन और संचार को नई गति मिली। इससे यूरोप और भारत के बीच संपर्क मजबूत हुआ तथा गंगा एवं ब्रह्मपुत्र जैसी नदियों पर भाप के जहाजों के संचालन की संभावनाएं खुलीं। यह जहाज तकनीकी प्रगति का प्रतीक था, जिसने न केवल समुद्री परिवहन को बदला बल्कि औद्योगिक क्रांति के प्रभावों को भारत में गति दी। इस आगमन ने देश में स्टीमर सेवाओं की शुरुआत का मार्ग प्रशस्त किया और आने वाले समय में अनेक भापचालित जहाजों ने भारत के नदी और समुद्री मार्गों पर यात्रा को आधुनिक रूप दिया।

■ अखिलेश शर्मा, हिसार

इंटरनेट के विस्तार ने काम को आसान बनाया है, लेकिन इसने दफ्तर को घर तक पहुंचा दिया है। कर्मचारी हमेशा उपलब्ध रहने के दबाव में रहते हैं। ऐसे में 'राइट टू डिस्कनेक्ट' बिल पेश कर केरल सरकार ने सराहनीय पहल की है।

मानव को मशीन बनने से बचाने की पहल

थकान से बाहर आ सकेंगे लोग

चिट्ठी 1

वर्तमान कार्य संस्कृति में कार्यालय का समय समाप्त होने के बाद भी काम जारी रहता है। मोबाइल और इंटरनेट ने कार्यालय को घर तक पहुंचा दिया है, जिससे कर्मचारी लगातार उपलब्ध रहने के दबाव में रहते हैं। इसी पृष्ठभूमि में केरल ने देश का पहला 'राइट टू डिस्कनेक्ट' बिल पेश किया है, जो कर्मचारियों के निजी समय पर बढ़ते हस्तक्षेप को पहचानते हुए उन्हें काम के बाद कॉल, ई-मेल, संदेश या मीटिंग रिक्वेस्ट को अनदेखा करने का कानूनी अधिकार देता है।

हर जिले में शिकायत निवारण समितियां भी गठित की जाएंगी, ताकि नियोक्ताओं को जवाबदेह बनाया जा सके। लगातार जुड़े रहने की संस्कृति ने कर्मचारियों के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। निरंतर ई-मेल और वर्चुअल मीटिंग्स नींद, मानसिक शांति और निजी रिश्तों को कमजोर करती हैं। यह थकान धीरे-धीरे बर्नआउट, तनाव, अनिद्रा और एंग्जाइटी का रूप ले लेती है। अत्यधिक कार्यभार से दिल के दौरे जैसी घटनाएं भी बढ़ रही हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फ्रांस, बेल्जियम, आयरलैंड, स्पेन और इटली जैसे देशों ने पहले ही 'राइट टू डिस्कनेक्ट' लागू कर दिया है, जिससे कर्मचारियों के आराम समय की कानूनी सुरक्षा सुनिश्चित होती है। केरल की पहल यह संदेश देती है कि उत्पादकता का आधार कर्मचारियों का विश्राम और मानसिक संतुलन है। 'राइट टू डिस्कनेक्ट' मानव को मशीन बनने से बचाने वाला आधुनिक श्रमिक अधिकार है। इसलिए राज्यस्तरीय प्रयासों से आगे बढ़कर इसकी देशव्यापी कानूनी व्यवस्था आवश्यक है।

■ मोहम्मद जुबैर, दिल्ली

साइबर अपराध को रोकने के लिए मोबाइल सुरक्षा जरूरी

चिट्ठी 2

दुनिया के दूसरे देशों के साथ-साथ हमारे देश में भी साइबर क्राइम बढ़ रहा है। मोबाइल के जरिये भी साइबर धोखाधड़ी बढ़ती जा रही है। इससे हमें वित्तीय नुकसान तो होता ही है, साथ ही हमें मानसिक परेशानी भी झेलनी पड़ती है। आज हमारे देश में बहुत से काम चाहे वो बैंकिंग के हों, पैसे भेजने या प्राप्त करने के काम हों, नौकरी के लिए आवेदन करना हो या अन्य बहुत से काम मोबाइल के जरिये भी हो रहे हैं। ऐसे में अगर मोबाइल की सुरक्षा नहीं होगी तो इससे भी साइबर क्राइम हो सकता है, सरकार साइबर सुरक्षा के लिए बहुत से काम कर रही है।

इसी कड़ी में सरकार ने मोबाइल को सुरक्षित करने के लिए और इसमें साइबर सुरक्षा के लिए एक संचार साथी नाम की एक मोबाइल एप्लीकेशन सभी मोबाइल में इंस्टॉल करना जरूरी करने का आदेश मोबाइल कंपनियों को दिए, लेकिन जैसा कि हम सब जानते हैं कि अपने देश में हर मुद्दे पर राजनीति होती है। संचार साथी एप्लीकेशन पर भी विपक्ष ने हो-हल्ला किया, इसलिए सरकार को अपना फैसला वापस लेना पड़ा, लेकिन आम लोगों को चाहिए कि वे अपने मोबाइल में यह एप्लीकेशन जरूर इंस्टॉल करके रखें, जो मोबाइल की सुरक्षा के लिए जरूरी है, क्योंकि मोबाइल के जरिये अगर कोई साइबर क्राइम होता है तो इससे हमारा खुद का नुकसान तो होगा और इसकी भरपाई न तो सरकार करेगी और न ही विपक्ष।

■ राजेश कुमार चौहान, जालंधर

रिहायशी इलाकों में क्यों घुस रहे जंगली जानवर?

चिट्ठी 3

उत्तराखंड के पहाड़ी क्षेत्रों में गुलदार और भालू के हमले में कई लोग घायल हो चुके हैं तो कई जान गंवा चुके हैं। सवाल यह है कि जंगली जानवरों के हमले इतने क्यों बढ़ रहे हैं?

दरअसल, जंगलों को स्वार्थ हित में काटना आम हो गया है। स्वार्थी लोग अच्छे चारे के लिए जंगलों में आग लगा रहे हैं। ऐसे में जानवर जाएं तो जाएं कहां। वहीं जहां आदमखोर जानवरों के हमले होते हैं, वन विभाग द्वारा उन जानवरों को पकड़कर दूसरी जगह छोड़ दिया जाता है। अब किसी को घर से बेघर कर दिया जाए तो उसे दूसरी जगह ढलने में समय तो लगेगा ही। वे जानवर रिहायशी इलाकों का रुख कर लेते हैं। ये खामियां हमारी हैं, तो भुगतान भी हमें ही करना पड़ेगा। इससे बचने के लिए प्रभावित इलाकों में ट्रैपिंग टीमें लगाई जाएं, हमलावर वन्यजीवों की पहचान कर उन्हें नियंत्रित किया जाए और गांवों में नाइट पेट्रोलिंग तथा सुरक्षा उपकरण उपलब्ध कराए जाएं। सरकार को इसे गंभीरता से लेना चाहिए। साथ ही लोगों को जागरूक किया जाए और मानव-वन्यजीव संघर्ष कम करने के लिए वैज्ञानिक तरीके अपनाए जाएं, ताकि ऐसी घटनाओं पर प्रभावी रोक लग सके।

■ लक्ष्मण पुंडीर, श्रीनगर गढ़वाल

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

मेरठ से डॉ. सुधाकर आशावादी, मोहाली से अभिलाषा गुप्ता, फिरोजाबाद से शैलेंद्र कुमार चतुर्वेदी, आजमगढ़ से अवनीश कुमार गुप्ता, मेरठ से डॉ. नरेन्द्र टोंक, बरेली से बीसी उपाध्याय, झाबुआ से अरविन्द रावल, शाजापुर से मनमोहन राजावत, इंदौर से अमृतलाल मारू 'रवि', सूरत से कांतिलाल मांडोत, रायपुर से संजीव ठाकुर, उज्जैन से हेमा हरि उपाध्याय 'अक्षत'।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

कुछ अलग

ज्वालामुखी के पत्थरों से बनीं मूर्तियां

चिली में एक ऐसा द्वीप है, जहां की 'मोवाई मूर्तियां' इतिहासकारों के लिए आज भी रहस्य बनी हुई हैं।

ईस्टर द्वीप, जिसे स्थानीय भाषा में 'रापानुई' कहा जाता है, दक्षिण-पूर्व प्रशांत महासागर में स्थित एक रहस्यमय और ऐतिहासिक पोलिनेशियाई द्वीप है। यह द्वीप 'पोलिनेशियाई त्रिकोण' के सबसे दक्षिण-पूर्वी बिंदु पर स्थित होने के कारण भौगोलिक और सांस्कृतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। अनोखी सांस्कृतिक विरासत और प्राकृतिक सौंदर्य के कारण यह द्वीप विश्वभर के इतिहासकारों, पुरातत्वविदों और पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

ईस्टर द्वीप वर्तमान में 'चिली का एक विशेष प्रशासनिक क्षेत्र' है। 1888 में इस द्वीप का चिली में विलय हुआ, जिसके बाद यह चिली की राजनीतिक व्यवस्था के अंतर्गत आ गया। हालांकि इसके बावजूद रापानुई लोगों की पारंपरिक संस्कृति, भाषा और जीवनशैली आज भी विशेष रूप से संरक्षित है। चिली सरकार और स्थानीय समुदाय मिलकर द्वीप की सांस्कृतिक धरोहर को बचाने का प्रयास करते हैं।

यह द्वीप '887 मोवाई मूर्तियों' के लिए प्रसिद्ध है। विशाल पत्थर की ये मूर्तियां, जिनका आकार कई मीटर ऊंचा है, प्राचीन 'रापानुई सभ्यता' की मानी जाती हैं। इतिहासकारों का मानना है कि ये मूर्तियां लगभग 1100 से 1600 ई. के बीच बनाई गई थीं। इनका निर्माण ज्वालामुखीय पत्थर से किया गया और इन्हें द्वीप के विभिन्न भागों में खड़ा किया गया। माना जाता है कि मोवाई मूर्तियां पूर्वजों या महत्वपूर्ण व्यक्तियों का प्रतिनिधित्व करती थीं और इनका आध्यात्मिक तथा सामाजिक महत्व अत्यधिक था। मोवाई मूर्तियों का निर्माण और परिवहन आज भी एक रहस्य बना हुआ है। इनकी संरचना से यह स्पष्ट होता है कि रापानुई लोगों के पास उन्नत तकनीकी कौशल और सामाजिक संगठन था। यही कारण है कि ईस्टर द्वीप को 'यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल' के रूप में मान्यता दी गई है।

■ मोहित दत्ता, गाजियाबाद

बहस के लिए दरवाजे और खिड़कियां खुली रहें

संसदीय बहसें जनता की आवाज को मंच प्रदान करती हैं, जिससे सरकार जवाबदेह बनती है, पारदर्शिता बढ़ती है। विभिन्न विचारों के बीच बहस और चर्चा बेहतर कानून और नीतियों के निर्माण में सहायक होती हैं, जो देश के लिए हितकारी होती हैं। संसद में चर्चा से लोकतंत्र मजबूत होता है।

पी चिदंबरम
पूर्व केंद्रीय मंत्री

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक दिसंबर, 2025 को संसद के शीतकालीन सत्र से पहले अपने परंपरागत भाषण में 'एक-दो दलों' के सांसदों से यह याद रखने का आग्रह किया कि संसद एक ऐसी जगह है, जहां 'नाटक नहीं, काम होना चाहिए'।

प्रधानमंत्री का संबोधन

इस बार सत्र की शुरुआत अच्छी नहीं रही। यह बताने के लिए प्रधानमंत्री का संबोधन देना उचित रहेगा। "दुर्भाग्य से, एक-दो राजनीतिक दल ऐसे हैं, जो अपनी हार को पचा नहीं पाते। मुझे लगा कि बिहार के नतीजे आए काफी समय हो गया है और वे ठीक हो गए होंगे, लेकिन उनके बयानों को सुनकर ऐसा लगता है कि हार अब भी उन्हें परेशान कर रही है। देश में नारे लगाने की जगह की कोई कमी नहीं है। आप जहां हार चुके हैं, वहां पहले ही नारे लगा चुके हैं। आप वहां भी नारे लगा सकते हैं, जहां अगली बार हारने वाले हैं, लेकिन हमें यहां नारों पर नहीं, नीतियों पर काम करना है।" उन्होंने कुछ राज्य विशेष पार्टियों पर भी कटाक्ष किया, "कुछ राज्यों में वर्तमान सरकार के खिलाफ इतना असंतोष है कि सत्ता में रहने के बाद नेता जनता के बीच में नहीं जाते हैं...वे संसद में आकर अपनी नाराजगी निकालते हैं।"

आम तौर पर हर सत्र की शुरुआत में सरकार दुनिया को यह बताने की घोषणा करती है कि उसके पास छुपाने के लिए कुछ नहीं है और वह संवाद के लिए तैयार है। वह संसद में किसी भी विषय पर चर्चा के लिए तैयार है, लेकिन इसमें एक शर्त है। शर्त यह है कि चर्चा 'नियमों के अनुसार' होगी और नियम नियमावली की किताब में लिखे हैं, लेकिन नियमों की व्याख्या और उनका प्रयोग अध्यक्ष (स्पीकर या चेयरमैन) के हाथ में होता है। इसमें अक्सर सरकार के फ्लोर लीडर की सलाह ली जाती है। जब विपक्ष अपना एजेंडा बिजनेस एडवाइजरी कमेटी में रखता है तो हर विषय पर सरकार आपत्ति करती है।

चर्चा के नियम

सरकार के एजेंडे में बिल और बजट होते हैं। प्रश्नकाल किसी चर्चा की अनुमति नहीं देता। विपक्ष चाहे तो एक स्वतंत्र और खुली चर्चा, स्थगन प्रस्ताव, अल्पकालिक चर्चा या ध्यानाकर्षण सूचना देकर करा सकता है। चर्चा के लिए यह सभी पारंपरिक संसदीय तरीके हैं और इनके

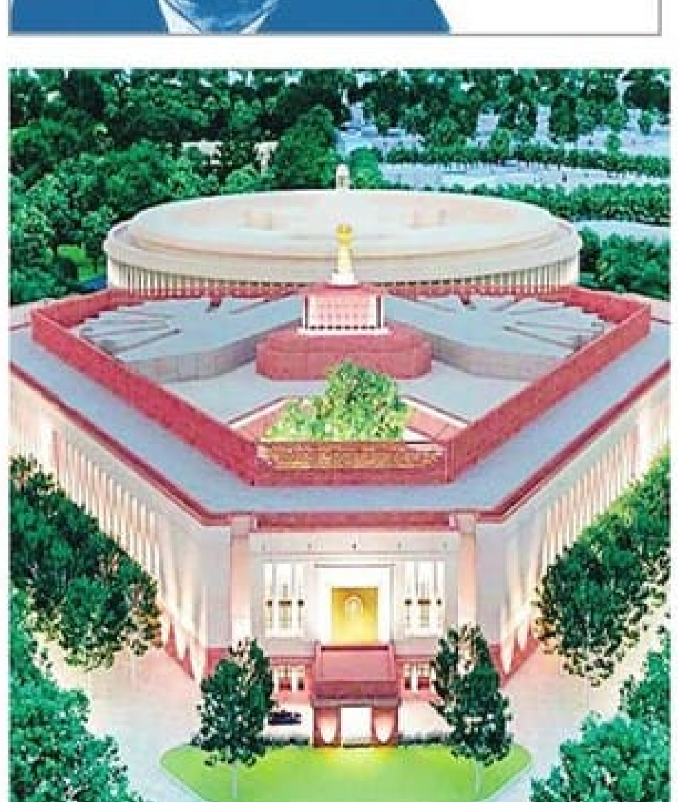

लिए नियम बने हुए हैं। स्थगन प्रस्ताव को सरकार की आलोचना माना जाता है, हालांकि इनके लिए नियम हैं-

- स्थगन प्रस्ताव की सूचना लोकसभा में नियम 57 के अनुसार दी जाती है। यह हाल ही में हुई किसी घटना के विशेष मामले से जुड़ी होनी चाहिए, जिसका संबंध भारत सरकार की जिम्मेदारी से हो।
- राज्यसभा में सदन के कामकाज को निलंबित करने की अनुमति नियम 267 देता है, ताकि किसी बहुत ही महत्वपूर्ण मुद्दे पर चर्चा की जा सके।
- अल्पकालिक चर्चा के लिए लोकसभा में नियम 193 और राज्यसभा में नियम 176 है। किसी तत्काल सार्वजनिक महत्व के मुद्दे पर इन नियमों के तहत चर्चा की जा सकती है।
- ध्यानाकर्षण सूचना देना सबसे आसान है। लोकसभा में नियम 197 और राज्यसभा में नियम 180 के अधीन कोई सदस्य किसी मंत्री का ध्यान किसी अत्यंत महत्वपूर्ण सार्वजनिक मुद्दे की ओर खींच सकता है और मंत्री को उस पर बयान देना अनिवार्य है।

मैं यहां जो आंकड़े दे रहा हूं, उनसे पता चलता है कि विपक्ष के लिए धीरे-धीरे किस तरह हर दरवाजा और खिड़की बंद कर दी गई है। पिछले कुछ सालों में स्थिति और खराब हुई है।

साल	स्थगन लो.स	प्रस्ताव रा.स	अल्पकालिक लो.स	बहस रा.स	ध्यानाकर्षण लो.स	सूचना रा.स
2014	...	...	9	6	9	4
2015	1	...	8	4	3	5
2016	...	...	9	9	4	10
2017	...	...	4	7	1	3
2018	...	...	1	2	...	2
2019	...	...	4	4	...	6
2020	...	...	2	1	...	...
2021	...	...	3	3	1	...
2022	...	...	5	2	...	...
2023	...	...	...	2	...	...
2024	...	...	2	3	...	1
2025 (नवंबर तक)	...	...	...	...	1	...

स्रोत : प्रिज्म

संवाद, चर्चा, बहस का विरोध

आंकड़े अपनी कहानी खुद बयां कर रहे हैं। भाजपा सरकार ने पहले कार्यकाल में स्थगन प्रस्ताव का विरोध किया, क्योंकि उसे अपनी छवि बिगड़ने का डर था। हालांकि सरकार अल्पकालिक चर्चा और ध्यानाकर्षण सूचना के प्रति सहनशील थी। दूसरे कार्यकाल में असहिष्णुता साफ हो गई, चर्चा का दरवाजा बंद कर दिया गया, लेकिन खिड़कियां खुली रहीं। अब तीसरे कार्यकाल में मोदी सरकार ने खिड़कियां भी बंद कर दी हैं। क्या हमें यह मान लेना चाहिए कि कोई भी महत्वपूर्ण सार्वजनिक मुद्दा नहीं था, जिसकी चर्चा सदन में होनी चाहिए थी? यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि राज्यसभा में बहस लोकसभा की तुलना में कम हो पाई। कई सदस्य इसके लिए अध्यक्ष को जिम्मेदार मानते हैं। सितंबर में राज्यसभा में नए अध्यक्ष ने कार्यभार संभाला है। इसके अलावा 2025 का शीतकालीन सत्र बहुत छोटा है, इसलिए किसी नतीजे पर पहुंचना जल्दबाजी होगी। तो क्या सरकार इस बात में विश्वास नहीं करती है कि संसद में चर्चा से लोकतंत्र मजबूत होता है?

Licensed by The Indian Express Limited

क्या हवाई यात्री बेचारे ही बने रहेंगे?

सतीश सिंह

खुला आकाश

बीते दिनों इंडिगो एयरलाइन की बदइंतजामी का खामियाजा यात्रियों को भुगतना पड़ा। यह घटना साबित करती है कि हवाई यात्री कितने असहाय हैं। जरूरत है कि सरकार संकट के समय किराया नियंत्रण सुनिश्चित करे, एयरपोर्ट सुविधाएं बढ़ाए और यात्रियों के अधिकार मजबूत बनाए, ताकि ऐसी अव्यवस्था दोबारा न हो।

सैकड़ों फ्लाइट के रद्द होने और लंबे इंतजार की वजह से 2 और 3 दिसंबर 2025 का दिन इंडिगो एयरलाइन से यात्रा करने वाले हजारों यात्रियों के लिए नाईटमेयर साबित हुआ, जिसका गवाह रहा भुवनेश्वर, मुंबई, बंगलूरू, अहमदाबाद, दिल्ली आदि एयरपोर्ट। एयरपोर्ट पर अफरा-तफरी का माहौल था, न बैठने की व्यवस्था थी, न खाने की और न ही पेयजल का इंतजाम, मोबाइल चार्जिंग के लिए लंबी लाइन लगी थी, लोग जमीन पर बैठे व लेटे हुए थे, बस स्टैंड और रेलवे स्टेशन से भी बुरा हाल था। कुछ यात्री लंबे इंतजार और एयरपोर्ट पर कुव्यवस्था के कारण बीमार हो गए। उन्हें अस्तपताल जाना पड़ा, बुजुर्गों, बच्चों और महिलाओं की हालत बदतर और दयनीय थी।

किसी की कनेक्टिंग फ्लाइट छूटी, तो किसी का ऑफिस तो किसी की बिजनेस मीटिंग, दूल्हा मंडप तक नहीं पहुंच पाया, कमरों की बुकिंग कैंसिल करनी पड़ी और कई दूसरी तरह के नुकसान झेलने पड़े। मानसिक प्रताड़ना से भी गुजरना पड़ा। दूसरी तरफ गिद्ध की तरह दूसरे एयरलाइन्स यात्रियों की जेबों पर नजर गड़ाए हुए थे। भुवनेश्वर से मुंबई का किराया 15,000-48,000 रुपये तक पहुंच गया था। दूसरे शहरों के लिए भी किराया आसमान को छू रहा था। टैक्सी वाले मनमाना किराया वसूल रहे थे तो एयरपोर्ट के आस-पास स्थित होटलों ने भी बहती गंगा में हाथ धोते हुए कमरे का किराया बढ़ा दिया था।

हवाई यात्री बेचारे और निरीह थे। इंडिगो एयरलाइन का कोई भी सीनियर अधिकारी मौके पर उपलब्ध नहीं था। जो थे, वे लगातर झूठ बोल रहे थे। उदाहरण के तौर पर 2 दिसंबर को भुवनेश्वर से मुंबई जाने वाली फ्लाइट संख्या 6ई-5127 जो रात्रि के 9 बजे उड़ान भरने वाली थी के बारे में पहले तो बताया कि यह लेट है, फिर 11:40 बजे बताया गया कि यह फ्लाइट मुंबई से भुवनेश्वर के लिए प्रस्थान कर चुकी है, पुनः 11:44 बजे उक्त फ्लाइट को कैंसिल कर दिया गया।

भुवनेश्वर एयरपोर्ट पर फ्लाइट कैंसिल होने के बाद प्लान "बी" के तहत वैसे फ्लाइट में यात्रा करने के ऑफर यात्रियों को दिए गए, जो स्वीकार्य नहीं थे। यही नहीं, यात्रियों से लगातार से लगातार झूठ बोला गया और भ्रामक सूचना दी गई। क्या इंडिगो एयरलाइन के सॉरी बोलने या माफी मांगने से यात्रियों द्वारा सही गई मानसिक प्रताड़ना और आर्थिक नुकसान की भरपाई हो जाएगी? सबसे दिलचस्प और दुखदाई है, इंडिगो एयरलाइन के प्रवक्ता द्वारा यह कहना कि मामूली तकनीकी गड़बड़ियों, मौसम की प्रतिकूल स्थिति, हवाई अड्डे पर भीड़-भाड़ और नए क्रू रोस्टरिंग नियमों (एफडीटीएल) को मूर्त रूप देने के कारण कुछ उड़ानों को रद्द करना पड़ा, जबकि कुछ में देरी हुई। क्या यह बयान असंवेदनशील और यात्रियों के घाव पर नमक छिड़कने वाला नहीं है?

एफडीटीएल 1 नवंबर से लागू किया गया, लेकिन एविएशन रेगुलेटर, डायरेक्टरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन (डीजीसीए) ने इसे अमलीजामा पहनाने के लिए सभी एयरलाइन्स को 2 सालों का समय दिया था। दूसरे एयरलाइंस ने इसे समय से अमलीजामा पहनाया, जिससे उन्हें किसी भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ रहा है। इंडिगो एफडीटीएल के नियमों को अच्छी तरह से जानता है और बीते सालों से इसे लागू करने की जगह कॉस्ट-कटिंग को प्राथमिकता देती रही। एयरलाइन का मामले में यह कहना कि उसे इस संभावित टर्बुलेंस का पता नहीं था सरासर झूठ और बेसिर पैर का तर्क है। बहरहाल, इंडिगो का ऑन-टाइम परफॉर्मेंस स्कोर 80 प्रतिशत से गिरकर 2 दिसंबर को 35 प्रतिशत रह गया, जो सभी भारतीय एयरलाइन्स में सबसे कम था।

दिल्ली हवाई अड्डे पर 2 दिसंबर को दोपहर 12 बजे से शाम 5 बजे के बीच इंडिगो की करीब 38 उड़ानें रद्द की गईं। इनमें घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों उड़ानें शामिल थीं। मुंबई हवाई अड्डे पर इस दौरान 33 उड़ानें रद्द की गईं। विगत तीन दिनों में इंडिगो ने 300 से ज्यादा उड़ानें रद्द की।

देखा जाए तो हवाई यात्री बस या रेलवे की यात्री से भी ज्यादा बेचारे, मजबूर और असहाय हैं। फ्लाइट के खिलाफ या कर्मचारियों से बहस करने से डरते हैं, क्योंकि उन्हें ब्लैकलिस्ट होने का डर होता है। मौजूदा परिदृश्य में सरकार को समीचीन कदम उठाने की जरुरत है।

कांकेर

कांग्रेस नेता की मौत की मजिस्ट्रेट जांच

पत्रिका ब्यूरो @रायपुर.कांकेर के कांग्रेस नेता जीवन ठाकुर की संदिग्ध परिस्थितियों में हुई मौत की जांच प्रथम श्रेणी न्यायिक मजिस्ट्रेट स्वर्णलता ओम यादव करेंगी। रायपुर के मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट आनंद कुमार सिंह ने इसका आदेश जारी किया है। इसमें कहा गया है कि विचाराधीन बंदी जीवन को उपचार करने के लिए जिला जेल कांकेर से 2 दिसंबर को रायपुर केन्द्रीय जेल शिफ्ट किया गया था। इस बीच तबीयत ज्यादा खराब होने पर जेल चिकित्साधिकारी के परामर्श पर 4 दिसंबर को सुबह 4.20 बजे आंबेडकर अस्पताल भेजा गया था। जहां उनकी मृत्यु हो गई। इसके कारणों की जांच धारा 176 दण्ड प्रक्रिया संहिता/धारा 196 भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 के तहत नियमानुसार कर प्रतिवेदन देने को कहा गया है। बता दें कि डीजी जेल हिमांशु गुप्ता ने कांकेर की सहायक जेल अधीक्षक रेणु ध्रुव को हटाकर जगदलपुर जेल अटैच कर दिया है।

बिलासपुर

नशे में दौड़ाई एसयूवी, कई वाहन क्षतिग्रस्त

पत्रिका ब्यूरो @बिलासपुर. तेज रफ्तार, नशा और लापरवाही- इन तीनों के खतरनाक मेल ने शुक्रवार देर रात 27-खोली रोड में तबाही मचा दी। एक एसयूवी चालक ने न सिर्फ बाइक और कारों को उड़ा दिया, बल्कि सीधे एक मकान की दीवार तोड़ते हुए रुका। पारिजात कैसल रिंग रोड-2 निवासी जयंत जोशी पहले पुलिस विभाग में फॉलो गार्ड की ड्यूटी पर तैनात रह चुका है, नशे में वाहन चलाते हुए नियंत्रण खो बैठा। घटना रात करीब 1.30 बजे की है। आरोपी जांजगीर-चांपा से बुकिंग कर लौट रहा था। रास्ते में उसने शराब पी और अपनी एसयूवी (सीजी-10 सीबी 8777) तेज रफ्तार में दौड़ा रहा था। इसी दौरान उसने सबसे पहले एक बाइक को टक्कर मारी। पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया है।

किसान द्वारा आत्महत्या का प्रयास दुर्भाग्यजनक: उत्तम

रायपुर @ पत्रिका. आम आदमी पार्टी के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष उत्तम जायसवाल ने महासमुंद के किसान द्वारा टोकन न मिलने पर आत्महत्या की कोशिश को दुर्भाग्यजनक बताया है। उनका आरोप है कि प्रदेश के किसानों का सरकार धान खरीदना नहीं चाह रही है। टोकन के लिए कई दिनों तक इंतजार करना पड़ रहा है, जिससे किसानों में चिंता बनी हुई है। प्रदेश में ज्यादातर किसानों का रकबा भी काट दिया गया है। कुछ किसानों का रकबा जहां 10 एकड़ था, वहां कटकर एक एकड़ कर दिया गया है। कहीं बारदाना नहीं है तो कहीं कांटा तक सरकार उपलब्ध नहीं करा पा रही है। ज यादातर समितियों में किसानों द्वारा जितना कर्ज लिया गया है सिर्फ उतना ही कीमत का धान खरीदा जा रहा है और बाकी धान का कलर खराब या अन्य कारण बताकर वापस भेज दिया जा रहा है।

एमडी-एमएस कोर्स के लिए दोबारा पंजीयन शुरू, कल तक करा सकेंगे

रायपुर @ पत्रिका. गजट नोटिफिकेशन के 5 दिन बाद चिकित्सा शिक्षा विभाग ने एमडी-एमएस कोर्स के लिए शनिवार से दोबारा रजिस्ट्रेशन शुरू कर दिया है। नीट पीजी क्वालिफाइड छात्र 8 दिसंबर की आधी रात तक ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन कर सकेंगे। हाईकोर्ट के 100 फीसदी स्थानीय आरक्षण को रद्द करने के बाद विभाग ने 22 नवंबर को पंजीयन रोक दिया था।

प्रदूषण का कहर प्रदूषण रोकने के लिए बनाई जा रही कार्ययोजना, दो गाड़ियां पहुंची, दो के लिए टेंडर

59 लाख की गाड़ियों से शहरी प्रदूषण को हवा में ही 'ढेर' करने का दावा

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

रायपुर. प्रदूषण की मार झेल रही राजधानी में अब खतरनाक गैसों व धूल के छोटे-बड़े कणों को हवा में ही खत्म करने का प्लान है। नगर-निगम ने दिल्ली की तर्ज पर हाई स्पीड मिस्ट स्प्रे गाड़ियों के जरिए प्रदूषण को नियंत्रित करने की कार्ययोजना बनाई है। निगम का दावा है कि यह पीएम-10 और पीएम 2.5 को मिस्ट (कुहासा) स्प्रे के माध्यम से हवा में ही खत्म कर देगा। नगर-निगम ने 59 लाख लागत से दो हाई स्पीड मिस्ट स्प्रे गाड़ियां खरीदी हैं। दो अन्य गाड़ियों के लिए टेंडर जारी किया गया है। रायपुर ऐसा पहला नगर-निगम माना जा रहा है, जहां मेट्रो शहरों की तर्ज पर प्रदूषण पर काबू पाने के लिए ऐसी योजना बनाई जा रही है। रायपुर की स्थिति पर गौर करें तो भाठागांव बस स्टैंड से लेकर सिलतरा तक प्रदूषण की मार से लोग त्रस्त हैं। रायपुर और बिरगांव नगर-पालिका की हजारों की आबादी प्रदूषण के बीच जीने को मजबूर है। विशेषज्ञों का कहना है कि मिस्ट स्प्रे गाडियां कुछ हद तक प्रदूषण को काबू में कर सकती हैं, लेकिन शासन-प्रशासन को बड़ी कार्ययोजना पर काम करना चाहिए। प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों पर कार्यवाही नहीं के बराबर है।

खबर का असर

पत्रिका
29 नवंबर 2025 को प्रकाशित

अधिकारियों ने कहा...
पीएम 10 और पीएम 2.0 को हवा में ही खत्म करने की क्षमता

ऐसे काम करता है सिस्टम

इस तकनीक को एयरबॉर्न डस्ट सब्रेशन टेक्नोलॉजी के नाम भी जाना जाता है। गाड़ियों में फिट मशीन के नोजल से निकला माइक्रो और हाई स्पीड मिस्ट हल्का होता है। यह वायुमंडल में पीएम 10 और पीएम 2.5 (बड़े व छोटे कण) से चिपक जाता है। धूल भारी होने की वजह से यह जमीन पर गिर जाता है।

वाहन की विशेषता

- **360** डिग्री रोटेशन वाली गन
- **30-50** मीटर दूरी तक फैलाव
- **हवा** की गति नियंत्रण की क्षमता।
- **हाई** प्रेशर पंप से पानी को 10 से 30 माइक्रोन मिस्ट बदलता है।
- **800** से 1000 आरपीएम की गति से मिस्ट फेंकता है।

1000 लीटर की क्षमता: इस वाहन में 1000 लीटर पानी स्टोरेज करने की क्षमता होगी। अधिकारियों के मुताबिक मिस्ट (कुहासा) के हाई स्पीड प्रेशर से उस क्षेत्र में 80 प्रतिशत प्रदूषण में काबू पाया जा सकता है।

यहां ज्यादा प्रदूषण

1. टाटीबंध चौक
2. भाठागांव
3. जयस्तंभ
4. तेलीबांधा
5. शारदा चौक
6. कोतवाली
7. कालीबाड़ी
8. पचपेड़ी नाका
9. शंकर नगर
10. रेलवे स्टेशन

वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए केंद्रीय योजना के अंतर्गत दो गाड़ियां पहुंची हैं। वहीं दो गाड़ियों की खरीदी के लिए टेंडर जारी किया गया है। हाई स्पीड मिस्ट स्प्रे वाहनों का उपयोग शहर के ज्यादा प्रदूषित क्षेत्रों में किया जाएगा।
-मीनल चौबे, महापौर, रायपुर

पत्रिका पहुंचा अमेरा

दान पर खामोशी

ग्राउंड जीरो पर सिर्फ मशीनों की दहाड़

पत्रिका ग्राउंड रिपोर्ट

प्रणय राज सिंह राणा
patrika.com

अंबिकापुर. परसोड़ीकला की ढलान पर खड़े उस झाड़ी के बाड़े के पास आज सन्नाटा है। बड़ी-बड़ी मशीन ज़मीन समतलीकरण में लगी हैं। कुछ ग्रामीण अपनी खेतों की फसल काटकर ले जाते नज़र आए। इलाका छावनी में तब्दील दिखा। अफसरों की आमदरफ्त के बीच इलाके में केवल मशीनों की आवाज सुनाई दे रही थी।

दो दिन पहले यही जगह टकराव का केंद्र बनी थी। इस जगह पर अब केवल टूटी टहनियां और बिखरे पत्थर दिखे। इसी जगह पर बुधवार को भीड़ अचानक उग्र हो गई थी। पुलिस, प्रशासन और एसईसीएल का दल जैसे ही इस झाड़ी के बाड़े को लांघते हुए आगे बढ़ा, ग्रामीणों की भीड़ घेरा बनाकर खड़ी हो गई। देखते ही देखते ग्रामीणों ने पथराव और डंडों, गुलेल से हमला शुरू कर दिया था। बाड़ा उस दिन केवल झाड़ियों का घेरा नहीं था, ग्रामीणों के लिए यह विरोध की सीमा बन चुका था।

जो हो रहा वो सही नहीं...: रिपोर्टिंग के दौरान पत्रिका की टीम घटनास्थल पर पहुंची तब ग्रामीण वहां नहीं मिले। केवल कुछ मजदूर और पुलिसकर्मी क्षेत्र की निगरानी कर रहे हैं। पत्रिका ने गांव पहुंचकर कुछ ग्रामीणों से बातचीत की कोशिश की, लेकिन वे खुलकर कुछ भी कहने को तैयार नहीं हुए। वे समूह में खड़े हो जरूर सुनते रहे, पर बोलने से बचते रहे। एक ग्रामीण ने बस इतना ही कहा कि जो हो रहा है वो सही नहीं है। जो हो रहा है वह न्यायसंगत नहीं है।इसके आगे वे कुछ नहीं बोले। न नाम बताने को तैयार, न कैमरे पर कुछ कहने को।

भीड़ पीछे हट चुकी है... उस दिन यहीं से फूटा था गुस्सा

जमीन पर कब्जा दिलाने पहुंची टीम पर किया था हमला

आंसू गैस के गोलों के बाद संभली थी स्थिति...

टकराव की दो अलग दलीलें

एसईसीएल का कहना है कि 2016 में अधिग्रहण पूरा हो चुका है और वे कानून के तहत आगे बढ़ रहे हैं।

VS

ग्रामीणों का कहना है- अधिग्रहण हो गया तो नौकरी-मुआवजा-पुनर्वास अब भी अधूरा है।

ग्रामीणों का तर्क

- **2001** में हुए भूमि अधिग्रहण के बाद जन्मे लोगों को भी नौकरी दी जाए।
- **जिन** किसानों की जमीनें गईं उन परिवार के सभी सदस्यों को नौकरी दें।
- **2016** के बाजार भाव से जमीनों का वैल्युएशन निकालकर मुआवजा दिया जा रहा है। इसे 2025 के हिसाब से कैलकुलेट करें।
- ग्राम सभा की सहमति नहीं ली गई।

एसईसीएल का तर्क

- **एक्ट** के अनुसार अधिग्रहण के बाद जन्मे लोगों को नौकरी दिए जाने का प्रावधान नहीं है।
- **2 एकड़** भूमि के अधिग्रहण में परिवार के 1 सदस्य को ही नौकरी दी जा सकती है।
- हमने 2016 में ही प्रभावितों को नोटिस देकर राशि लेने कहा था। उन्होंने लिया नहीं अब नाजायज मांग कर रहे हैं।
- एक्ट में ग्राम सभा की अनुमति जरुरी नहीं। मुआवजा दिए बिना खनन का प्रावधान है।

सीबीए के तहत काम कर रहे हैं: अमेरा खदान का एक्सटेंशन सीबीए (कोल बेयरिंग एक्ट) के तहत किया जा रहा है। ग्रामीण समझ नहीं रहे हैं। 2016 में कुछ लोगों ने अपना मुआवजा ले लिया है। शेष रकम हमने ट्रिब्यूनल को दे दी है।

ग्रामीणों को समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि वे मुआवजा ले लें। लेकिन वे समझ नहीं रहे हैं। हालांकि अब हालात नियंत्रण में है। मुआवजा प्रकरणों में परिवारों में कुछ मतभेद भी हैं। इनका भी निपटारा किया जा रहा है।
-अंकिता पटेल, तहसीलदार, लखनपुर

खैरागढ़

सीमेंट प्लांट को लेकर ग्रामीणों का चक्काजाम

खैरागढ़. छुईखदान-खैरागढ़ क्षेत्र में प्रस्तावित श्री सीमेंट प्लांट के खिलाफ शनिवार को 40 गांवों के हजारों किसान सडक् पर उतर आए। तीन सौ से ज्यादा ट्रैक्टरों में तिरंगा लहराते, जोरदार नारेबाजी करते हुए किसान छुईखदान एसडीएम दफ्तर का घेराव करने पहुंचे और 11 दिसंबर को होने वाली जनसुनवाई तुरंत रद्द करने की मांग पर अड़ गए। जयस्तंभ चौक पर स्टेट हाइवे करीब तीन घंटे तक पूरी तरह ठप रहा। दोपहर तक प्रदर्शन शांतिपूर्ण रहा, लेकिन शाम होते-होते कुछ उपद्रवी तत्वों ने माहौल बिगाड़ दिया। बेरिकेड्स तोड़ दिए गए, पुलिसकर्मियों को दौड़ाया गया और खड़ी बसों के शीशे फोड़ दिए गए। इसके बाद अतिरिक्त बल बुलाकर पुलिस ने लाठीचार्ज किया। कई लोग घायल हो गए। किसान कह रहे हैं कि प्लांट लगने से उनकी जमीन बंजर हो जाएगी, जलस्तर गिरेगा, पर्यावरण तबाह होगा और बीमारियां फैलेंगी। कंपनी का सिर्फ 138 लोगों को रोजगार देने का दावा भी उन्हें स्वीकार नहीं।

दावा: शाखा प्रबंधक ने कहा- किसान नहीं आया टोकन कटाने

बागबाहरा: टोकन नहीं मिला तो किसान ने खुद का गला रेता, रायपुर में हुई सर्जरी

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

महासमुंद. बागबाहरा विकासखंड के ग्राम सेनभांठा गांव के एक बुजुर्ग किसान ने धान बेचने के लिए टोकन नहीं कटने से परेशान होकर ब्लेड से अपने गले को काटकर आत्महत्या करने का प्रयास किया। बुजुर्ग किसान तीन-चार दिनों से टोकन कटाने प्रयास कर रहा था और लिमिट कम होने से ऑनलाइन टोकन नहीं कट पा रहा था। किसान को गंभीर हालत में पहले बागबाहरा स्वास्थ्य केंद्र लाया गया और वहां से मेडिकल कॉलेज सह जिला अस्पताल महासमुंद रेफर किया गया। जिला अस्पताल में भी प्राथमिक उपचार के बाद रायपुर आंबेडकर अस्पताल रेफर कर दिया गया। बागबाहरा ब्लॉक चिकित्सा अधिकारी बीएस बढ़ई ने बताया कि प्राथमिक उपचार के बाद रेफर किया गया है। बागबाहरा एसडीएम नमिता मारकोले ने बताया कि टोकन कटाने के लिए किसान समिति नहीं आया था, लिमिट क्रॉस के कारण टोकन नहीं कट पा रहा था, आज शनिवार होने के कारण टोकन नहीं कटता है, लेकिन वह च्वाइस सेंटर गया था, जहां उसे बताया गया कि आज टोकन नहीं कटेगा। इस कारण आत्महत्या का प्रयास करने की सूचना मिली।

1.10 एकड़ में खेती: किसान के पुत्र शंकर गाड़ा ने बताया कि उनके पिता मनबोध गाड़ा के तीन भाइयों के सम्मिलित खेत की कुल 1.10 एकड़ भूमि है और जिसका धान बेचने के लिए टोकन कटाने के लिए च्वाइस सेंटर गए थे, तीन चार दिन से प्रयास कर रहे थे, लेकिन टोकन नहीं मिल पा रहा था, जिससे वे तनाव में थे। शंकर ने बताया कि पिता मवेशी चराने का काम भी करते हैं। शनिवार को भी वे मवेशी चराने निकले थे, तभी उन्होंने ये कदम उठा लिया।

प्रबंधक ने कहा-

मुनगासेर शाखा के प्रबंधक ने एक पत्र जारी किया है। इसमें उनका दावा किया है कि किसान मनबोध टोकन जारी कराने के लिए समिति में एक भी बार नहीं आया है। टोकन जारी न होने की बात पूर्णत: गलत है। इसकी पुष्टि के लिए समिति में लगे सीसीटीवी फुटेज को देखा जा सकता है।

रायपुर में हुई सर्जरी: आंबेडकर अस्पताल के अधीक्षक डॉ. संतोष सोनकर के अनुसार गर्दन की सर्जरी की गई है। मरीज की स्थिति स्थिर है और खतरे से बाहर है।

मामला: शहीद महेंद्र कर्मा विवि की जमीन से जुड़ा

कब्जे के विरोध में कुलपति- कुलसचिव सड़क पर

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

जगदलपुर. राज्य के इतिहास में यह पहली बार हुआ है कि किसी विश्वविद्यालय की जमीन पर लगातार हो रहे अतिक्रमण के विरोध में कुलपति, कुलसचिव, विवि के सभी विभागाध्यक्ष छात्र संगठन के साथ सड़क पर उतरकर धरने पर बैठे। यह नजारा शहीद महेंद्र कर्मा विश्वविद्यालय परिसर में शनिवार को सुबह नजर आया। दरअसल विवि परिसर के भीतर जिला प्रशासन एक भवन निर्माण के लिए बिना अनुमति तीन दिनों से जेसीबी लेकर जुटा हुआ था। विवि प्रबंधन के विरोध के बावजूद काम जारी रखने पर आखिरकार गुस्सा फूट पड़ा। विवि के पास वर्तमान में 25 एकड़ जमीन है। विवि को इस साल प्रधानमंत्री मल्टी डिस्पिलनरी विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया है। इसके चलते यहां चालीस से अधिक नए विभाग खोले जाने हैं। इन विभागों के विस्तार के लिए विश्वविद्यालय को सौ एकड़ से अधिक की जमीन की दरकार है।

ऑपरेशन निश्चय: 80 लाख की हेरोइन जब्त

हेरोइन तस्करों के 4 गिरोह के 9 गिरफ्तार, थाने से 2 हुए थे फरार

रायपुर @ पत्रिका .नशे का गोरखधंधा करने वालों के खिलाफ पुलिस ने ऑपरेशन निश्चय चला रखा है। इसके तहत पुलिस ने अलग-अलग थाना क्षेत्रों में छापामार कार्रवाई करते हुए 9 हेरोइन तस्करों को पकड़ा है। उनके पास से 400 ग्राम हेरोइन बरामद हुई है। सरस्वती नगर थाने से फरार दो तस्करों को भी देर शाम तक पकड़ लिया गया।

मामले का खुलासा करते हुए एसएसपी डॉ. लाल उमेद सिंह ने बताया कि पुराने ड्रग्स तस्करों से पूछताछ में मिले इनपुट के आधार पर विशेष अभियान चलाया गया। अलग-अलग इलाकों से हेरोइन तस्करी करने वाले 9 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। इनमें आरोपी कमलेश अरोड़ा, गौरव सोनी, बघेल सिंह, आयुष दुबे, मृत्युंजय दुबे, तन्मय गोइंदी, सोनू साहू, गगनदीप सिंह और खिलावन साहू को गिरफ्तार किया गया है। उनके पास से कुल 400 ग्राम हेरोइन बरामद हुई है, जिसकी कीमत 80 लाख बताई गई है। आरोपियों के पास से एक कार, 4 बाइक और 10 मोबाइल भी जब्त किया गया है। आरोपियों के खिलाफ कबीर नगर, आमानाका, सरस्वती नगर और आजाद चौक में धारा 21 (बी), 21 (सी), 29 एनडीपीएस एक्ट और धारा 111 बीएनएस के तहत केस दर्ज किया है।

अधिसूचना: 4 दिसंबर को राजपत्र में प्रकाशित

एफएसएल में इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य का अब होगा परीक्षण

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

रायपुर. फोरेंसिक साइंस लेबोरेटरी (एफएसएल) पुलिस लाइन में अब इलेक्ट्रॉनिक साक्ष्य की जांच होगी। राज्य सरकार की पहल पर केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की ओर से अधिसूचना जारी की गई है। अब किसी भी तरह के प्रकरण की जांच के दौरान इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस जब्त करने के बाद एफएसएल में जांच कराई जा सकेगी। इसके शुरू होने पर दूसरे राज यों में जांच कराने और रिपोर्ट के लिए इंतजार नहीं करना पड़ेगा। जांच के बाद डिजिटल ठगी, सायबर फ्रॉड की जांच रिपोर्ट को साक्ष्य के रूप में कोर्ट में पेश किया जा सकेगा। यह रिपोर्ट जिला कोर्ट, हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में मान्य होगी।

इसकी जांच होगी

अधिसूचना जारी होने के बाद डिजिटल उपकरण कम्प्यूटर, लैपटॉप, पेन ड्राइव, मोबाइल में मौजूद डेटा, ईमेल, मैसेज, ऑडियो-वीडियो फाइलों की तकनीकी जांच अधिकृत रूप से होगी। इसका डेटा रिकवर करने के बाद कानूनी कार्रवाई में सबूत के तौर पर पेश किया जाएगा। यह सुनिश्चित करते हुए कि डेटा में कोई छेड़छाड़ नहीं हुई है। लैब रिपोर्ट को अधिकृत रूप से मान्यता होगी। इस समय डिजिटल साक्ष्य जांचने हैदराबाद, चंडीगढ़, दिल्ली, मुंबई के साथ ही अन्य राज्यों में भेजा जाता था।

पेज वन का शेष...

हवाई किराए...

एयरलाइनों को निर्देश दिए हैं कि वे उन यात्रियों से री-शिड्यूल फीस न लें, जिनकी यात्रा योजनाएं उड़ानों के रद्द होने से प्रभावित हुई हैं। मंत्रालय ने साफ कहा, रिफंड में देरी होने पर दंडात्मक कार्रवाई की जाएगी। इंडिगो को हेल्पलाइन व रिफंड के लिए सेल बनाने के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही कहा गया कि यात्रियों की धनवापसी और वैकल्पिक यात्रा व्यवस्थाएं बिना किसी रिमाइंडर के पूरी की जाएं। उधर इंडिगो ने दावा किया कि उसके 95 फीसदी रूट पर उड़ानें शुरू हो चुकी हैं। 138 में से 135 गंतव्य के लिए फ्लाइट रवाना हो गई। कंपनी का कहना है कि उसने शनिवार को 1500 उड़ानों को उनके डेस्टिनेशन तक पहुंचाया। कैंसिलेशन में धीरे-धीरे सुधार आ रहा है।

48 घंटे में घर पर पहुंचाएं सामान: मंत्रालय ने इंडिगो को निर्देश दिए हैं कि उड़ानों के रद्द होने या देरी के कारण यात्रियों से अलग हुए सामान का पता लगाया जाए और 48 घंटों में यात्री के पते पर पहुंचा दिया जाए। एयरलाइनों को नियमों के तहत मुआवजा देने के लिए कहा गया है।

रेलवे ने 84 स्पेशल ट्रेंने शुरू कीं : भारतीय रेलवे ने 6 दिसंबर को यात्रियों की परेशानी को देखते हुए 84 स्पेशल ट्रेनें चलाने का ऐलान किया। रेल मंत्रालय ने कहा कि यह विशेष सेवाएं, जो कुल मिलाकर 104 फेरे लगाएंगी, नई दिल्ली, मुंबई, चेन्नई, बेंगलूरु, पटना और हावड़ा जैसे प्रमुख शहरों के लिए शुरू की गई हैं।

सुप्रीम कोर्ट पहुंचा मामला: सुप्रीम कोर्ट के वकील नरेंद्र मिश्रा ने सीजेआइ को पत्र लिखकर इस पूरे संकट पर स्वतः संज्ञान लेने और मामले में हस्तक्षेप करने की मांग की है। उधर, पीएमओ ने भी नागरिक उड्डयन मंत्रालय से मामले की पूरी जानकारी ली। डीजीसीए से भी पूरी रिपोर्ट मांगी गई है।

सबसे ज्यादा उड़ानें भी बनी मुसीबत : इंडिगो रोजाना करीब 2,300 घरेलू और अंतरराष्ट्रीय उड़ानें ऑपरेट करती है। इतने बड़े पैमाने पर यदि 10-20 प्रतिशत उड़ानें भी देर से चलें या रद्द हों, तो इसका अर्थ है 200-400 उड़ानें प्रभावित होना। नवंबर में इसकी 1232 उड़ानें रद्द हुई थीं।

पायलट संगठन भी नाराज: दूसरी ओर इस पूरे मामले पर पायलट संगठन फेडरेशन ऑफ इंडियन पायलट्स ने नाराजगी जाहिर की है। संगठन ने इंडिगो पर आरोप लगाए कि फ्लाइट ड्यूटी टाइम लिमिट के पूरे लागू होने से पहले एयरलाइन को पूरे दो साल की तैयारी मिली थी, फिर भी कंपनी ने भर्ती रोककर गलत योजना बनाई। संगठन का कहना है कि जब तक अमले की कमी दूर न हो सीजनल फ्लाइट शेड्यूल मंजूर नहीं किया जाना चाहिए।

बंगाल में...

हालांकि भाजपा ने जाहिर तौर पर नई मस्जिद के निर्माण की अनुमति को ममता बनर्जी की मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति बताते हुए मुस्लिम वोटों को एकजुट करने का प्रयास बताया है लेकिन राजनीतिक प्रेक्षक मानते हैं कि इस मुद्दे को हवा देकर भाजपा हिंदू मतदाताओं को लामबंद करेगी। यदि ममता से छिटककर मुस्लिम मतदाता कबीर की तरफ जाते हैं तो भाजपा को परोक्ष फायदा होगा।

वक्फ-एसआइआर पर भी नाराज हैं मुस्लिम: सूत्रों के अनुसार पिछले तीन चुनावों से टीएमसी के कट्टर समर्थक रहे मुस्लिम मतदाता पिछले दिनों मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआइआर) न रोक पाने और नया वक्फ संशोधन कानून लागू करने के मुद्दे पर ममता बनर्जी से खुश नहीं बताए जाते। हालांकि टीएमसी एसआइआर का विरोध कर रही है लेकिन बड़ी संख्या में लोगों के नाम कटने की आशंका है। वक्फ कानून का विरोध करने के बाद ममता ने उसे लागू कर दिया है। सूत्रों ने बताया कि हुमायूं नई पार्टी बनाते हैं तो उसे टीएमसी से नाराज मुस्लिम मतदाताओं का समर्थन मिल सकता है। बंगाल में मुस्लिम मतदाताओं के समर्थन के कारण चुनाव में टीएमसी की गिनती ही 28 फीसदी से शुरू होती है।

ड्यूटी के...

विधेयक के अनुसार, कर्मचारी ऑफिस समय खत्म होने के बाद किसी भी तरह के कार्यालय के कॉल, मैसेज या ईमेल का जवाब देने के लिए बाध्य नहीं होगा। यह नियम छुट्टियों के दौरान भी लागू होगा। इसके साथ ही एम्प्लॉयी वेलफेयर अथॉरिटी के गठन का प्रस्ताव दिया है, जो इस अधिकार को लागू करने के लिए ठोस नियम और दिशा-निर्देश तय करेगी। सुले के मुताबिक यह विधेयक केवल एक कानूनी पहल नहीं, बल्कि काम और जिंदगी के बीच संतुलन को फिर से परिभाषित करने की कोशिश है।

मम्मी-पापा ...

स्क्रीन की दिलचस्प दुनिया, आध्यात्मिक सत्र में जुड़ते सैकड़ों बुजुर्ग : सुबह-सुबह लैपटॉप की स्क्रीन पर बिखरे सैकड़ों मोजेक के बीच केरल, अमरीका, ब्रिटेन और महाराष्ट्र से कई बुजुर्ग चेहरे नजर आ रहे हैं। कुछ कमरे में टेढ़े मेढ़े दिख रहे हैं तो कुछ ध्यान लगाए बैठे हैं। ये सभी आध्यात्मिक सत्रों के लिए वर्चुअली जुड़े हैं। इस बीच मीटिंग में जुड़ीं गृहिणी सुहासिनी कुछ जानी-पहचानी आवाज और शोर होने पर म्यूट कर देती है। उनका इंजीनियर बेटा अक्सर मीटिंग में होने की बात कहता है, अब सुहासिनी भी गर्व से अपने बेटे से कहती हैं, मीटिंग चल रही है। जूम से जुड़े सभी लोग 60 से ज्यादा उम्र के हैं। इनमें कुछ मीटिंग से जुड़ने, म्यूट करने और वीडियो ऑन करने जैसी प्रक्रिया में व्यस्त रहते हैं।

बेटी की...

गाडरवारा रेलवे स्टेशन और शहर में प्रतिदिन 250 से 300 लोग और कई बार 500 से भी अधिक अनजान जरूरतमंद सम्मानपूर्वक भोजन प्राप्त कर रहे हैं।

कोरोना में मुश्किल से मदद: कोरोनाकाल में सेवा की जरूरत ज्यादा थी लेकिन कार्य कठिन था। उस कठिनाई में भी जैसे-तैसे यह अभियान जारी रहा लेकिन लॉकडाउन खुलते ही सेवा फिर पूरी गति से शुरू हो गई। कोविड के बाद सहयोग इतना बढ़ा कि भोजन प्राप्त करने वालों की संख्या कई बार 500 तक पहुंच जाती है। आज शहर के लोग विशेष अवसर- जन्मदिन, वर्षगांठ, पुण्यतिथि पर भोजन बनाकर सेवा दल को देते हैं, ताकि जरूरतमंदों तक सम्मानपूर्वक भोजन पहुंच सके।

आमचो बस्तर | इजरायल, फ्रांस और लातविया से आई 8 सदस्यीय टीम

आदिवासी संस्कृति को 'पढ़ने' बस्तर पहुंचे विदेशी मेहमान

पत्रिका ब्यूरो
patrika.com

जगदलपुर. प्रकृति, संस्कृति और लोकजीवन की अनूठी पहचान रखने वाला बस्तर इन दिनों अंतरराष्ट्रीय शोधकर्ताओं और यात्रियों का केंद्र बना हुआ है। इजरायल, फ्रांस और लातविया सहित विभिन्न देशों से आए आठ सदस्यीय विदेशी दल ने बस्तर की सांस्कृतिक जड़ों, पारंपरिक खानपान और जनजातीय जीवनशैली को करीब से समझने के उद्देश्य से यहां की यात्रा शुरू की है।

विदेशी मेहमानों का यह समूह बस्तर के साप्ताहिक हाट-बाज़ार, आदिवासी घरों, कारीगरों के कार्यस्थलों, कला केंद्रों और ग्राम्य आयोजनों में शामिल होकर यहां की जीवंत जनजातीय परंपराओं को महसूस कर रहा है। टीम कांगेर घाटी क्षेत्र के धुरवा, गोंड और भतरा जनजातियों की सामाजिक संरचना, रीति-रिवाज, हस्तशिल्प निर्माण, दैनिक जीवन और खानपान की विशिष्टताओं को समझने में विशेष रुचि ले रही है।

सबसे पुरानी-जीवंत परंपराओं में से एक

टीम में ब्रिटेन के कारलेट और निकोलस, लातविया की बाइबा कलनीना तथा इज़राइल के अविदाद, अनत, आहरोन ग्रोनोट और शाबा शामिल हैं। उन्होंने कहा कि बस्तर की संस्कृति भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे पुरानी और जीवंत परंपराओं में से एक है, जिसे वास्तविक रूप में देखना उनके लिए प्रेरणादायक और शोध की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

स्थानीय व्यंजनों का स्वाद भी ले रहे हैं

बस्तर ट्राइबल होमस्टे के संचालक एवं गाइड शकील रिजवी ने बताया कि विदेशी टीम कांगेर वेली में ट्रेकिंग, दरभा और तोकापाल के पारंपरिक बाजारों का भ्रमण कर रही है। वे स्थानीय व्यंजनों का स्वाद भी ले रहे हैं, जिनमें सरसों भाजी, कलमल कांदा, बरहा कांदा, जोन्धरा पेज, बास्ता, सुकसी, सूखा मशरूम और लाल चीटियां उन्हें विशेष रूप से आकर्षित कर रही हैं।

स्पंदन

शिक्षा और संस्कृति-1

गुलाब कोठारी

लेखक पत्रिका समूह के प्रधान संपादक हैं

शिक्षण संस्थान ज्ञान के मंदिर हैं। मंदिर इसलिए कि ज्ञान से पवित्र सृष्टि में और कुछ है ही नहीं। 'न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते।' वेद कहता है कि ज्ञान और ब्रह्म पर्यायवाची हैं। शंकराचार्य भी यही कहते हैं कि ब्रह्म ज्ञान मात्र है। ज्ञान का आधार विद्या है। शिक्षित व्यक्ति ही किसी देश की संस्कृति और सभ्यता है। इस देश में ज्ञान का सम्मान कितना है कि वेदव्यास, वाल्मीकि, पाणिनि, पतंजलि जैसे मनीषियों को भगवान मान लिया। क्योंकि ज्ञान व्यक्ति को मिथ्या दृष्टि से मुक्त कराता है। जीवन तथा ईश्वर में आस्था पैदा करता है। समाज विरोधी तत्त्वों को ज्ञान के प्रभाव से दबा देने की शक्ति प्राप्त करता है। व्यक्ति स्वयं से परिचय करके ही स्वतन्त्र हो सकता है।

हमारे अध्यात्म के चार भाग हैं- आत्मा-मन-बुद्धि और शरीर। शरीर और बुद्धि शिक्षा में तथा आत्मा और मन धर्म के विषय बन गए। शिक्षा धर्म निरपेक्ष हो गई। तब व्यक्ति स्व-धर्म की पहचान कहां सीखेगा? शिक्षा के मूल धरातल-आधिदैविक, आधिभौतिक एवं आध्यात्मिक-तो खो ही गए। व्यक्तित्व विकास पीछे छूट गया। योग-क्षेम की परिभाषा ही बदल गई। ज्ञान छूट गया, विज्ञान रह गया। ब्रह्म छूट गया, माया रह गई। 'सम्' छूट गया, कृति रह गई। यानी, संस्कृति खण्ड-खण्ड हो गई। बीस साल तक किया गया श्रम और लगाया गया धन जीवन संघर्ष में व्यक्ति के काम नहीं आएगा।

शास्त्र कहते हैं- जन्मना जायते विप्रः संस्काराद् द्विज उच्यते। जीवन का लक्ष्य है अभ्युदय और निःश्रेयस। इसी को योग-क्षेम कहते हैं। विद्या के योग से अविद्या के आवरण हटाना, आत्म साक्षात्कार करना (मोक्ष) ही पुरुषार्थ का लक्ष्य है। आज शिक्षा में पुरुष-प्रकृति का स्वरूप ही नहीं रहा। सृष्टि का निर्माण युगल तत्त्व-अग्नि-सोम से अथवा योषा-वृषा से होता है, कौन बताता है? इस ज्ञान के बिना स्त्री-पुरुष भी मात्र शरीर रह गए, जैसे अन्य प्राणियों के होते हैं। जीवन रूढ़ि बन गया, मिथक बन गया, उपयोगिता की ही शिक्षा में तलाश रह गई। वसुधैव कुटुम्बकम् निजी स्वार्थ में बदल गया। व्यक्ति के कर्म और अनुभव भी सुप्त रूप से उसके साथ रहते हैं, उसकी विशिष्टताएं, शक्तियां भी आत्मा का अंश बनकर रहती हैं। 'ईश्वर अंश जीव अविनाशी' कहा है। इनको जाग्रत करना तथा इनका जीवन में उपयोग कैसे हो पाएगा, शिक्षा तो इनको भुला देती है। कमाना सीख जाता है, समाज को कुछ देना भी चाहिए, भूल जाता है।

समय परिवर्तन लाता है। समय के साथ आवश्यकताएं भी बदलती हैं। त्रेता और द्वापर में राम और कृष्ण ज्ञान की प्राप्ति के लिए वाल्मीकि एवं संदीपनी के आश्रम में जाते थे। गुरुकुल समाज से मिली भिक्षा पर आश्रित रहते थे। द्वापर के अन्त में ही शिक्षक घर आकर, पारिश्रमिक के बदले में, शिक्षित करने लग गए थे। आचार्य द्रोण इसका श्रेष्ठ उदाहरण हैं। द्रोण अब सबको शिक्षा नहीं दे सकते थे। न एकलव्य को, न ही कर्ण को। शिक्षा के विषय छात्रों के अनुरूप होते चले गए। कृष्ण-सुदामा का साथ छूट गया। दुर्योधन भी पैदा होने लग गए। आश्रम में यह संभव नहीं था। वहां पात्रता के अनुरूप शिक्षा दी जाती थी, यहां संरक्षण का आधार था।

महाभारत के साथ ही द्वापर बीत गया। शिक्षा में कुछ काल तक धर्म की भूमिका भी बढ़ी। अंग्रेजों ने नई व्यवस्था बनाई। न शिष्य गुरु के घर जाएगा, न ही गुरु शिष्य के घर। स्कूल खड़े कर दिए। समय पढ़ाई का भी तय हो गया, विषय तय हो गए। वेद के 'गुरु और अन्तेवासी' (शिष्य) शब्द भी विदा हो गए। लंदन के ईडन स्कूल के लिए प्रसिद्ध था कि यहां के छात्र ही ब्रिटेन के प्रधानमंत्री बनते थे। आज तो खुले-विश्वविद्यालय उपलब्ध हैं। न गुरु को जानने की जरूरत है, न ही शिष्य के परिचय की। डिग्री घर बैठे ही आ जाती है। इसी में आगे डिग्रियां खरीदने की व्यवस्था हो गई। कई बार तो फीस भेजते ही कोर्स और डिग्री साथ ही आ जाते हैं।

आज की अधिकांश शिक्षण संस्थाएं अनुदान-आश्रित हैं। अनेक सीमाओं और राजनीतिक समीकरणों में बंधी हैं। यहां तक कि पाठ्यक्रम में पुस्तकों का चयन भी अधिकारी, नेता ही तय करवा देते हैं। वे ही नीतियां बनाते हैं। शिक्षाविद् मौन रहने को विवश हो गए हैं। इसमें शिक्षकों, साहित्यकारों, मनीषियों का आदर कम होता गया है। शिक्षण संस्थाओं में स्वायत्तता भी स्वच्छंदता बन गई। शिक्षकों के सरकारी सम्मान भी राजनीति की मार खा रहे हैं। अब शिक्षक सर्वपल्ली राधाकृष्णन् की तरह से राष्ट्रपति नहीं बन सकते।

शिक्षा देना (विद्या दान) और ग्रहण करना दोनों ही हमारे यहां तो धर्म की श्रेणी में आते हैं। अतः पात्रता एवं परम्परा का निर्वाह अनिवार्य है। महादेवी वर्मा बनारस में वेद पढ़ने गईं, तब स्त्रियों को वेद नहीं पढ़ाया जाता था। इनके लिए कक्षा में पर्दा लगाया गया। पर्दे के पीछे बैठकर महादेवी जी ने वेद अध्ययन किया।

बिना यज्ञोपवीत धारण किए व्यक्ति (स्त्री भी) को भी वेद की शिक्षा नहीं दी जा सकती थी। कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर सीताराम जी को जब कार्य सौंपा, तो वे तैयार ही नहीं हुए। बाद में उन्हें मना तो लिया गया, किंतु वे परम्परा पर अड़े रहे। कक्षा से बाहर आते ही गंगा किनारे जाते, सिर मुंडवाकर गंगा स्नान करते, तब घर जाकर खाना खाते थे। ज्ञान ग्रहण पूजा कार्य था, शिक्षक पुजारी। तब लोग शिक्षक के चरण छूते थे। गुरु के लिए कबीर ने लिखा है-

हर घट मेरा साईंया, सूनी सेज न कोय।
वां घट की बलिहारियां, जां घट परगट होय ॥

गुरु में ही ईश्वर का प्राकट्य कहा गया है।

नीतिशास्त्र में भी मन की दो दिशाएं कही हैं। एक विद्या, दूसरी अविद्या। एक ओर तो विद्या से विवाद बढ़ता है, तो दूसरी ओर ज्ञान। एक ओर धन से मद बढ़ता है, तो दूसरी ओर दान। एक ओर शक्ति से पर-पीड़न में सुख माना जाता है, दूसरी ओर रक्षण में।

अतः महत्त्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षा, ज्ञान, वेदशास्त्र आदि को भी योग माना गया है। आज की शिक्षा का 'उपयोग' किया जाता है। विद्या के महत्त्व पर कभी चर्चा नहीं होती थी। वेद के सभी छह अंग बिना कारण जाने पढ़े जाते थे। आज शिक्षा जीवन को जीने योग्य नहीं बना सकती। वह ब्रह्म का पर्याय नहीं है। उसमें रस, माधुर्य, संस्कार देने की क्षमता अथवा अच्छा इंसान बनाने की ताकत नहीं है। डिग्री या नौकरी के आगे कुछ नहीं है। सभ्यता और संस्कृति तक नहीं। शिक्षित अधिक दुःखी दिखाई जान पड़ते हैं, भले ही प्रोफेसर प्रोपर्टी डीलर बन गए हों। जीवन की रसमयता ही विद्या का योग है। यही परा विद्या कही जाती है। यही संस्कृति का मूल तथा व्यक्तित्व एवं देश की पहचान बनती है। किसी भी फसल में खाद-पानी का तो उपयोग होता है, किन्तु हवा और धूप का योग ही होता है। मानव के आध्यात्मिक और आधिभौतिक स्वरूप से सम्बन्ध रखने वाले अन्तः और बाह्य आचार ही क्रमशः मानव की संस्कृति तथा सभ्यता माने गए हैं। (क्रमशः)

gulabkothari@epatrika.com

सामाजिक संस्कारों से जुड़ा यह स्तंभ नई पीढ़ी को भी पढ़ाएं।

काव्यांजलि

POEM

दिसंबर

पवन सैन 'मासूम'

वर्ष जो चलते-चलते थक
गया है, सुस्ता रहा है
अपनी अंतिम संतान की बांहों
की परिधि भीतर।

दिसंबर की चर्म अट चुकी है
ग्यारह माह की लंबी यात्रा के
उभर आए चिह्नों से,
अनुभव के आलेख किसी
अज्ञात लिपि में
उसके बदन से आ लिपटे हैं।

अंतिम माह के अंतिम दिनों
में थके-हारे महाराजा की
भांति बैठा व्यक्ति
करता है मंत्रणा
स्वयं को स्वयं के
सम्मुख रख।

पाए को सोचता है,
हंसता है थोड़ा;
दोगुना रोता है,
खोए को सोचकर।
वह जो हासिल करना था,
न कर सका,
छटपटाता है उस आकांक्षा
को ओक से रेत की भांति
फिसलता देख।

कोसता है माह को
कि क्यों चले आए
इतना शीघ्र,
गिड़गिड़ाता है
कि रुके कुछ और दिन,
क्रोधित होकर पूछता है
कि जाने के लिए
क्यों आते हो?

मैं यहीं हूं,
समय की दीवार पर
कील की भांति गड़ा हुआ,
तुम बढ़ रहे हो.. बढ़ो!
तुम्हारी राह पर फिर आएगा
एक दिसंबर,
किन्तु नहीं होऊंगा मैं वह
(कहना चाहता है दिसंबर)

मगर.. आंखों में
धुंध को लपेटे
ठिठुरते हृदय से देता है वह
जनवरी का दिलासा,
कांपते होंठों से करता है
वायदा
कि लौटूंगा
लौटूंगा फिर एक रोज
तुम्हें थोड़ा और
परिपक्व बनाने।

मोनिका की शादी में स्कूल के स्टाफ ने मदद की। भोर विदाई में मोनिका और वर को आशीर्वाद देने घरवालों संग स्कूल का पूरा स्टाफ भी खड़ा हो विद्यालय को उत्तीर्ण करा गया।

गरीब की शादी

प्रतिभा जोशी
patrika.com

अरे कमला, मेरे स्कूल में इक्यावन टीचर और दस बाबू हैं। फिर मेरे संगी साथी नौ चपरासी, तो सत्तर परिवार तो घर के रिश्तेदारों संग जोड़ ही लेते हैं। मैं तो चार सौ अपने और पांच सौ ब्याई जी के मानकर करीब हजार लोगों के खाने का इंतजाम करवाता हूं।' नामी स्कूल का चपरासी अपनी बेटी की शादी की व्यवस्थाओं के तहत अपनी पत्नी से बोला।

'हजार जनों के खाने में तो बहुत पैसे लग जाएंगे? अरे बारातियों के दो दिन रुकने और खाने-पीने की व्यवस्था भी तो करनी होगी। इस जाड़े में शादी करने की क्यों सोची? सबके ठहरने की व्यवस्था अलग से करनी पड़ेगी। स्कूल में इन बड़े लोगों को कार्ड न देते तो चलता, क्योंकि चपरासी की बेटी की शादी में आते इनको लाज आवेगी?' व्यवस्थाओं की चिंता कमला की बोली में उतरने लगी।

'तू मेरी स्कूल के लिए कुछ न बोल। मैंने जीवन के पैंतीस साल दिए हैं स्कूल को, मेरी ईमानदारी देख के तो सब आएंगे ही। स्कूल के दरवाजे पर खड़ा सर्दी, गर्मी, बरसात सबको सलाम करता, जाड़े में रात जग पहरेदारी भी की तो भरी बारिश हाथों में टूटा छाता लिए टॉर्च पकड़े घूमा भी तो हूं। सबसे भारी अहसान कि इस स्कूल ने मेरे छोरी छोरा पढ़ा दिए। तू चिंता मत कर।' कमलेश खाली कार्ड पर प्रिंसिपल का नाम लिखने लगा।

'शादी में बड़े लोग आएंगे तो कपड़े भी अच्छे पहनने होंगे?'

'एक दिन के प्रोग्राम के लिए कपड़े कोई खरीदते थोड़ी न हैं, किराए पर सब मिलता है। तू भी ला और परिवार की औरतों के लिए भी ले आना।'

अगले दिन बुधवार को सबसे पहले गणेशजी को न्यौता देकर कार्ड बांटने की शुरुआत की। दोनों सुबह-सुबह पहुंच गए प्रिंसिपल के घर जहां वे स्कूल के लिए निकल ही रहे थे।

'अरे कमलेश, बेटी की शादी की तैयारियां कैसी चल रही हैं?' पार्किंग में खड़ी कार में बैठे वे खिड़की का कांच नीचे कर बोले।

'साहब जी, आपकी मेहरबानी से सब काम अच्छा चल रहा है। यह पहला कार्ड आपको देकर फिर ही लोगों को दूंगा।' वे कार से बाहर निकल बधाई देने लगे।

'और सुन, मदद के लिए हमें तैयार ही समझना।' शुक्रिया अदा कर दोनों अगले घर कार्ड देने चल पड़े। सात दिन बाद ही शादी है। घर में मंगलगान के ढोलक बजने लगे।

कमला स्कूल के स्टाफ की रौनक और सम्पन्नता से परिचित थी। इसलिए मन मारकर पैसे खर्च कर खुद के और घर की औरतों के लिए महंगे लहंगे ओढ़नी (बेस) किराए पर ले आई। शादी के लिए किराए पर लिए परिधानों को महंगे सामानों से सजवाया, कीमती लाइटें घर में भी लगवाईं और समारोह स्थल को भी चमका दिया। शादी की कुछ रस्में घर पर तो कुछ समारोह स्थल पर वैभवपूर्ण तरीके से संपन्न हुईं।

शादी के दिन दुल्हन ब्यूटीपार्लर चली तैयार होने और घर की औरतों ने नाक-मुंह चढ़ाते हुए किराए के कपड़े और गहने पहनने शुरू कर दिए।

'जीजी, मोनिका तो बेटी है, इसलिए बेटी की शादी में सब माफ, पर विनोद की शादी में सब सच्चा होना चाहिए।' कमला की बड़ी ननद बोल ही रही थी कि खिड़की का पल्ला तेजी से खुला कि बौछारें कमरे में आ गईं।

'बरसात? ओह, बरसात आ गई?' कमला ओढ़नी को कमर में खोंस बाहर देखने भागी। गेट खोल दिन के चार बजे को रात की गिरफ्त में देख वह सिर पकड़ जमीन पर बैठ गई।

'सारे पैसे देकर भी सब खोटा हो जाएगा। कहां सब खाएंगे और रात, यह पहाड़ सी रात कैसे गुजरेगी?' उसकी आंख से आंसू लुढ़ककर चेहरे पर बौछारों के संगी बन गए।

'अरे कमला, चिंता मत कर। हम तो खुद को संभाल लेंगे। तुम तो बारातियों की व्यवस्थाओं को संभालो।' सब भागकर बाहर आ गईं और कमला तो ढांढस बंधाने लगीं।

'चलो जी, पहले यह किराए का पहनावा उतारो वरना खराब हो गया तो इसके पैसे भी लग जाएंगे। गरीब की शादी परीक्षा लेती है।' बड़ी ननद कमला को आश्वस्त कर बोल ही रही थी कि सामने से हाथ में साफा लिए उदासी ओढ़े कमलेश आता नजर आया। कमला ने उसकी तरफ देखा तो रुलाई पुनः फूट पड़ी।

'मेरी स्कूल को दी ईमानदारी फल गई, यही बताने तो चला आया। अभी अभी प्रिंसिपल सर का फोन आया कि रात अपने मेहमानों को स्कूल के गेस्ट हाउस में रुका देना। स्कूल के स्टाफ ने मिलकर इस ओपन ग्राउंड के नजदीक आलीशान होटल के बड़े हॉल में शादी की व्यवस्था करवा दी। चलो, सबके लिए वैन आती ही होगी। मोनिका भी तैयार हो वहीं आएगी।' कमलेश के आंसू बारिश की बूंदों संग मिल एकसार हो गए।

रात बदरा जमकर बरसे और बैंड-बाजे को बराबर की टक्कर देते रहे। मोनिका की शादी में स्कूल के स्टाफ ने जमकर मदद की और उतना ही जमकर खाया भी। यही नहीं भोर विदाई में मोनिका और वर को आशीर्वाद देने घरवालों संग स्कूल का स्टाफ खड़ा हो विद्यालय को भरपूर नंबरों से उत्तीर्ण करा गया।

योग प्राणायाम

***शरीर** को सक्रिय, गर्म और लचीला बनाए रखने के लिए योग सबसे प्रभावी है। ऐसे में सूर्य नमस्कार, ताड़ासन, कंधरासन, कपालभाति प्राणायाम का अभ्यास करें।*

मेरी सेहत Health

बी अवेयर

सर्दियों के मौसम में संक्रमण बढ़ जाते हैं और कई पुरानी बीमारियां बिगड़ सकती हैं। ऐसे में बच्चे, बुजुर्ग तथा हृदय रोगी, श्वसन रोगी और मधुमेह रोगी विशेष सतर्क रहें।

पत्रिका एक्सपर्ट पैनल

डॉ. एन.आर. शेट्टी कंसल्टेंट, इंटरनल मेडिसिन, कोकिलाबेन धीरूभाई अंबानी अस्पताल, मुंबई

डॉ. अनुपम प्रकाश हेड ऑफ डिपार्टमेंट ऑफ मेडिसिन, लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली

डॉ. प्रवीण कनोजिया सीनियर फिजिशियन, जयपुर

डॉ. भगवान सहाय शर्मा वरिष्ठ आयुर्वेद विशेषज्ञ, नई दिल्ली

डॉ. अनिल दोसरा त्वचा रोग विशेषज्ञ, इंदौर

आचार्य प्रतिष्ठा अध्यक्ष, भारत योग एवं निदेशक मोक्षायतन योग संस्थान, नई दिल्ली

मेधावी गौतम डायटीशियन, जयपुर

patrika.com

सर्द मौसम में आपकी हैल्थ का पहिया कहीं बेपटरी तो नहीं?

*ठंड के मौसम में शरीर का मेटाबॉलिज्म, पानी पीने की आदत, त्वचा में बदलाव, प्रतिरोधक क्षमता और दैनिक गतिविधियों आदि सब पर असर पड़ता है। यही कारण है कि इस मौसम में अपनाई गई अच्छी आदतें शरीर को मजबूत बनाती हैं, जबकि लापरवाही बीमारियों का जोखिम बढ़ा देती है। इन्हीं आदतों को समझने, परखने के लिए आज हमने **स्पिन हैल्थ व्हील गेम** दिया है, जो बताता है कि कौनसी आदतें लाभकारी, कौनसी सामान्य, किनसे सावधानी जरूरी और कौनसी हानिकारक हैं। इस गेम से अपनी दिनचर्या का मूल्यांकन कर देखें कि आपकी लाइफस्टाइल का पहिया कहां रुकता है। साथ ही जानते हैं हमारे एक्सपर्ट पैनल से कि इस मौसम में स्वस्थ रहने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना जरूरी है ...*

लाइफस्टाइल से करें खुद को मजबूत

1 ***हाइजीन का ध्यान रखें:*** सर्दियां फ्लू जैसी फैलने वाली बीमारियों का पीक टाइम होता है। साबुन और पानी से बार-बार हाथ धोने से जर्म्स निकल जाते हैं और इंफेक्शन फैलने से रुकता है। इसलिए अल्कोहल-बेस्ड हैंड सैनिटाइजर साथ रखें, जहां हाथ धोना संभव न हो।

2 ***हैल्दी डाइट व हाइड्रेशन:*** संतुलित और पौष्टिक भोजन लें। हाइड्रेशन का भी ध्यान रखें। इसके लिए गर्म पानी, हर्बल टी और सूप का प्रयोग करें। हाइड्रेशन जोड़ों को भी लुब्रिकेट करता है, जिससे सभी को मदद मिलती है।

3 ***पूरी नींद लें:*** इम्युनिटी के लिए नींद बहुत जरूरी है। सर्दियों में, धूप कम मिलने से इस पर ज्यादा असर पड़ता है। इसलिए, लोगों के लिए अपनी नींद का शेड्यूल बनाए रखना जरूरी होगा। बड़ों के लिए 7 से 8 घंटे की नींद सही है, जबकि बच्चों या टीनएजर्स को ज्यादा से ज्यादा 10 घंटे की भी जरूरत हो सकती है।

4 ***घर के अंदर एक्टिव रहें:*** बच्चों को एक्टिव इनडोर गेम्स या डांस रूटीन में शामिल करें। बड़ों के लिए घर में आसान एक्टिविटीज मांसपेशियों की ताकत और मोबिलिटी बनाए रखने में मदद कर सकती हैं।

5 ***सेफ हीटिंग अपनाएं:*** घर को बहुत ज्यादा बार गर्म करने से हवा डिहाइड्रेट हो सकती है जिससे सांस की नली में जलन हो सकती है। अगर जरूरी हो, तो ह्यूमिडिफायर का इस्तेमाल करके कमरों को ह्यूमिड करें।

6 ***धूप में रहें:*** सर्दियों में कम धूप में रहने से विटामिन डी की कमी और सीजनल इफेक्टिव डिसऑर्डर हो सकता है। दोपहर में जब धूप तेज होती है उस समय न बैठें।

7 ***चीनी और शराब से दूरी:*** ज्यादा चीनी और शराब इम्यून सिस्टम को दबा सकती है, जिससे शरीर में इन्फेक्शन से लड़ना मुश्किल हो जाता है। इसके बजाय गर्म हर्बल चाय, शहद आदि ले सकते हैं।

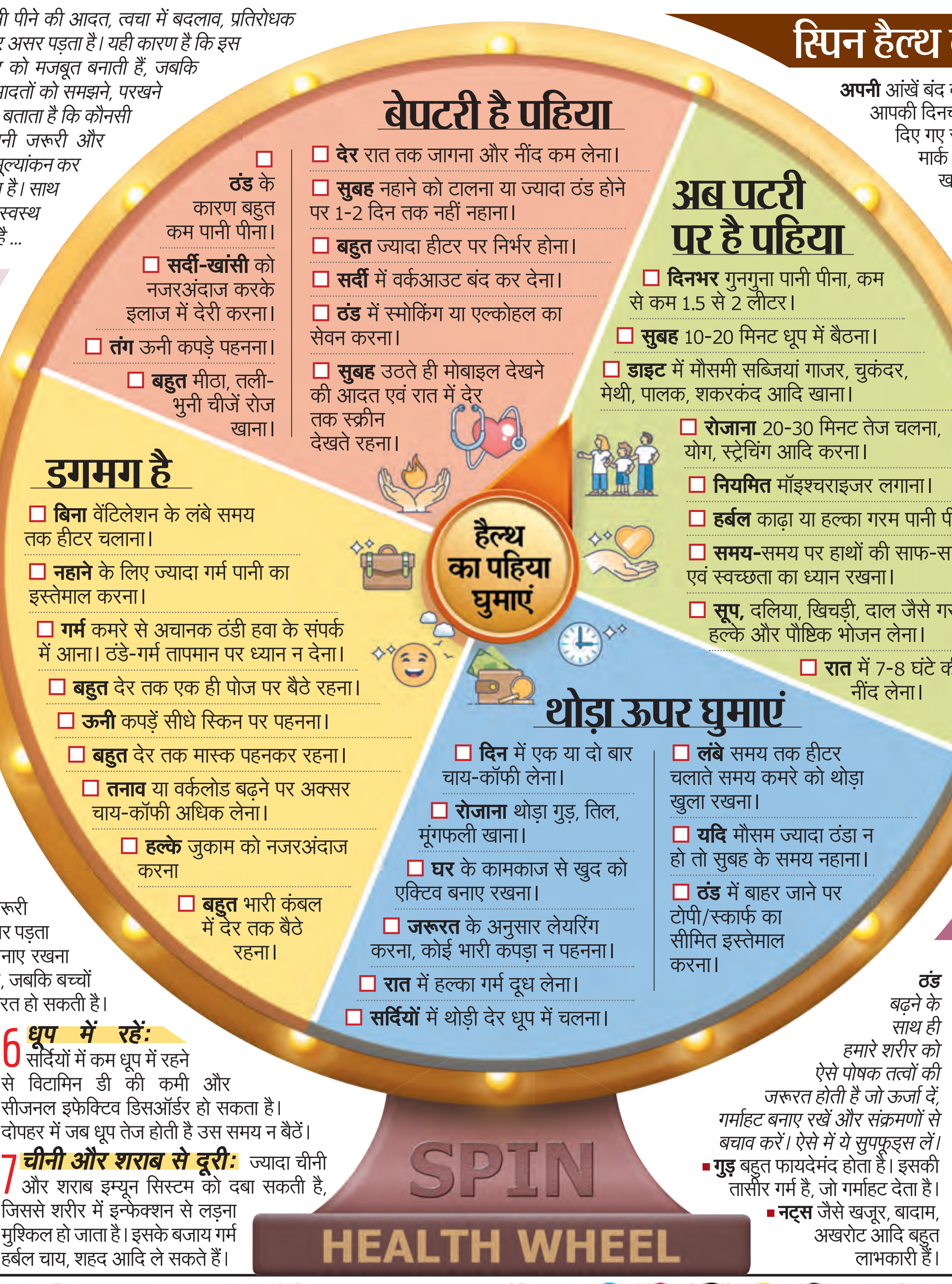

स्पिन हैल्थ व्हील ऐसे खेलें और जांचें?

अपनी आंखें बंद करें और 30 सेकंड के लिए सोचें कि सर्दी के मौसम में आपकी दिनचर्या कैसी रहती है। उन पर विचार करके हैल्थ के पहिए पर दिए गए रंगों के बॉक्स के अनुसार अपनी आदतों को पेन या पेंसिल से मार्क करें, फिर देखें कि किस बॉक्स से आपकी आदतें ज्यादा मेल खाती हैं, तो समझो आपकी हैल्थ का पहिया वहीं रुका है। फिर इसे ऐसे समझिए...

कैसा होगा आपका स्वास्थ्य

हरा रंग: यदि आपकी आदतें वही सब हैं, जो हरे रंग के बॉक्स में लिखी हुई हैं तो आप अपनी सेहत के प्रति सचेत हैं। इन आदतों को अपनाते रहें। अच्छी बात है कि आपकी आदतें स्वस्थ हैं।

नीला रंग: अगर आपकी अक्सर आदतें नीले रंग के बॉक्स से मेल खाती हैं तो इससे पता चलता है कि सर्दी में स्वस्थ रहने के लिए आप सामान्य बातों का तो ध्यान रखते हैं, लेकिन यदि हरे बॉक्स की पूरी आदतों को अपना लें तो आप बेहतर स्वास्थ्य का लाभ ले सकते हैं।

पीला रंग: आपकी आदतें यदि पीले रंग के बॉक्स से मेल खाती है तो आपको समय रहते संभल जाना चाहिए। अगर आप अभी सचेत हो जाते हैं तो आने वाले समय में गंभीर बीमारियों का जोखिम कम कर सकते हैं।

गुलाबी रंग: यहां आपका हैल्थ का पहिया रुकता है तो यह चेतावनी का संकेत है। ये सभी आदतें आपकी सेहत के लिए बहुत नुकसानदायक हैं। इन आदतों के कारण हार्ट, जोड़ों की समस्या, मोटापा, डायबिटीज आदि का जोखिम बढ़ सकता है।

न भूलें, सर्दी के सुपरफूड्स

ठंड बढ़ने के साथ ही हमारे शरीर को ऐसे पोषक तत्वों की जरूरत होती है जो ऊर्जा दें, गर्माहट बनाए रखें और संक्रमणों से बचाव करें। ऐसे में ये सुपफूड्स लें।

- **गुड़** बहुत फायदेमंद होता है। इसकी तासीर गर्म है, जो गर्माहट देता है।
- **नट्स** जैसे खजूर, बादाम, अखरोट आदि बहुत लाभकारी हैं।
- **कच्ची** हल्दी को चटनी, सब्जी, अचार किसी भी रूप में डाइट में अवश्य शामिल करें। यह ठंड से बचाव कर इम्युनिटी बढ़ाती है। लहसुन खाएं।
- **सभी** बेरीज, आंवला और नींबू को भी अपनी डाइट में शामिल करें। सब्जी बनाते समय अंत में कद्दूकस किया हुआ कच्चा आंवला मिलाने से विटामिन सी मिलेगा।
- **मोटे** अनाजों में बाजरा शरीर को लंबे समय तक गर्म रखता है। खट्टे फल और

शकरकंद भी इस मौसम में आदर्श विकल्प हैं।

- **सुबह** हल्दी, दालचीनी, लौंग, काली मिर्च, तुलसी और अदरक को मिलाकर काढ़ा बनाना फायदेमंद है। यह काढ़ा इम्युनिटी बढ़ाता है और खांसी-जुकाम से बचाएगा।

2-3 बार मॉइश्चराइज करें

सर्दियों में हर उम्र के लोगों में त्वचा में खिंचाव, रूखापन, खुजली, लालिमा और एक्जिमा जैसी समस्याओं का जोखिम बढ़ सकता है। समय पर सही कदम उठाने से त्वचा पूरे मौसम स्वस्थ और आरामदायक रह सकती है। जानते हैं ऐसी उपयोगी बातें...

1. गुनगुने पानी से स्नान करें: बहुत गर्म पानी त्वचा के प्राकृतिक तेलों को कम कर सकता है। इसलिए गुनगुने पानी से नहाएं।

2. नहाने के तुरंत बाद मॉइश्चराइजर लगाएं: नहाने के 3 मिनट के भीतर क्रीम या ऑइंटमेंट लगाने से नमी त्वचा में लॉक होती है। इस मौसम में थिक क्रीम या ऑइंटमेंट प्रभावी हैं।

3. दिन में भी लगाएं क्रीम: हाथ धोने, नहाने के बाद और रात में सोने से पहले मॉइश्चराइजर जरूर लगाएं। अत्यधिक रूखेपन में ऑइंटमेंट बेहतर है।

4. सही कपड़े पहनें: ऊनी और सिंथेटिक कपड़े त्वचा के सीधे संपर्क में न आए। पहले सूती कपड़े पहनें, फिर कोई गर्म कपड़ा पहनना चाहिए।

5. अपनी स्किन के अनुसार प्रोडक्ट चुनें: सर्दियों में डबल क्लेंजिंग से बचें, अल्कोहल-आधारित टोनर का प्रयोग न करें और सनस्क्रीन लगाना कभी न भूलें। सर्दियों में भी यूवी किरणें सक्रिय रहती हैं। बाहर निकलते समय त्वचा को कवर रखें।

बढ़ाएं शरीर में गर्मी-ताकत

इस मौसम में आहार और शारीरिक गतिविधियों के माध्यम से शरीर की गर्मी और ऊर्जा को बनाए रखना बेहद जरूरी है। आयुर्वेद के अनुसार सर्दियों में पाचनशक्ति सबसे अधिक प्रबल होती है। सालभर के लिए शक्ति संचित करने का उत्तम अवसर मिलता है।

1. तीव्र पाचनशक्ति का लाभ उठाएं: सर्दियों में मीठे और स्निग्ध खाद्य पदार्थ जैसे दही, राबड़ी, दूध, घी, तिल, गुड़ खाएं। तिल एवं गुड़ शरीर को गर्मी देते हैं और जठराग्नि को बनाए रखते हैं। घी से बने लड्डू, गाजर का हलवा, गोंद के लड्डू (ड्राई फ्रूट्स मिलाकर) उत्तम हैं। उड़द की दाल से बने पदार्थ भी ले सकते हैं।

2. ताजा पत्तेदार सब्जियां खाएं: हरी सब्जियां पोषक तत्त्वों से भरपूर होती हैं। इन्हें डाइट में शामिल करें।

3. गर्म पानी पीएं: ठंडी-सूखी हवा शरीर को डिहाइड्रेट कर सकती है। इसलिए समय-समय पर गुनगुना पीएं।

4. तिल या सरसों के तेल से मालिश करें: रोजाना तिल या सरसों के तेल से मालिश करने से शरीर में गर्मी बनी रहती है और रक्तसंचार सुधरता है।

5. नियमित धूप लें: रोजाना थोड़ी देर सूर्य की किरणें पीठ से ग्रहण करना उपयोगी माना गया है। इससे विटामिन डी मिलने के साथ ही प्राकृतिक गर्मी भी मिलती है।

6. सर्दी-जुकाम से बचाव: तुलसी, कालीमिर्च और अदरक का सेवन इम्युनिटी बढ़ाता है।

7. ये चीजें हैं लाभकारी: बादाम पाक, च्यवनप्राश, अश्वगंधा पाक का सेवन शक्ति प्रदान करते हैं। दूध में छुहारे डालकर, हल्दी वाला दूध, सौंठ मिश्रित दूध पीएं।

कांजूर डम्पिंग मुद्द्यावरील बैठक निष्फळ?

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : कांजूरमार्ग डम्पिंग ग्राउंड संदर्भात उच्च न्यायालयाच्या निर्देशानुसार नुकतीच नगरविकास विभाग आणि डम्पिंग ग्राउंड विरोधात लढा देणाऱ्या संघटनांमध्ये बैठक पार पडली. मात्र या बैठकीतून फारसे काही निष्पन्न झाले नाही. बैठक सुरू असताना कंत्राटदाराचे प्रतिनिधी आणि पालिकेचे संबंधित अधिकारी आमची बाजू न ऐकताच बैठक सोडून निघून गेले, असा आरोप संघटनांच्या प्रतिनिधींनी केला आहे.

मुंबई उच्च न्यायालयाने दिलेल्या आदेशानुसार नुकतीच मंत्रालयात नगरविकास विभागाचे अपर मुख्य सचिव डॉ. गोविंद राज- दालनात कांजूरमार्ग डम्पिंग ग्राउंडमुळे स्थानिक रहिवाशांना होणारा आरोग्याचा त्रास व पर्यावरणाचे झालेले नुकसान आणि हे कसे चुकीच्या ठिकाणी डम्पिंग ग्राउंड उभारले यासंबंधी बैठक झाली. स्थानिक रहिवाशांनी होणाऱ्या त्रासाबाबत आपली बाजू मांडताना डम्पिंग ग्राउंडमुळे होणारा आरोग्याचा त्रास व पर्यावरणाचे झालेले नुकसान आणि हे कसे चुकीच्या ठिकाणी डम्पिंग ग्राउंड उभारले गेले याची माहिती सचिवांना दिली. सह्यांची मोहीम घेतली असता, त्यात १०,०००पेक्षा जास्त नागरिकांनी सह्यांच्या माध्यमातून कांजूरमार्ग डम्पिंग ग्राउंड बंद करण्यासाठी मते नोंदवली आणि मुंबई महानगरपालिका आयुक्त यांच्या कार्यालयात पत्राद्वारे कळविले. तशी प्रत देण्यात आली. त्यानंतरच अपर मुख्य सचिव यांनी सभा समाप्त झाल्याचे जाहीर केले, असे विक्रोळीकर विकास मंचचे संजय येलवे यांनी सांगितले.

नेमके घडले तरी काय?

१ सचिवांनी बैठक संपल्याचे जाहीर केल्यानंतर कंत्राटदाराचे संबंधित प्रतिनिधी, महानगरपालिका अभियंता यांनी त्यांची बाजू आमच्या पश्चात सचिवांकडे मांडली. अभियंत्यांचे म्हणणे अपर मुख्य सचिव ऐकत असता नागरिकांनी आक्षेप घेतला. त्यानंतर ही मंडळी बैठक सोडून निघून गेले, त्यांना कल्पना होती की त्यांच्या म्हणण्याला नागरिक खोडून काढणार होते, असा दावा येलवे यांनी केला.

२ **बैठकीचे इतिवृत्त आताच द्या, अशी मागणी केली असता ही बैठक नसून सुनावणी आहे, असे सरकारी वकिलांचे म्हणणे होते. त्यावर नागरिकांचे वकील ॲड. अभिजित राणे यांनी सांगितले, जर सुनावणी आहे तर दोन्ही पक्षांची सुनावणी सचिवांच्या समोर मांडली पाहिजे. मगच त्याचा अहवाल न्यायालयात सादर केला पाहिजे.**

३ सचिवांनी सांगितले की, आमचा अहवाल न्यायालयात सादर करू आणि ही बैठक संपवली, असेही येलवे यांनी सांगितले. या बैठकीस विक्रोळीकर विकास मंच, माजी आमदार मंगेश सांगळे, काँग्रेसचे पदाधिकारी राहुल वागधरे उपस्थित होते.

धारावी-घाटकोपर जलबोगद्याला मंजुरी

सांडपाणी प्रकल्पात प्रक्रिया केलेले पाणी वाहून नेण्यास गती

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : धारावी सांडपाणी प्रक्रिया प्रकल्प ते घाटकोपर सांडपाणी प्रक्रिया प्रकल्पापर्यंतच्या जलबोगद्याला पर्यावरण मंत्रालयाची मंजुरी मिळाली आहे. त्यामुळे या जलबोगद्याच्या बांधकाम प्रकल्पाला आता गती मिळणार असून या परिसराला लवकरच दिलासा मिळणार आहे.

मुंबई महापालिकेने वरळी, वांद्रे, मालाड, वर्सोवा, धारावी, घाटकोपर आणि भांडुप येथे एकूण २,४६४ एमएलडी क्षमतेची आधुनिक मलजल प्रक्रिया केंद्रे उभारण्याचे काम सुरू केले आहे. ही केंद्रे कार्यान्वित झाल्यानंतर त्यापैकी १,२३२ एमएलडी पाणी प्रक्रियेने पुनर्वापरासाठी तयार केले जाणार असून उर्वरित पाणी दुय्यम प्रक्रियेनंतर समुद्रात सोडले जाईल. सांडपाण्यावर तृतीय स्तराची प्रक्रिया केलेले पाणी धारावी- घाटकोपर-भांडुपमार्गे जमिनीखालून जलबोगद्यातून भांडुप संकुलात नेण्याचे पालिकेचे नियोजन आहे. तिथे आधुनिक सुविधांच्या साहाय्याने ते पिण्यायोग्य करण्याचा प्रस्ताव असून यासाठी माहितीपूर्ण अहवाल आणि तपशीलवार प्रकल्प अहवाल तयार करण्यात आला आहे.

दरम्यान हे प्रक्रिया केलेले पाणी आजूबाजूच्या परिसरात नेण्यासाठी पालिकेकडून धारावी ते घाटकोपर असा जलबोगदा बांधला जाणार आहे.

जमिनीखाली १७६ मीटर खोलीवर बोगदा

वेलस्पुन मिचिगन इंजिनिअर्स लिमिटेड ही कंपनी या जलबोगद्याचा प्रकल्प राबवणार असून एकूण लांबी ८. ४८ किमी आणि व्यास ३. ५ मीटर आहे. तो जमिनीखाली १४३ ते १७६ मीटर खोलीवर बांधला जाणार आहे.

त्याची पाणी वाहून नेण्याची क्षमता ४१६ एमएलडी इतकी असणार आहे. यासाठी सुमारे २ हजार कोटींचा खर्च येणार असून पर्यावरण व्यवस्थापनासाठी ५१. १४ लाखांचा स्वतंत्र निधी राखून ठेवण्यात आला आहे.

पाणी पुनर्वापराची क्षमता वाढणार

धारावी ते घाटकोपर दरम्यान बांधल्या जाणाऱ्या या जलबोगद्यात ठिकठिकाणी शेफ बांधून पाणी वितरण व्यवस्था केली जाणार आहे. त्यासाठी 'टीबीएम'ची मदत घेतली जाणार आहे. हा प्रकल्प भविष्यातील पाणी टंचाई दूर करून पाणीसाठ्याची बचत करण्यात मदत करणार आहे.

लवकरच बांधकामाला सुरुवात

संकल्पचित्र आणि बांधकामाला सीआरझेडची मंजुरी मिळाल्याने लवकरच उभारणीला सुरुवात होईल, अशी माहिती पालिकेतील वरिष्ठ अधिकाऱ्यांनी दिली.

यंदा हुरडा पार्टीला महागाईची फोडणी

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : मुंबईसारख्या शहरांतही डिसेंबर उजाडल्यावर खवय्यांना हुरडा पार्टीचे वेध लागतात. मात्र, यंदा अवकाळी पावसाने पिकांना झोडपल्याने हुरड्याचाही भाव वधारला आहे. ४५० ते ५०० रुपये प्रतिकिलोने हुरडा विकण्यात येत आहे. सुकामेव्याच्या दरात हुरडा मिळत आहे.

डिसेंबरच्या अखेरीस हुरडा पार्ट्या मोठ्या प्रमाणात करण्यात येतात. बऱ्यापैकी थंडी वाढलेली असते. त्यामुळे कोवळा हुरडा खाण्याची मजा काही औरच असते. हुरड्यासाठी साधी ज्वारी वापरली जात नाही. सुरती, फुलज्वारी, शेलगी, पांढरी ज्वारी यांसारखे वाणच तोंडात विरघळणारा, मऊ हुरडा देतात. उत्पादन कमी असल्याने त्यांचा दर जास्त आहे. पारंपरिक चव, पौष्टिक आणि हुरडा पार्ट्यांचा ट्रेंड यामुळे बाजारात हुरड्याची मागणी वाढत आहे. मात्र, त्या तुलनेत उत्पादन कमी आहे. परिणामी, यंदा हुरडा ४५० ते ५०० रुपये प्रतिकिलो दराने विकण्यात येत आहे. भाजी मंडई, रस्त्यांच्या कडेला एका टोपल्यात, पाकिटात हुरडा विकण्यात येतो. काहीवेळा ग्राहकांची फसगतही करण्यात येते. साखरेचे पाणी शिंपडून अतिशय गोड हुरडा विकण्यात येतो.

शेतात, फार्महाऊस, पर्यटनस्थळांवर थंडीत हुरडा पार्ट्या होतात. बाजारात हुरडा सोलापूर, बारशी, बारामती, जुन्नर, शिरूर, मावळ, मुळशी यांसारख्या भागांमधून येतो. काही भागांत अवकाळी पाऊस, गारपीट, तीव्र थंडीमुळे पिकाला मोठा फटका बसला आहे. ज्वारीचे उत्पादन घटले आहे. मागणी जास्त आणि आवक कमी असल्याने हुरड्याचे भाव वधारले आहेत.

साप्ताहिक राशीभविष्य

विजय देशपांडे (ज्योतिषविशारद)

दि. ७ ते १३ डिसेंबर २०२५

या सप्ताहात दि. ७ डिसेंबर रोजी मंगळ धनू राशीत प्रवेश करेल. अन्य कुठलाही ग्रहपालट नाही. ग्रहस्थिती अशी - हर्षल वृषभ राशीत, गुरू मिथुन राशीत, केतू सिंह राशीत, रवी, बुध, मंगळ आणि शुक्र वृश्चिक राशीत, मंगळ दि. ७ डिसेंबर रोजी रात्री ८:१६ पासून धनू राशीत, प्लूटो मकर राशीत, राहू कुंभ राशीत, तर शनी आणि नेपच्यून मीन राशीत आहेत. चंद्राचे भ्रमण मिथुन, कर्क, सिंह आणि कन्या राशीतून राहील.

रविवार, दि. ७ डिसेंबर २०२५ रोजी मार्गशीर्ष कृष्ण तृतीया (सायंकाळी ६:२५ पर्यंत) आहे. नक्षत्र दुसऱ्या दिवशी उत्तर रात्री पहाटे ४:१२ पर्यंत पुनर्वसू, तर त्यानंतर पुष्य राहील. रात्री १०:३९ पर्यंत मिथुन, तर त्यानंतर कर्क रास राहील. आज दिवस सामान्य आहे. संकष्टी चतुर्थी आहे. राहू काळ सायंकाळी ४:३० ते ६ यावेळेत राहील.

मेष

नवीन संधी मिळेल : पूर्वार्ध अनुकूल राहील. व्यवसायात भरभराट होईल. हाती पैसा खेळता राहील. मात्र, मोठे आर्थिक निर्णय प्रारंभी घेऊ नका, अथवा कुणाला उसने पैसे देऊ नका. भावंडांशी मधुर संबंध राहतील. नोकरीत नवीन प्रकल्पासाठी तुमच्या नावाचा विचार केला जाईल. घरात खेळीमेळीचे वातावरण राहील. घराच्या सजावटीकडे लक्ष द्याल. बुधवारपासून सामाजिक कार्यात थोडे जबाबदारीने व संयमाने वागण्याची गरज आहे. शुक्रवारी आणि शनिवारी आरोग्याची काळजी घ्या. फार दगदग करू नका.
टीप : रविवार, सोमवार, मंगळवार चांगले दिवस.

वृषभ

यश मिळेल : चंद्राचे धनस्थानापासून ते पंचम स्थानापर्यंत भ्रमण होणार आहे. त्यामुळे तुम्हाला हा सप्ताह यश देणारा ठरेल. वडिलोपार्जित संपत्ती, व्यवसायातील व्यवहार यातून तुमचा फायदा होईल. वडीलधाऱ्या मंडळींकडून मदत मिळेल. खाण्या-पिण्याची चंगळ राहील. धनलक्ष्मी तुमच्यावर प्रसन्न राहील. बुधवारी, गुरुवारी एखाद्या नवीन जबाबदारीत गुंतलेले राहाल. सहकारी वर्गाशी जुळवून घेणे योग्य ठरेल. शुक्रवारी, शनिवारी चांगले अनुभव येतील. प्रेमात सफलता मिळेल. भेटवस्तू मिळतील.
टीप : रविवार, सोमवार, मंगळवार, शनिवार चांगले दिवस.

मिथुन

आर्थिक लाभ होतील : अतिशय उत्साही वातावरणात सप्ताहाची सुरुवात होईल. अचानक काही फायदे होतील. अडचणीतून मार्ग निघेल. प्रलंबित कामे आटोक्यात येतील. जीवनसाथीशी सूर जुळतील. अनेक बाबतीतील गैरसमज दूर होतील. धनलक्ष्मी तुमच्यावर प्रसन्न राहील. मालमत्तेची कामे होतील. मात्र, भावंडांशी गैरसमज होणार नाहीत, याची काळजी घ्या. जवळच्या प्रवासात सतर्क राहा. आर्थिक गुंतवणूक करताना खबरदारी घ्या. बुधवारी, गुरुवारी थोडे सावध राहा. नोकरीत नवीन जबाबदारी मिळेल.
टीप : रविवार, सोमवार, मंगळवार, शनिवार चांगले दिवस.

कर्क

अडचणी दूर होतील : रविवार वगळता बाकीच्या काळात तुम्हाला अनुकूल वातावरण राहील. त्यामुळे सुरुवातीला प्रत्यक्ष कामाऐवजी कामाच्या नियोजनावर भर द्या. प्रवासात तुमच्या हातून गरजेपेक्षा जास्त पैसा खर्च होईल. सोमवारपासून अडचणी दूर होतील. मनात आत्मविश्वास राहील. तुमचा सल्ला लोकांना पटेल. वडीलधाऱ्या मंडळींचा मान राखा. त्यांचा सल्ला उपयुक्त ठरेल. किरकोळ कारणावरून वाद वाढवू नका. शेवटी व्यावसायिक उलाढालीतून फायदा होईल.
टीप : सोमवार, मंगळवार, शनिवार चांगले दिवस.

सिंह

पूर्वार्धाच्या तुलनेत उत्तरार्ध तुम्हाला चांगला राहील. सुरुवातीला हाती आलेला पैसा खर्च करण्याकडे कल राहील. बचतीचे नियोजन नीट केले पाहिजे. सोमवारी, मंगळवारी धार्मिक कार्यासाठी वेळ द्यावा लागेल. बुधवारपासून अडचणी दूर होण्यास सुरुवात होईल. मात्र, सकारात्मक पद्धतीने विचार करण्याची गरज आहे. सप्ताहाच्या शेवटी धनलाभ होण्याच्या दृष्टीने चांगला काळ आहे. मालमत्तेच्या व्यवहारात तुमचा फायदा होईल. एखादे महत्त्वाचे काम मार्गी लागेल. त्यामुळे तुमची काळजी दूर होईल.
टीप- रविवार, शुक्रवार, शनिवार चांगले दिवस.

कन्या

पूर्वार्धात ग्रहमानाची अनुकूलता तुमच्या बाजूने राहील. नोकरी, घरातील कार्ये, धनलाभ, जनसंपर्क आदी दृष्टीने चांगला काळ अनुभवायला मिळेल. नोकरीत प्रगतीला पूरक वातावरण राहील. पगारवाढ व सोयी-सुविधा वाढवून मिळतील. घरात मंगलमय वातावरण राहील. धनलक्ष्मी तुमच्यावर प्रसन्न राहील. उत्तरार्धात बुधवारी आणि गुरुवारी आपण संयमाने वागण्याची गरज आहे; अन्यथा आर्थिक व्यवहारात नुकसान होईल. प्रवासात सतर्क राहा.
टीप : रविवार, सोमवार, मंगळवार, शनिवार चांगले दिवस.

तूळ

आर्थिक लाभ होतील : सप्ताहाच्या सुरुवातीला तुमच्या मनात उत्साह राहील. नशिबाचा कौल तुमच्या बाजूने राहील. कलाकार मंडळींना पुरस्कार जाहीर होतील. नावलौकिक वाढवणाऱ्या घटना घडतील. नोकरीत अनुकूल वातावरण राहील. कामातील बदल फायदेशीर ठरतील. पगारवाढ मिळण्याची शक्यता आहे. आर्थिक प्राप्तीचे प्रमाण चांगले राहील. मात्र व्यवहारात सतर्कता बाळगली पाहिजे. शुक्रवार, शनिवार लोकांना आश्वासने देऊ नका. कायद्याची बंधने पाळा. प्रवासात सतर्क राहा.
टीप : रविवार, सोमवार, मंगळवार, बुधवार चांगले दिवस.

वृश्चिक

लाभदायक परिस्थिती : भाग्य स्थानापासून ते लाभ स्थानापर्यंत होणारे चंद्राचे भ्रमण तुम्हाला लाभदायक ठरेल. मात्र, रविवारी आपल्या संयमाची परीक्षा पाहिली जाईल. काहींना अचानक धनलाभ होऊ शकतो. सोमवारपासून सगळ्या अडचणी दूर होऊन प्रगतीकडे वाटचाल सुरू होईल. एखादी चांगली बातमी कळेल. सामाजिक मानसन्मान मिळेल. पर्यटनाच्या माध्यमातून फिरणे होईल. नोकरीत जबाबदारी अंगावर पडेल. त्यामुळे बुधवार, गुरुवार कामाचा ताण राहील. शुक्रवार, शनिवार अनुकूल परिस्थिती राहील.
टीप : सोमवार, मंगळवार, शुक्रवार, शनिवार चांगले दिवस.

धनू

संमिश्र ग्रहमान : संमिश्र ग्रहमान राहील. सुरुवातीला तुमच्या मनात उत्साह राहील. मोठ्या योजनांचे विचार मनात घोळत राहतील. मात्र, सोमवारपासून लोकांकडून म्हणावी तशी तुमची दखल घेतली जाणार नाही. कामे पूर्ण झालीच पाहिजेत, असा अट्टहास करू नका. त्यातून तुम्हाला दगदग होऊ शकते. प्रवासात सतर्क राहा. महत्त्वाच्या वस्तू व कागदपत्रे सांभाळा. नोकरीत सहकारी वर्गाशी गोडीत वागा. प्रत्येकावर डोळे झाकून विश्वास ठेवू नका. घरातील कामांसाठी वेळ द्यावा लागेल.
टीप : रविवार, गुरुवार, शुक्रवार चांगले दिवस.

मकर

भेटवस्तू मिळतील : सप्ताहाची सुरुवात जरी थोडी दगदगीने झाली तरी शेवट मात्र यश देणारा ठरेल. त्यामुळे रविवारी आपण सबुरीचे धोरण ठेवा. आपल्या योजना गुप्त ठेवा. आरोग्याची काळजी घ्या. सोमवार, मंगळवार कामाचा उत्साह वाढेल. जीवनसाथीची चांगली साथ राहील. प्रेमात असणाऱ्यांना भेटवस्तू मिळतील. बुधवार, गुरुवार महत्त्वाच्या कामात अडथळा येईल. वाहनाच्या वेगावर नियंत्रण ठेवा. शुक्रवारपासून नशिबाची साथ मिळेल. नोकरीत तुमचे महत्त्व वाढेल. पगारवाढ व सोयी-सुविधा मिळतील.
टीप : सोमवार, मंगळवार, शुक्रवार, शनिवार चांगले दिवस.

कुंभ

अवास्तव अपेक्षा नको : मोठ्या योजना हाती घेण्यात रस राहील. मात्र अवास्तव अपेक्षा ठेवू नका. चांगल्या लोकांच्या सहवासात राहा. काही लोक तुमच्याशी गोड बोलून तुम्हाला अडचणीत आणण्याचा प्रयत्न करतील. थोडे सावध राहा. तब्येतीला जपा. नोकरीत तुमचे पारडे जड राहील. मात्र, स्वतःला सिद्ध करण्यासाठी धडपड करावी लागेल. जमिनीच्या व्यवहारात फायदा होईल. शुक्रवार, शनिवार दगदग करू नका. वाहनाच्या वेगावर नियंत्रण ठेवा. घाईघाईत कामे करू नका. गर्दीच्या ठिकाणी जाणे टाळा.
टीप : रविवार, बुधवार, गुरुवार चांगले दिवस.

मीन

मुलांची प्रगती होईल : पूर्वार्ध तुम्हाला अनुकूल फळे देणारा ठरेल. कामातील बदल फायदेशीर ठरतील. पगारवाढ व इतर अनेक लाभ होतील. घरात खेळीमेळीचे वातावरण राहील. घराची शोभा वाढवणाऱ्या वस्तू खरेदी कराल. मुलांच्या यशामुळे आनंद वाटेल. जवळचा प्रवास होईल. मौजमजा करण्यासाठी वेळ मिळेल. स्पर्धा परीक्षा देणाऱ्यांना चांगला काळ आहे. बुधवार, गुरुवार आरोग्याकडे दुर्लक्ष करू नका. शुक्रवार, शनिवार अडचणी दूर होतील.
टीप : रविवार, सोमवार, मंगळवार, शनिवार चांगले दिवस.

पोस्टाच्या ॲपवर भरा हप्ता

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : टपाल खात्याने डाकसेवा २.० ॲप लाँच केल्याने पोस्टाच्या सेवा स्मार्टफोनवर उपलब्ध झाल्या आहेत. यामुळे टपाल कार्यालयात लांबलचक रांगेत उभे राहण्याची गरज संपली असून, अनेक सेवा आता थेट मोबाइलवर उपलब्ध आहे. मनी ऑर्डर पाठवणे, पार्सल ट्रॅकिंग, तक्रार नोंदवणे ते विम्याचा हप्ता भरणे एका क्लिकवर शक्यत होईल.

डिजिटल पाऊल टपाल विभागाच्या ग्राहकांसाठी महत्त्वाचे ठरत आहे. नुकत्याच सुरू झालेल्या या ॲपला चांगला प्रतिसाद मिळत आहे. दुर्गम भागांतील लोकांना याचा फायदा होईल, असा विश्वास व्यक्त करण्यात येत आहे. यामुळे स्मार्टफोनच्या मदतीने पोस्ट ऑफिसच्या जवळपास सर्व सेवा हाताळता येणार आहेत. स्पीड पोस्ट, रजिस्टर्ड पत्रे आणि पार्सलसह इतर बुकिंग करता येते. यूपीआय आणि डायनॅमिक क्यूआर कोड वापरून या सेवांसाठी सुरक्षितपणे पैसे भरता येतात. विम्याचे प्रीमियम भरणे, तक्रार नोंदवणेही शक्य झाले आहे. त्या तक्रारीचा पाठपुरावा करता येतो. त्वरित मदतीसाठी हेल्पलाइन आणि चॅट असिस्टंटदेखील उपलब्ध आहे.

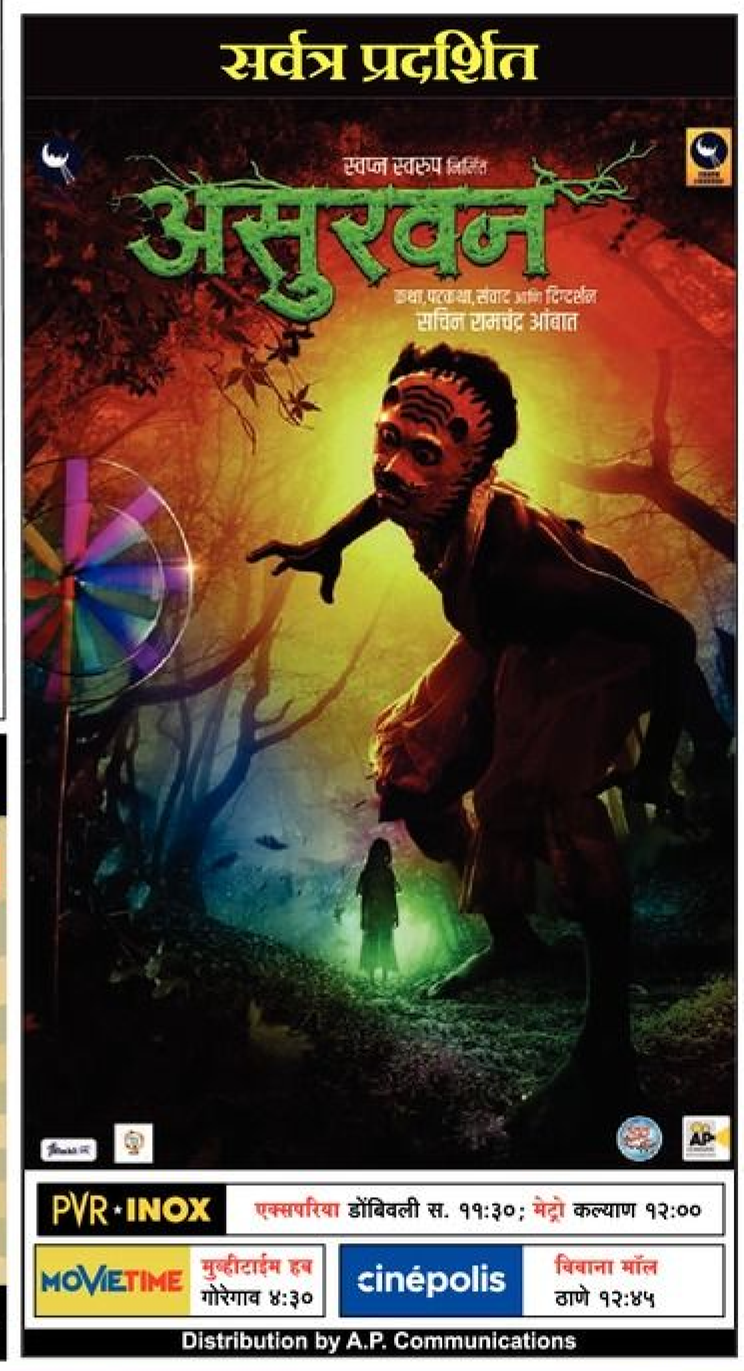

लोकमत CLASSIFIEDS classified online क्लिक करा बुक करा http://online.lokmatclassified.com

नोकरीविषयक

पार्ट टाईम जॉब

सरकारमान्य कंपनीमध्ये Vacancy Retired, VRS, बँकर्स, शिक्षिका, सुशिक्षित महिला. वय: 35 - 70 Salary + PF + Medical. संपर्क: 9653681991 (697220)

नोकरीविषयक

पार्टटाइम /फुलटाइम काम. महिना एक ते दीड लाख रुपये कमवा. नेमणे आहे : डीलर/ एजन्सीधारक/ सेल्स मॅनेजर. पशुखाद्य विक्रीचा अनुभव आवश्यक. संपर्क: 9552180275/ 8459133150 (698055)

Required Calibration Engineer And Industrial Marketing Engineer 1 To 2 Years Experience Required For Thane/ Mumbai, Please Contact Mob.8999822432. (698120)

आरोग्यविषयक

गर्भधारणा

लग्नानंतर लवकर बाळ होण्यासाठी भेटा. चौधरी क्लिनिक, पुणे. 9422282490 www.chaudhariclinic.com (637722)

विवाहविषयक

वधूवर मेळावा

वधु - वर मेळावा सर्व जाती कोकणस्थ / देशस्थ / खान्देश / ठाणे / कल्याण Web- Whats App- 9869868620 (693207)

वधु पाहिजे

वर बौद्ध वय 51. रा. पुणे नाममात्र घटस्फोटीत, अपत्य नाही, उच्च शिक्षित, वेलसेटल. 9175845677 स्वतः (698134)

पर्यटन

सहल यात्रा

श्रीराम यात्रातर्फे- अष्टविनायक, नेपाळ, पोखरा, गंगासागर-पुरी, दक्षिण भारत, तिरूपती, रामेश्वर, केरळ दर्शन, उत्तराखंड, काश्मिर, कुल्लुमनाली द्वारका, राज. खाटुश्याम, नर्मदा परिक्रमा. मुंबई- 9326044911 (695868)

लोकमत

वाचकांना विनम्र सूचना

लोकमत वृत्तपत्रातून प्रसिद्ध होणाऱ्या विविध जाहिरातीतील मजकुराची शहानिशा करूनच वाचकांनी त्यासंबंधी आर्थिक व्यवहार करावा. जाहिरातीत आपल्या उत्पादनाच्या संदर्भात वा सेवेच्या संदर्भात जाहिरातदार जे दावे करतात त्याची लोकमत वृत्तपत्र समूह कोणतीही हमी घेत नाही. जाहिरातीत करण्यात आलेल्या दाव्यांची पूर्तता जाहिरातदारांकडून न झाल्यास त्याच्या परिणामाबद्दल लोकमत वृत्तपत्र समूहाचे मुद्रक, प्रकाशक, संपादक व मालक हे जबाबदार राहणार नाहीत, याची कृपया वाचकांनी नोंद घ्यावी.

ट्रकचालकाने चिरडले; तरुणीचा जागीच मृत्यू

लोकमत न्यूज नेटवर्क

मुंबई : मित्रासोबत मोटारसायकलवरून निघालेल्या नाझनीन खान (२०) हिचा ट्रकच्या धडकेत मृत्यू झाला. ही घटना ५ डिसेंबर रोजी रात्री साडेनऊच्या सुमारास घडली. याप्रकरणी ट्रक चालक सिकंदर पंडित याच्यावर अंबोली पोलिसांनी गुन्हा नोंदविला आहे.

तक्रारदार हाफिज तनवर (३५) हा सेल्समन असून, मालाडच्या इन्फिनिटी मॉल परिसरात पत्नी आणि कुटुंबासह राहतो. फेब्रुवारी २०२४ मध्ये तो अंधेरी पश्चिम येथील लोखंडवाला कॉम्प्लेक्समधील नेचर बास्केट शॉपमध्ये काम करीत होता. त्याच काळात इंटर्न कोर्स करण्यासाठी आलेल्या नाझनीनशी त्याची मैत्री झाली. अपघाताच्या दिवशी कॉलेज सुटल्यानंतर नाझनीनने हाफिजला अंधेरी पूर्व येथे भेटण्यासाठी बोलावले होते. दोघे हाफिजच्या मोटारसायकलवरून आरे गार्डन व वर्सोवा परिसरात फिरले. रात्री नऊच्या सुमारास नाझनीनच्या कुटुंबीयांनी फोन करून तिला घरी बोलावल्याने हाफिज तिला घरी सोडण्यासाठी मोटारसायकलने निघाला. वीरा देसाई रोडवरील गुंडेचा सिग्नलकडे पोहोचताच हाफिजने सिमेंट ट्रकला डाव्या बाजूने ओव्हरटेक करण्याचा प्रयत्न केला. त्याच वेळी ट्रकची मोटारसायकलला धडक बसली आणि ट्रकचे चाक नाझनीनच्या डोक्यावरून गेल्याने तिचा मृत्यू झाला.